हिन्दी भाषा और
नैतिक मूल्य

एक सम्पूर्ण अध्ययन
भाग – प्रथम

डॉ. साधना सिंह बिसेन

डॉ. संगीता महाशब्दे

भाल्व पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड
भोपाल (म.प्र.)

भाल्व पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड
रजिस्टर्ड कार्यालय:
बी – २४, सिद्धार्थ लेक सिटी, आनंद नगर, रायसेन रोड,
भोपाल (म.प्र.) – ४६२०२१
ई-मेल: bhalvpublishing@gmail.com ;
e-book available at : www.lekhnichandra.com
दूरभाष : +91 – 755 – 2755516

eISBN: 978-81-940195-1-0

सर्वाधिकार सुरक्षित © 2019 डॉ साधना सिंह बिसेन एवं डॉ संगीता महाशब्दे
शीर्षक : हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य एक सम्पूर्ण अध्ययन – भाग प्रथम
लेखक : डॉ साधना सिंह बिसेन एवं डॉ संगीता महाशब्दे
प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : रुपये 195/-

मुद्रण एवं प्रकाशन : भाल्व पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड
निर्यात के अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित

All rights reserved with publisher. No part of this book shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, and photographic including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system device, without prior written permission of the publishers. No patent liability is assumed with respect to the use of information contained herein.

Information contain in this work has been obtained from by Bhalv Publishing Company Private Limited, from sources believed to be reliable. However, neither Bhalv Publishing Company Private Limited nor its authors guarantee the accuracy and completeness of any information published herein, and neither Bhalv Publishing Company Private Limited nor its authors shall be responsible for any errors, omissions, or damages arising out of use of this information. Dispute if any related to this publication is subject to Bhopal Jurisdiction.

भूमिका

उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश शासन द्वारा स्नातक पाठ्यक्रमों का निर्धारण जो केंद्रीय अध्ययन मंडल द्वारा अनुशंसित तथा मध्य प्रदेश के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित है, के आधार पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु अति आवश्यक है।उच्च शिक्षा मध्य प्रदेश शासन का उद्देश्य भी युवा पीढ़ी को वैश्विक मानकों के अनुसार तैयार करना है।इस उद्देश्य की पूर्ति ज्ञान की शक्ति द्वारा ही संभव है।इस ज्ञान के साथ यदि मूल्यों का समावेश एवम रोजगारोन्मुखी शिक्षा का सम्मिलन हो जाए तो उच्च शिक्षा की प्रतिबद्धता सुनिश्चित हो सकेगी। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आधार पाठ्यक्रम जैसे अनिवार्य विषय की सुनियोजित परम्परा इसी प्रयास का परिणाम है।

आज का दौर अंतरानुशासनात्मक अध्ययन का है अतः कला, वाणिज्य,विज्ञान एवम प्रबंधन संकायों के छात्र नैतिक मूल्य और भाषा के माध्यम से अनेक लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं।आधार पाठ्यक्रम में साहित्य,परम्परा,इतिहास,पर्यावरण,विज्ञान,कला के साथ व्याकरण के समावेश के साथ छात्र स्नातक के रूप में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु स्वयं को तैयार कर पाने में समर्थ हो पाते हैं।संविधान की भाषा नीति के अनुसार द्विभाषी करण को ध्यान में रखते हुए आधार पाठ्यक्रम में दोनों भाषाओं के अनिवार्य व्याकरण,सामान्य एवम पारंपरिक साहित्य,लोक कलाएं,स्थापत्य एवम लोक परंपराओं का ज्ञान हो जाता है।हमारा उद्देश्य छात्र को ज्ञान संपन्न बनाने के अतिरिक्त नैतिकता युक्त,उत्तरदायित्व पूर्ण नागरिक बनाने के साथ साथ जीविकोपार्जन में सक्षम व संप्रेषण कौशलयुक्त बनाना है।

हमारे द भोपाल स्कूल आफ सोशल साइंसेज (बी एस एस एस) महाविद्यालय भोपाल के दो सहायक प्राध्यापकों: डॉ साधना सिंह बिसेन एवम डॉ संगीता महाशब्दे द्वारा लिखित इस पुस्तक का शीर्षक: हिंदी भाषा और नैतिक मूल्य: एक सम्पूर्ण अध्ययन भाग प्रथम है।इसमें पाठ्य सामग्री का विस्तृत विवेचन लेखकों द्वारा किया गया है।प्रत्येक पाठ का सारांश हिंदी एवम अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रदान किया गया है।साथ ही यथासंभव अभ्यास सामग्री भी प्रदान की गई है जिससे पुस्तक का शीर्षक ' हिंदी भाषा और नैतिक मूल्य :एक सम्पूर्ण अध्ययन भाग प्रथम की तर्कसंगतता
सिद्ध होती है।

अंत में, मै श्रीमती सुनीता आनंद द भोपाल स्कूल आफ सोशल साइंसेज महाविद्यालय भोपाल के अकादमिक प्रकाशन प्रकोष्ठ की प्रभारी होने के दायित्व के संदर्भ में दोनों लेखकों को साधुवाद देती हूं कि उन्होंने अपने परिश्रम से एक सार्थक और ईमानदार प्रयास किया है। स्नातक प्रथम वर्ष आधार पाठ्यक्रम की यह पुस्तक छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी,इसी शुभेच्छा के साथ |

लेखक परिचय

डॉ साधना सिंह बिसेन

BHMS, पीएचडी (समाज शास्त्र), एम ए (समाजशास्त्र एवं हिंदी),
पी जी डी टी,पी जी डी एच ई(इग्नू) सभी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण

पिछले बारह वर्षों से विभिन्न महाविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन का अनुभव,इसके अतिरिक्त बारह वर्षों का व्यावसायिक अनुभव,इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी , मध्यांचल सोशियोलॉजिकल सोसाइटी की आजीवन सदस्यता,राज्य होम्योपैथिक परिषद मध्य प्रदेश में मान्यता प्राप्त चिकित्सक के रूप में पंजीकृत,मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंन्थ अकादमी से संबद्ध,समय समय पर आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर भी सक्रिय।इसके अतरिक्त इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा अकादमिक उत्कृष्टता हेतु सम्मानित।

अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में सक्रिय सहभागिता एवं शोध पत्रों के वाचन का दीर्घ अनुभव। इसके अतिरिक्त विभिन्न शोध पत्रों एवं लेखों का भी विश्विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशन।

एक पुस्तक के प्रकाशन के साथ वर्तमान में भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के मानविकी विभाग के समाजशास्त्र विषय की सहायक प्राध्यापक के रूप में पदस्थ। रुचियाँ:लेखन,पाठन, वाचन ,अनुवाद ,क्विज़ज़िंग एवं प्रतियोगिताओं का मार्गदर्शन।

डॉ संगीता महाशब्दे

पीएचडी (दर्शनशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र)

अतिथि प्राध्यापक के रूप में शासकीय हमीदिया महाविद्यालय,भोपाल में स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन,तत्पश्चात रवींद्र महाविद्यालय में ग्यारह वर्षो तक अध्यापन,करियर महाविद्यालय में बीएड एवं एमएड के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन, विभिन्न शोधपत्रों एवं लेखों का प्रकाशन।वर्तमान में द भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज,BSSS, भोपाल में सहायक प्राध्यापक के रूप में पदस्थ।

Department of Higher Education, Govt. of M.P.
Under Graduate Year wise Syllabus
As recommended by Central Board of Studies and
Approved by the Governor of M.P.

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिए वार्षिक पद्धति अनुसार पाठयक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित

सत्र – 2019-20

Class	–	B.A/B.Sc/B.Com./B.Sc. (Home Science)/BCA/B.A.(Mgt.) I Year
Subject	–	Foundation Course (आधार पाठ्यक्रम)Paper –I
Title of Paper	–	हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य (Hindi Language & Moral Values)
Max. Marks	–	नियमित (Hindi Language-25) + (Moral Values-05) + CCE-05 Total=35
		स्वाध्यायी – 35

Particulars/विवरण

(Unit) इकाई–1 : हिन्दी भाषा

1. स्वतंत्रता पुकारती (कविता) –जयशंकर प्रसाद
2. पुष्प की अभिलाषा (कविता) – माखनलाल चतुर्वेदी
3. वाक्य संरचना और अशुद्धियाँ (संकलित)

(Unit) इकाई–2 : हिन्दी भाषा

1. पूस की रात (कहानी) प्रेमचंद
2. अप्प दीपो भव (लेख) – स्वामी श्रद्धानंद
3. पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी एवं शब्दयुग्म शब्द (संकलित)

(Unit) इकाई–3 : हिन्दी भाषा

1 भगवान बुद्ध (निबंध) – स्वामी विवेकानंद
2. कछुआ धर्म – चंद्रधर शर्मा गुलेरी
3. नहीं रूकती है नदी – हीरालाल बाछोतिया

4. पल्लवन

(Unit) इकाई–4 : हिन्दी भाषा

1. अफसर (निबंध) – शरद जोशी
2. हमारी सांस्कृतिक एकता (निबंध) – रामधारी सिंह दिनकर (एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत)
3. संक्षेपण (संकलित)

(Unit) इकाई–5 : नैतिक मूल्य

1. नैतिक मूल्य परिचय एवं वर्गीकरण (आलेख) – डॉ. शशि राय
2. आचरण की सभ्यता (निबंध) – सरदार पूर्णसिंह
3. अंतर्ज्ञान और नैतिक जीवन (लेख) – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अंक विभाजन– नियमित विद्यार्थियों के लिए कुल 30 अंक

खण्ड–अ– प्रत्येक इकाई से एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1 X 5 = 5

खण्ड–ब– इकाई 1 से 4 तक तीन लघुउत्तरीय प्रश्न एक आंतरिक विकल्प के साथ 3 X 3 =9

खण्ड–स– इकाई 2 से 5 तक चार दीर्घउत्तरीय प्रश्न 4 X 4 = 16 आंतरिक विकल्प के साथ

स्वाध्यायी विद्यार्थियों के लिये कुल 35 अंक

खण्ड–अ– प्रत्येक इकाई से एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1 X 5 = 5

खण्ड–ब– इकाई एक से चार तक तीन लघुउत्तरीय प्रश्न एक आंतरिक विकल्प के साथ 3 X 4 = 12

खण्ड–स– इकाई दो से चार तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न 4 X 4½ = 18 आंतरिक विकल्प के साथ

नोट – निर्धारित पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य 'मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी' भोपाल से प्रकाशित।

इकाई–1 : हिन्दी भाषा

1. स्वतंत्रता पुकारती (कविता) –जयशंकर प्रसाद
2. पुष्प की अभिलाषा (कविता) – माखनलाल चतुर्वेदी
3. वाक्य संरचना और अशुद्धियाँ (संकलित)

स्वतंत्रता पुकारती (कविता)

जयंशकर प्रसाद

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती।।

अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्यपंथ है– बढ़े चलो बढ़े चलो।

असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ,
विकीर्ण दिव्य–दाह सी।
सपूत मातृभूमि के–
रूको न शूर साहसी।

अराति सैन्य सिन्धु में–सुवाड्वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो, जयी बनो–बढ़े चलो बढ़े चलो।।

कवि परिचय :

प्रस्तुत कविता 'स्वतन्त्रता पुकारती' के लेखक श्री जयशंकर प्रसाद सुप्रसिद्ध कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार, एवं कहानीकार हैं। इनका जन्म 30 जनवरी 1890 को वाराणसी (उ0प्र0) में हुआ। उनका सम्बन्ध एक व्यापारिक घराने से था। प्रसाद जी ने संस्कृत, हिंदी, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का घर पर रहकर ही अध्ययन किया। वे छायावाद के प्रमुख कवि थे ओर हिंदी की सभी विधाओं में लेखन कार्य करने में सिद्धहस्त थे। 'स्वतन्त्रता पुकारती' कविता जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक चन्द्रगुप्त (1931) के चतुर्थ अंक के अध्याय 6 से ली गई है। तक्षशिला की राजकुमारी अलका आर्यावर्त के वीर

नागरिकों से देश की स्वतन्त्रता हेतु आह्वान करती है। स्वतन्त्रता आंदोलन में इस गीत ने युवाओं मे देशप्रेम के प्रति प्रेरणा देने का कार्य किया। इनकी प्रमुख **कृतियॉ** हैं :

1 उपन्यास – कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)
2 काव्य – कामायनी (महाकाव्य), चित्राधार, आँसू, लहर, झरना
3 नाटक – चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु
4 कहानी – आकाशदीप, पुरस्कार, मधुआ

जयशंकर प्रसाद जी का देहावसान 15 नवम्बर 1937 को हुआ।

केन्द्रीय भाव :

कवि जयशंकर प्रसाद ने इस कविता के माध्यम से नवयुवकों में स्वतंत्रता में स्वतंत्रता की अलख जलाकर उनमें राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	Meaning
स्वतंत्रता	आजादी, स्वाधीनता, मुक्ति	Independence, Freedom
तुंग	ऊँचे,	High/Tall
प्रशस्त	सराहनीय,	Praiseworthy/ appreciable
अराति	घमंडी शत्रु	Proud enemy
प्रवीर	श्रेष्ठ वीर	Excellent warrior
असंख्य	जिसे गिना न जा सके / अगणनीय	innumerable/countless
अमर्त्य	अमर	Immortal
पुण्यपंथ	पवित्र मार्ग	Pious Path
भारती	राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण	Full of Patriotism

विशेष प्रयोग

हिमाद्रि :– हिमालय, बर्फ से ठँके पर्वत

शृंग :– पर्वत की चोटी

स्वयं प्रभा :– आत्म प्रबुद्ध

समुज्जवला :– पूरी तरह से प्रज्जवलित होने को तैयार

सुवाड्वाग्नि :– समुद्र की अग्नि, जो सागर को प्रकाशित कर सकें।

उद्देश्य : –

1. प्रस्तुत कविता के माध्यम से छात्र स्वंतत्रता का अर्थ एवं महत्व समझ सकेंगे।
2. कविता के माध्यम से छात्र छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद के विषय में जान सकेंगे
3. छात्रों में राष्ट्रीयता और मातृभूमि से प्रेम की भावना का विकास हो सकेंगा।
4. छात्र अतीत को वर्तमान से संबंधित कर सकेंगे।

भावार्थः (अनुच्छेद वार)

महाकवि जयशंकर प्रसाद ने 'स्वतंत्रता पुकारती' कविता मे देश को स्वतन्त्रता दिलाने हेतु भारतमाता के वीर सपूतों का आह्वान किया है। वे वीर सपूतों को ललकारते हुए कहते हैं :

1 हिमाद्रि तुंग .....पुकारती।

हिमालय पर्वत भारत के उत्तर में स्थित एक सजग प्रहरी की भूमिका का निवर्हन करता है।

बर्फ से ढकी हिमालय की ऊँची चोटियों से स्वतन्त्रता पुकार रही है। प्रसाद जी ने 'स्वतंत्रता' को यहाँ दिव्य दैवी शक्ति के रूप में चित्रित किया है। स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसका अपना सुख होता है। स्वतन्त्रता स्वयं के प्रकाश से आलोकित होती है (स्वयं प्रभा) स्वतन्त्रता मनुष्य के विकास का मार्ग है, उसे सुख प्रदान करती है, इसीलिए उसे समुज्जवला कहा गया है। स्वतन्त्रता प्रबुद्ध (बुद्धिजीवी) प्रकृति की है एवं शुद्ध भारतीयता युक्त है।

2 अमर्त्य वीर ..... साहसी।

तुम भारतमाता के अमर, साहसी वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ हो अतः सोच विचार करके, सराहनीय (प्रशंसनीय) रास्ते पर जो स्वतन्त्रता प्राप्ति जैसे उच्च आदर्श की प्राप्ति का मार्ग है, पर आगे बढ़ते चलो जब तक कि स्वतन्त्रता न मिल जाए। भारत माता की अनगिनत (असंख्य) यश की किरणें शत्रु को जला देने के लिए पर्याप्त हैं। ये असंख्य यश की किरणें द्विव्यता लिए हुए हैं। तुम भारत माता के सुयोग्य पुत्र (सपूत) हो, रूको नही क्योंकि तुम शूरवीर एवं हिम्मती हो।

3 अराति ..... बढ़े चलो।

जिस प्रकार समुद्र मे लगी अग्नि को बड़वाग्नि कहते हैं एवं वह समुद्र मे स्थित जीव व जन्तुओ को नष्ट कर सकने में सक्षम है। ठीक इसी प्रकार भारतमाता के वीर सपूतों तुम घंमडी शत्रु की सेना रूपी समुद्र में बड़वाग्नि की तरह जलकर उसे नष्ट कर दो। तुम श्रेष्ठ वीर हो, इसलिए आगे बढ़ते चलो एवं विजयी बनो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–

1 कौन पुकारता है –

अ. ईश्वर ब. भारती स. हिमालय द. स्वतंत्रता

2. स्वतंत्रता पुकारती के कवि है –

अ. महादेवी वर्मा ब. रामधारी सिंह दिनकर स. निराला द. जयशंकर प्रसाद

3. प्रसादजी ने महाकाव्य लिखा :–

अ. पल्लव ब. यामा स. कामायनी द. साकेत

4. कविता किस नाटक का अंश है :–

अ. चन्द्रगुप्त ब. स्कन्दगुप्त स. कालिदास द. विशाख

5. स्वतंत्रता कहॉ से पुकारती है :–

अ. विंध्याचल से ब. हिमालय स. सतपुड़ा द. अलकनंदा

6. कवि ने किसे आह्वान किया है:–

अ. राष्ट्रपति ब. वीर पुत्र स. सैनिक. द. मंत्री

7. भारतीय वीर तुल्य है :–

अ. तूफान के ब. समुद्र की अग्नि के स. हवा के द. जल के

8. मातृभूमि के सपूत कैसे होने चाहिए :–

अ. नेता ब. शूर एवं वीर स. बुद्धिमान द. ऋषि मुनि

9. सैन्य दल किसके समान है :–

अ. सागर के ब. पहाड़ के स. जंगल के द. आकाश के

10. प्रसाद जी का जन्म कहाँ हुआ था –

अ. इलाहाबाद ब. वाराणसी स. कानपुर द. लखनऊ

उत्तर :– 1. द, 2 द, 3 स, 4 अ, 5 ब, 6 ब, 7 ब, 8 ब, 9 अ, 10 ब ।

2. सत्य/असत्य

सही /गलत पर निशान लगाये :–

1. जयशंकर प्रसाद का जन्म इलाहाबाद में हुआ।
2. अराति का अर्थ प्रिय मित्र है।
3. सुवाडवाग्नि का अर्थ समुद्र की अग्नि है।
4. स्वयंप्रभा को आत्म प्रबुद्ध कहा गया है।
5. स्कन्दगुप्त नाटक भी जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।

उत्तर :– 1 असत्य, 2 असत्य, 3 सत्य, 4 सत्य, 5 सत्य

लघुउत्तरीय एक वाक्य में उत्तर दें –

प्र. 1 स्वतंत्रता पुकारती की कविता में कवि किसको आह्वान करता है?

उ0 इस कविता में कवि ने वीर नागरिकों से देश की स्वतंत्रता के लिए आह्वान किया है।

प्र.2 स्वतंत्रता को स्वयंप्रभा कहने का क्या आश्य है।

उ0 स्वतंत्रता अर्थात आत्म प्रबद्धता, स्वतंत्रता आत्म प्रबद्ध होती है। इसी कारण इसे स्वयं प्रभा कहा गया है।

प्र.3 समुज्जवला का क्या आशय है।

उ0 जो पूरी तरह से प्रज्जलित दीप्तमान होने को तत्पर रहें।

प्र.4 कवि ने कीर्ति रश्मियाँ का प्रयोग क्यों किया है।

उ0 कवि वीरों की प्रसिद्धि की असंख्य किरणों के विषय में बता रहा है।

प्र.5 अराति सैन्य सिन्धु से क्या आशय है।

उ0 घंमडी शत्रु की सेना किसी समुद्र में जैसी हो।

प्र.6 सुवाड्वाग्नि से जलो का अर्थ स्पष्ट करें।

उ0 वीरों का आह्वान कि वे घमंडी शत्रु की सेना के समुद्र में अग्नि के समान जल कर उन्हें नष्ट करें।

प्र.7 कवि ने वीर पुत्रों के लिए क्या विशेषण प्रयोग किये।

उ0 कवि वीरों को अमर्त्य वीर, शूर साहसी, प्रवीर जैसे विशेषणों से सुशोभित कर रहें हैं।

प्र.8 स्वंतत्रता पुकारती में कवि ने किसे संबोधित किया है।

उ0 कवि ने भारत के वीर पुत्रों को संबोधित किया है।

प्र.9 बढे चलों बढ़े चलो का अर्थ क्या है ?

उ0 श्रेष्ठ वीर वह होते है जो आगे बढते जाते है।

प्र.10 कवि इस स्वंतत्रता के आंदोलन में किसको प्रेरणा दे रहे है।

उ0 कवि इस आंदोलन में युवाओं में देश प्रेम के प्रति प्रेरणा दे रहे है।

Summary :

Shri Jaishankar Prasad, the great Hindi poet who has excelled in almost every literary form of Hindi language has written this Poem 'Swatantra Pukarti'. Hailing from a buisness family of varanasi (U.P.), he was born on 30th January 1930. He studied Sanskrit, Hindi, Urdu and Persian Language at his home only. He belonged to Chhayavaad Era of Hindi Language. This Poem has been taken from chapter 6 of the fourth edition of his famous play ' **Chandragupta'** (1931). The Princess Alka of Taxshila is calling upon the brave citizens for the freedom of the Bharatmata without taking any pause they have to proceed till the attainment of the goal of freedom. This Poem proved to be of great inspiration among the youth during our freedom struggle.

पुष्प की अभिलाषा

कविता

माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में।

बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

कवि परिचय :

राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को बाबई, होंशगाबाद (म0प्र0) में हुआ। वे हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला , गुजराती और अंग्रेजी भाषा पर भी समान अधिकार रखते थे। वे हिंदी के प्रतिष्ठित कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के अतिरिक्त एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई और वे बिलासपुर की जेल में बंद रहे । इसी जेल मे उन्होंने अपनी कालजयी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' लिखी।

इस कविता ने वीर युवाओं को प्रेरित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। हिमकिरीटनी (1943) काव्यसंग्रह में इस कविता को संकलित किया गया है। दद्दा के नाम से प्रसिद्ध, माखनलाल चतुर्वेदी को म0प्र0 शासन ने 1965 में खण्डवा में नागरिक अभिनंदन कर , 'एक भारतीय आत्मा' की उपाधि से सम्मानित किया । इनका देहावसान 30 जनवरी 1968 को हुआ।

कृतियाँ : हिमकिरीटनी (1943) (देव पुरस्कार से सम्मानित)
हिमतरंगिनी (1955) (साहित्य अकादमी पुरस्कार)
माता
युगचरण
समर्पण
वेणु लो गुंजे धरा (काव्यसंग्रह)
कृष्णार्जुन युद्ध
साहित्य का देवता (गद्य)
अमीर इरादे गरीब इरादे (कहानी संग्रह)

सम्मान/पुरस्कार : डी लिट् की मानद उपाधि(सागर विश्वविद्यालय द्वारा 1959 में)
: पद्मभूषण सम्मान (भारत सरकार द्वारा 1963 में प्रदत्त) जिसे उन्होने राजभाषा संविधान संशोधन के विरोध में लौटा दिया था।)

संपादन : प्रभा, प्रताप, कर्मवीर, (प्रतिष्ठित समाचार पत्र)

स्थापना : भोपाल स्थित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय उन्ही के नाम पर स्थापित।

केन्द्रीय भाव

कवि, कविता में पुष्प की प्रतीकात्मकता द्वारा देश प्रेम व राष्ट्रीयता हेतु अपने प्राणों को न्यौछावर करने की तत्परता, की अभिलाषा का विकास करना चाहते हैं। जब एक पुष्प अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु सभी प्रकार के आकर्षक वैकल्पिक प्रलोभनों को ठुकरा कर अपने आप को अर्पण कर सकता है, तो हम देश के नागरिक क्यों नही।

शब्दार्थ :–

शब्द	अर्थ	Meaning
वनमाली	बाग का रखवाला	Gardener
सुरबाला	युवती	Young girl
गहना	आभूषण	Ornament
ललचाऊँ	आकर्षित करना	To lure/attrac
पथ	रास्ता / मार्ग	Path
शीश	मस्तक	Head

विशेष प्रयोग

बिंध – जड़ी होना (माला में)

भाग्य पर इठलाऊँ – अपने भाग्य पर अत्यन्त इतराना

पथ पर जावें वीर अनेक – जिस रास्ते पर अनेक वीर जा रहे हों।

उद्देश्य :–

1. प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि छात्रों में देशप्रेम का भाव विकसित कर सकेंगे।
2. छात्र पुष्प की मूल इच्छा को जान सकेंगे।
3. विद्यार्थियों को माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत कराना जिससे वे प्रेरणा गृहण कर सकें।
4. जीवन की सार्थकता के महत्व का प्रतिपादन।

भावार्थ (अनुच्छेद वार)

1. "चाह नही .....ललचाँऊ । "

कवि माखनलाल चतुर्वेदी एक पुष्प की इच्छा को व्यक्त करते हुए कहते है कि वह नही चाहता कि किसी युवती के आभूषणों में गूँथा जाए जिससे कि युवती के आकर्षण व सौन्दर्य में वृद्धि हो। वह यह भी नही चाहता कि उसे प्रेमी की माला में सम्मिलित किया जाए

जिससे कि उनमें आकर्षण की वृद्धि हो। कवि पुष्प के इन उपरोक्त सामान्य उपयोगो के प्रति उसकी अनिच्छा को व्यक्त करते हैं।

2. "चाह नही सम्राटों के .....पर इठलाऊँ।"

कवि कहते हैं कि हे भगवान विष्णु, पुष्प यह भी नही चाहता कि उसे सम्राटों की मृत देह पर अर्पित किया जाए। वह यह भी नही चाहता कि उसे देवी माता के मस्तक पर अर्पित किया जाकर अपने सौभाग्य पर प्रसन्न होए। कवि का तात्पर्य है कि इन सामान्य उपयोगों के विषय में पुष्प की अनिच्छा है।

3 "मुझे तोड़ .....वीर अनेक।"

कवि कहते हैं कि पुष्प माली से कहता है कि वह उसे तोड़ कर उस मार्ग में फेंक या बिछा दे, जिस मार्ग पर चलकर देश के सैनिक अपनी मातृभूमि पर न्यौछावर होने के लिए जा रहे हों। कवि का तात्पर्य है कि पुष्प सामान्य उपयोग के प्रति अनिच्छु है, परन्तु उसे अपने अस्तित्व की सार्थकता सैनिकों के मार्ग में बिछने हेतु दिखायी पड़ती है। वह चाहता है कि कम से कम इसी माध्यम से ही सही वह देश की रक्षा हेतु अपना योगदान दे सकेगा। साथ ही मार्ग में बिछने की इच्छा का उद्देश्य यह भी है कि सैनिकों के पैर में मार्ग के कंटक एवं अन्य अवांछित अवरोध दूर हो सकेंगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–

1. पुष्प की अभिलाषा के कवि है :–
   अ. निराला ब. पन्त स. माखनलाल द. उत्तरप्रदेश
2. इस कवि का जन्म हुआ है :–
   अ. केरल ब. मध्यप्रदेश स. राजस्थान द. उत्तरप्रदेश
3. इस कविता को काव्यसंग्रह से लिया गया है
   अ. कादम्बरी ब. हिमकीरिटनी स. युगचरण द. कृष्णार्जुन युद्ध
4. इस कविता के रचियता ने किस समाचार पत्र का संपादन किया है
   अ. धर्मयुग ब. कर्मयुग स. कर्मवीर द. युगधर्म
5. कवि के नाम का विश्व विद्यालय किस क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध है
   अ. कृषि ब. शिक्षा स. पत्रकारिता द. तकनीकी

6. कवि ने 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की रचना कहाँ की है :–

अ. दिसपुर जेल में ब. बिलासपुर जेल में स. तिहाड़ जेल में द. यरवडा जेल

7. माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय कहाँ है :–

अ. इंदौर ब. जबलपुर स. ग्वालियर द. भोपाल

8. पुष्प की अभिलाषा क्या है

अ. माला बनू ब. सम्राट के शव पर चढ़ूं स. वीरो के पथ पर फेंका जाऊं

द. देवों पर चढ़ूँ

9. कवि को कौन सा सम्मान दिया गया :–

अ. भारतरत्न ब.पद्मविभूषण स. दादासाहेब फाल्के द. पद्मभूषण

10. कवि की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ हुई :–

अ. खुरई ब. सोहागपुर स. टिमरनी द. होशंगाबाद

उत्तर 1 स, 2 ब, 3 ब, 4 स, 5 स, 6 ब, 7 द, 8 स, 9 द, 10 स

प्रश्न :– सत्य/असत्य बताये :–

1 पुष्प सम्राट के शवों पर चढना चाहता है।

2 वीरो के पथ पर चढ़ना चाहता है ।

3 देवो के सिर पर चढ़ना चाहता है।

4 यह कविता नार्गाजुन ने लिखी है ।

5 युवती के गजरे में गुंथाजाऊ पुष्प की अभिलाषा है।

उत्तर :– 1 असत्य 2 सत्य 3 असत्य 4 असत्य 5 असत्य

लघुउत्तरीय प्रश्न :–

प्र.1 माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कहाँ और कब हुआ।

उ0 माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म बाबई, होशंगाबाद में 4 अप्रैल 1889 को हुआ।

प्र.2 कवि की प्रमुख कृतियों के नाम लिखो।

उ0 हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, माता, युगचरण, समर्पण ।

प्र.3 माखनलाल चतुर्वेदी का मुख्य कहानी सग्रंह लिखों।

उ0 अमीर इरादे गरीब इरादे।

प्र.4 उनके काव्य संग्रह हिमकिरीटनी को कब तथा कौन से पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उ0 उस काव्यसंग्रह को 1943 में देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्र.5 प्रस्तुत कविता में कवि ने किसे देश प्रेम के लिए प्रेरित किया है ?

उ0 कवि ने वीर युवाओं को देश की स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया है।

प्र.6 पुष्प की अभिलाषा क्या है ?

उ0 पुष्प की अभिलाषा है कि वह उस पथ पर उसे फेंका जाये जहाँ वीर मातृभूमि की रक्षा के लिए शीश चढ़ाने आते है।

प्र.7 इस कविता की रचना कहाँ व कब की गई ?

उ0 बिलासपुर के जेल में 1921 में इस कविता की रचना की गई ।

प्र.8 पुष्प की अभिलाषा कहॉ से ली गई है ?

उ0 पुष्प की अभिलाषा हिमकिरीटनी से ली गई है।

प्र.9 कवि की किस रचना को 1955 में पुरूस्कृत किया गया ?

उ0 कवि की हिमतरंगिनी को 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

प्र.10 पुष्प की अभिलाषा क्या नही है ?

उ0 पुष्प किसी युवती के गजरे, प्रेमी की माला या सम्राट के शव पर नही चढ़ना चाहता है।

प्र.11 इस कविता की रचना किस राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान की गई ?

उ0 इस कविता की रचना असहयोग आन्दोलन के दौरान की गई।

प्र.12 माखनलाल चर्तुवदी को 'एक भारतीय आत्मा' क्यों कहा जाता है ?

उ0 क्योंकि भारतीयता एवं देशभक्ति उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में पूर्णतः समाहित थीं।

Summary

Poet Makhanlal Chaturvedi through this Poem has shown that the flower does not want to be used in the way it is generally used . It aspires that it should be spread in the path on which our defence personnels are marching for the protection of our mother land. Through this Poem, the Poet says that through this aspiration, the flower wants to justify the fruitfulness of its existence. The flower wants to make the path of defence personnels comfortable and without any kind of hindrance.

3. वाक्य संरचना और अशुद्धियॉ

वाक्य की परिभाषा और भेद

किसी विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह या शब्द समूह वाक्य कहलाता है। वाक्यों को शब्दों का विकसित रूप कहा जा सकता है। शब्द यदि भाषा की प्रारम्भिक अवस्था के द्योतक हैं, तो वाक्य उसकी विकसित अवस्था को व्यक्त करते हैं। मनुष्य के भाव या विचार अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्यों में ही पाते है। वाक्य भावों और विचारों के वाहक हैं। वाक्य भाषा के स्वरूप को चरितार्थ करने वाले हैं। संक्षेप में, वाक्य भाषा की सम्पूर्ण सार्थक बड़ी इकाई है। वाक्य ही भाषा है, यदि ऐसा कहा जाये तो तो अत्युक्ति नहीं होगी। वाक्य के संबंध में अधोलिखित तथ्यों की जानकारी आवश्यक है–

वाक्य के मुख्य अवयव

वाक्य के दो मुख्य अवयव है– (1) उद्‌देश्य, (2) विधेय।

(1) उद्‌देश्य–जिस वस्तु के विषय में कहा या विधान किया जाता है, उसे सूचित करने वाले शब्द को उद्‌देश्य कहा जाता है। जैसे–

आत्मा नित्य है।

बालक पढ़ रहा है।

मोहन ने सोहन को मारा।

उपर्युक्त वाक्यों में आत्मा, बालक और मोहन उद्‌देश्य हैं, क्योंकि वाक्य में इनके विषय में कुछ कहा या विधान किया गया है।

(1) विधेय– उद्‌देश्य के विषय में किए गए विधान को सूचित करने वाले शब्दों को विधेय कहते हैं। उपर्युक्त वाक्य में **आत्मा, बालक** और **मोहन** ने इन उद्‌देश्यों के विषय में क्रमशः **नित्य है, पढ़ रहा है** तथा **सोहन को मारा** का विधान किया गया है, अतः ये विधेय कहलायेंगे।

वाक्य और उपवाक्य

वाक्य की परिभाषा में बताया गया कि सार्थक पद समूह वाक्य कहलाते हैं–तो क्या कमल, तालाब, मछली, बादल वाक्य हैं? या खिलता है, भरता, तैरती, बरसता वाक्य हैं? पहले सार्थक संज्ञाएँ गिनायी गयीं, फिर उनसे सम्बद्ध क्रियाएँ, सबके अपने अर्थ हैं, पर ये संज्ञाएँ अकेले वाक्य नहीं बना सकतीं। वाक्य वही पद समूह कहा जायेगा जिसमें विधेय (क्रिया) और उद्‌देश्य (कर्ता) दोनों होंगे। जैसे–

कमल (उद्‌देश्य) खिलता है (विधेय)।

तालाब (उद्‌देश्य) भरता है (विधेय)।

मछलियाँ (उद्‌देश्य) तैरती हैं (विधेय)।

बादल (उद्‌देश्य) बरसता है (विधेय)।

उपर्युक्त वाक्य पूरा अर्थ बोध करते हैं। सार्थक वाक्य में कर्ता और क्रिया को अपने–अपने स्थान पर बहुत समीप होना चाहिए। वस्तुतः वाक्य की सार्थकता उद्‌देश्य और विधेय के परस्पर औचित्य पर भी निर्भर करती है। जैसे–

वह घी से आग बुझाता है।

व्याकरण की दृष्टि से वाक्य बिल्कुल ठीक है, परन्तु वाक्य में भावबोध कराने की योग्यता नहीं है, क्योंकि उद्‌देश्य और विधेय का संबंध परस्पर विरोध युक्त है, औचित्यपूर्ण नहीं। घी से आग नहीं बुझायी जा सकती, इसके लिए पानी की आवश्यकता होती है। अतः वाक्य में घी के स्थान पर पानी कर देने से या बुझाता है, की जगह जलाता है, कर देने से वाक्य में भावबोध की योग्यता आ जायेगी–

वह पानी से आग बुझाता है।

वह घी से आग जलाता है।

वाक्य में आकांक्षा, योग्यता और क्रम–समुचित अर्थबोध के लिए वाक्य में इन तीन तत्वों की विद्यमानता आवश्यक है।

आकांक्षा–वाक्य में एक पद का उच्चारण सुनने के बाद दूसरे पद का उच्चारण सुनने की इच्छा, आकांक्षा कहलाती है। **जैसे–रात में पढता है।**

इस वाक्य को सुनकर यह जानने की स्वाभाविक इच्छा होती है कि कौन पढ़ता है ? यदि यह कह दिया जाये कि **रात में विद्यार्थी पढ़ता है,** तो प्रश्न का उत्तर आ जाता है और वाक्य का अधूरापन भी समाप्त हो जाता है। तात्पर्य यह कि इस वाक्य में विद्यार्थी शब्द की आकांक्षा है।

योग्यता :– पदों के अर्थबोधन का सामर्थ्य योग्यता है, जब वाक्य का प्रत्येक शब्द पदो के अर्थबोधन कराने में सहायता करे, तो समझना चाहिए कि वाक्य में योग्यता वर्तमान है। जैसे–

चिड़िया पैर के सहारे उड़ती है।

व्याकरण की दृष्टि से ठीक होते हुए भी, यह वाक्य भावबोध कराने में सक्षम नहीं है, क्योंकि पैर के सहारे चला जा सकता है, उड़ा नहीं। अतः वाक्य में यदि पैर की जगह पंख दिया जाये तो वाक्य में अर्थबोध की क्षमता (योग्यता) आ जायेगी–**चिड़िया पंख के सहारे उड़ती है।**

क्रम–वाक्य में पदों की विधिवत् योजना को क्रम कहते हैं। प्रत्येक वाक्य में पद का एक क्रम होता है, जो अर्थबोध तो कराता ही है, भाषा को सुघड़ता भी प्रदान करता है। जैसे–

पढ़ी मैंने किताब

वाक्य का यह क्रम ठीक नहीं है– इसे मैंने किताब पढ़ी रूप में लिखा जाना चाहिए, क्योंकि कर्ता के बाद कर्म तब क्रिया का व्याकरणिक विधान है।

वाक्य के भेद

वाक्य के भेद दो दृष्टियों से किए गए हैं–

(क) रचना की दृष्टि से। (ख) अर्थ की दृष्टि से।

(क) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं–

(1) सरल वाक्य–ऐसा वाक्य जिसमें एक कर्ता और एक क्रिया हो सरल या साधारण वाक्य कहलाता है। दूसरे शब्दों में, जिस वाक्य में एक उद्‌देश्य और एक विधेय रहता है। जैसे–

राम पढ़ता है। वह आया।

मोहन दौड़ता है। मैं गया।

धूप निकली। तुम दौड़े।

बदल गरजे।

इन सभी वाक्यों में एक उद्‌देश्य–**राम, मोहन, धूप, बादल, वह** मैं, तुम और प्रत्येक का क्रमशः एक ही विधेय है–प**ढ़ता है, दौड़ता है, निकली, गरजे, आया, गया, दौड़े है।**

(2) मिश्रवाक्य–जिस वाक्य में एक सरल वाक्य के अतिरिक्त कोई दूसरा उपवाक्य या अंगवाक्य हो उसे मिश्रवाक्य कहते हैं। अर्थात् ऐसा वाक्य जिसमें मुख्य उद्‌देश्य और मुख्य विधेय के अतिरिक्त एक या अधिक समापिका क्रियाएँ हों, मिश्रवाक्य कहलाता है। जैसे–

वह कौन ऐसा भारतीय है जिसने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो।

इसमें वह कौन–सा ऐसा भारतीय है मुख्य वाक्य है शेष सहायक वाक्य या उपवाक्य है, क्योंकि मुख्य वाक्य के साथ ही इनकी अर्थगत संगति है। उपवाक्य पूर्णतया मुख्यवाक्य पर आधारित होता है, क्योंकि यह पूर्णतया मुख्यवाक्य पर आश्रित होता है।

(3) **संयुक्त वाक्य**–जहाँ साधारण तथा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अव्ययों द्वारा हो उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। अर्थात ऐसा वाक्य समूह जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्रवाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त किए जायें। जैसे–

मैं घर पहुँचा कि पानी बरसने लगा और पानी इतना बरसा कि ठंड बढ़ गयी।

यहाँ संयोजक अव्यंय और है, जिसके द्वारा दो मिश्रवाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया है। इस वाक्य के संबंध में यह बात ध्यान रखने की है कि इसका

प्रत्येक वाक्य स्वतंत्र होता है, एक वाक्य दूसरे पर आश्रित नहीं रहता, केवल संयोजक अव्यय ही इन स्वतंत्र वाक्यों को मिलाते हैं। इन स्वतंत्र एवं मुख्य वाक्यों को व्याकरण में समानाधिकरण उपवाक्य भी कहा गया है। क्योंकि ये उपवाक्य मुख्य वाक्य के समान ही अपना स्थान रखते हैं।

(ख) अर्थ की दृष्टि से

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं–

(1) **विधिवाचक वाक्य–**जिस वाक्य से किसी बात के होने का बोध हो, उसे विधिवाचक वाक्य (Affirmative Sentence) कहते हैं।

मैं नहा चुकी। (सरल वाक्य)

मैं नहा चुका तब वह साबुन लाया। (मिश्र वाक्य)

मैंने ठण्डे पानी से नहाया और मेरे शरीर की गर्मी शान्त हो गयी। (संयुक्त वाक्य)

(2) निषेधवाचक वाक्य–जिस वाक्य से किसी बात के न होने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य (Negative Sentence) कहते हैं।

मैंने नहीं नहाया। (सरल वाक्य)

मैंने नहीं नहाया इसलिए खाना नहीं खाया। (मिश्र वाक्य)

मैंने नहीं नहाया और इसीलिए मेरे शरीर की गर्मी शांत नहीं हुई। (संयुक्त वाक्य)

(3) आज्ञावाचक वाक्य–जिस वाक्य से किसी तरह की आज्ञा का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य (Imperative Sentence) कहते हैं।

तुम नहाओ। वह नहाये। मोहन नहाये। (सरल वाक्य)

तुम नहाओ साथ में सभी नहायें। (मिश्र वाक्य)

तुम नहाओ और तुम्हारे बाद सभी नहाये। (संयुक्त वाक्य)

(4) प्रश्नवाचक वाक्य –जिस वाक्य से किसी प्रकार के प्रश्न का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence) कहते हैं।

क्या तुम नहा रहे हो? तुम्हारा नाम क्या है? (सरल वाक्य)

(5) विस्मयवाचक वाक्य –जिस वाक्य से आश्चर्य, दुःख एवं सुख का बोध हो, उसे विस्मयवाचक वाक्य (Exclamatory Sentence) कहते हैं।

ओह ! उसके पैरों से खून निकल रहा है।

अरे ! वह आदमी तो हवा में उड़ रहा है।

अहा ! तुम्हारे आने से सभी प्रसन्न हैं।

(6) सन्देहवाचक वाक्य –जिस वाक्य में किसी बात का सन्देह प्रकट हो, उसे सन्देवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे –

राम घर पहुँच गया होगा।

यह कार्य मैंने किया होगा।

उसने पुस्तक पढ़ी होगी।

(7) इच्छावाचक वाक्य –जिस वाक्य से किसी प्रकार की इच्छा या शुभकामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

तुम अपने उद्‌देश्य में सफल रहो।
वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो।
राधा अपनी कक्षा में प्रथम आई।

(8) संकेतवाचक वाक्य –इस वाक्य में एक वाक्य दूसरे की सम्भावना पर निर्भर रहता है।

यदि तुम चलो, तो मैं भी चलूँ।
बरसात न होती, तो फसल सूख जाती।

तुम न बचाते, तो वह डूब जाता।

अशुद्धियाँ

भाषा में शुद्ध प्रयोगों का बहुत बड़ा महत्व है और यह शुद्ध प्रयोग बहुत कुछ व्याकरण ज्ञान पर आधारित है। संस्कृत के एक श्लोक में पिता अपने पुत्र को व्याकरण पढ़ने का उपदेश देता हुआ कहता है–

यद्यपि बहुनाधीषे तदपि पठ पुत्र व्याकरणम्।

स्वजनः श्वजनो मा भूत सकलः शकलो सकृच्छकृत।।

''हे पुत्र ! चाहे तुम अधिक अध्ययन न करो फिर भी व्याकरण का अध्ययन अवश्य करो वरना व्याकरण ज्ञान के अभाव में **स्वजन–श्वनज** हो जायेंगे, **सकल–शकल** हो जायेगा और **सकृत्–शकृत्** हो जायेगा।'' इस श्लोक में तीन शब्द आये हैं, जिन्हें यदि यथास्थान शुद्ध ढंग से न लिखा जाये तो अर्थ उलट जायेगा–

स्वजन = अपने बन्धु बान्धव।	**शकल = टुकड़ा।**
श्वजन = कुत्ते।	**सकृत = एक बार।**
सकल = सम्पूर्ण।	**शकृत् = अनेक बार।**

ऊपर के शब्दों में जो अर्थ परिवर्तन आये हैं, वे व्यंजन के बदलाव के कारण हैं, यदि इन्हें सही ढंग से न लिखा जाये या बोला जाये तो अर्थ उलट जायेगा। यह तो एक भाषागत अशुद्धियों की छोटी–सी बानगी है। हिन्दी अपने आप में एक विलक्षण भाषा है–इसे उस संस्कृत की विरासत मिली है, जिसका एक–एक वर्ण, एक–एक पद और एक–एक वाक्य व्याकरणिक नियमों में जकड़ा है, दूसरी ओर इसे लोकभाषाओं (बोलियों) की विरासत मिली है, जो परम स्वतंत्र होकर बढ़ती है, व्याकरण गत बन्धन को नहीं मानती है, तीसरी ओर इसके ऊपर एक विदेशी भाषा अंग्रेजी का भी जबर्दस्त प्रभाव है, जो स्वरूप की दृष्टि से वियोगात्मक भाषा है और संस्कृत से इस दृष्टि से बिल्कुल अलग है, क्योंकि संस्कृत संयोगात्मक भाषा है। ऐसी दशा में हिन्दी भाषा में व्याकरणगत पर्याप्त अनिश्चितता है। इसकी ध्वनियों को लिखने में, शब्दों के उच्चारण में, वाक्यों की रचना की तरह–तरह की भूलें होती रहती हैं। इन्हीं भूलों की ओर इस अध्याय में इंगित किया जायेगा।

हिन्दी भाषा को शुद्ध और व्याकरणिक दृष्टि से सुगठित भाषा बनाने की दृष्टि से पाँच प्रकार की अशुद्धियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

अशुद्धियों के प्रकार

अशुद्धियाँ बहुत अंशों में शब्द के स्वरूप का ठीक–ठीक ज्ञान न होने पर होती है, इनमें कुछ अशुद्धियाँ वर्तनी सम्बन्धी होती हैं। कुछ ऐसी होती हैं जिनका संबंध शब्द को गलत ढंग से बनाने में होता है। मुख्यतः अशुद्धियों को निम्नानुसार विभाजित किया जा सकता है–

1. उच्चारण और वर्तनीगत 2. शब्दगत

3. शब्दार्थगत 4. वाक्यगत

1. **उच्चारण तथा वर्तनीगत**–उच्चारण का सम्बन्ध बोलने से है तथा वर्तनी का सम्बन्ध लिखने से। यदि हम किसी शब्द का गलत उच्चारण करेंगे तो हम उसे लिखेंगे भी गलत ढंग से। प्रायः सभी लोग ऋता को रीता या रिता बोलते हैं। इसलिए लिखते भी रीता, रिता अथवा रीटा है। अंग्रेजी के प्रभाव से योग का योगा, अशोक का अशोका, बोलना और लिखना अशुद्ध है। हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। उसमें प्रत्येक ध्वनि को बिल्कुल सही–सही रूप में लिखने की क्षमता तो है ही, साथ ही उसमें एक ध्वनि को व्यक्त करने के लिए एक ही लिपि चिह्न है। फिर भी विद्यार्थी प्रायः वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ किया करते हैं। जैसे–'ण' और 'न' की अशुद्धियाँ–'ण' और 'न' के प्रयोग में सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

'ण' अधिकतर संस्कृत शब्दों में आता है। जिन तत्सम शब्दों में 'ण' होता है उनके तद्भव रूप में 'ण' के स्थान पर 'न' प्रयुक्त होते हैं जैसे–रण = रन, फण = फन , कण = कन, विष्णु–विसनू।

'छ और 'क्ष' की अशुद्धियाँ – 'छ' एक स्वतंत्र व्यंजन है किन्तु 'क्ष' संयुक्त व्यंजन। यह 'क' और 'ष' के मेल से बना है। 'क्ष' केवल संस्कृत शब्दों में प्रयुक्त होता है, जैसे–शिक्षा, दीक्षा, समीक्षा, प्रतीक्षा इत्यादि–रिक्शा को रिक्षा कहना ठीक नहीं।

'ब और 'व' की अशुद्धियाँ – 'ब और 'व' के प्रयोग को लेकर हिन्दी में प्रायः अशुद्धियाँ होती हैं। इन अशुद्धियाँ का कारण है अशुद्ध उच्चारण। शुद्ध उच्चारण के आधार पर 'ब' और 'व' का भेद किया जाता है ठेठ हिन्दी में 'ब' वाले शब्दों की संख्या अधिक है 'व' वालों की कम। ठीक इसका उल्टा संस्कृत में है। संस्कृत में 'व' वाले शब्दों की अधिकता है। संस्कृत से अनेक शब्द हिन्दी में प्राप्त किए गए हैं। संस्कृत के 'ब' वाले कुछ शब्द हैं–बन्धु, बंध, बर्बर, ब्राह्मण। संस्कृत के 'व' वाले शब्द हैं–वंश, वाक्, वक्र, वंचना आदि।

विशेष–संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे हैं जो 'व' और 'ब' दोनों में लिखे जाते हैं और दोनों शुद्ध माने जाते हैं। पर हिन्दी में इस प्रकार के शब्दों में 'ब' वाला रूप ही अधिक चलता है। प्रायः 'व' का 'ब' होने पर या 'ब' का 'व' होने पर अर्थ बदल जाता है। जैसे–वह–बह, शव–शब्, रव–रब, वार–बार, वली–बली, वाद–बाद, वात–बात, वे–बे, वाला–बाला।

'श', 'ष', 'स' की अशुद्धियाँ – 'श', 'ष' और 'स' भिन्न–भिन्न अक्षर हैं। इन तीनों की उच्चारण प्रक्रिया भी अलग–अलग है। उच्चारण दोष के कारण ही वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ होती हैं। इनके उच्चारण में निम्नलिखित बातों की सावधानी रखी जाए।

क. 'ष' केवल संस्कृत शब्दों में आता है, जैसे–सन्तोष, भाषा, गवेषणा, द्वेष, मूषक।

ख. जिन संस्कृत शब्दों की मूल धातु में 'ष' होता है, उनसे बने शब्दों में भी 'ष' रहता है, जैसे 'शिष्' धातु से शिष्य, शिष्ट आदि।

ग. सन्धि करने में क, ख, ट, ठ, प, फ के पूर्व आया हुआ विसर्ग (:) सदैव 'ष' हो जाता है।

घ. यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पूर्व 'अ' या 'आ' के सिवा कोई भिन्न स्वर हो तो 'स' के स्थान पर 'ष' होता है।

ड़ 'ट' के पूर्व केवल 'ष' आता है, जैसे–षोड्स, षडानन, कष्ट, नष्ट।

च. 'ऋ' के बाद प्रायः 'ष' आता है, जेसे–ऋषि, कृषि, तृषा।

छ. संस्कृत शब्दों में च, छ के पूर्व 'श' ही आता है, जैसे–निश्चय, निश्चल।

ज. जहॉ 'श' और 'स' एक साथ प्रयुक्त होते हैं, वहॉ 'श' पहले आता है, जैसे–शासन, शासक, प्रशंसा, नृशंस।

झ. जहॉ 'श', 'ष' एक साथ आते हैं, वहॉ 'श' के पश्चात 'ष' आता है, जैसे––शोषण, शीर्षक, शेष, विशेष इत्यादि।

ञ. उपसर्ग के रूप में निः, विः आदि आने पर मूल शब्द का 'स' पूर्ववत् बना रहता है, जैस– निःसंशय, निःसंदेह।

ट. यदि तत्सम् में 'श' हो तो उसके तद्भाव में 'स' होता है, जैसे–शूली–सूली, शाक–साग, शूकर–सूअर, श्वसुर–ससुर, श्यामल–साँवल।

ठ. कुछ शब्दों के रूप वैकल्पिक होते हैं, जैसे–कोश–कोष, केशर–केसर, कौशल्या–कौसल्या, केशरी–केसरी, कशा–कषा, वशिष्ठ–वसिष्ठ

हिन्दी में ये दोनों शुद्ध हैं।

इस प्रकार, वर्तनी संबंधी अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं। नीचे हम इस प्रकार की अशुद्धियों की एक सूची दे रहे हैं, जिसके निरन्तर अभ्यास से शुद्ध वर्तनी लिखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध बोलना भी जरूरी है। हिन्दी के प्रत्येक छात्र को बोलते या लिखते समय प्रत्येक वर्ण या अक्षर की ध्वनि पर ध्यान देना चाहिए।

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अच्छर	अक्षर	अंस	अंश
इक्षा	इच्छा	ग्रहणी	गृहिणी
प्रथक	पृथक	बन	वन
सरीर	शरीर	छेत्र	क्षेत्र
छुधा	क्षुधा	शमस्या	समस्या
विकाश	विकास	वृज	ब्रज

श्रदा	श्रद्धा	पैत्रिक	पैतृक
क्लेस	क्लेश	छत्रिया	क्षत्रिय
दुस्चरित्र	दुश्चरित्र	श्रमण	श्रवण

शब्दगत–शब्द सम्बन्धी भी बहुत–सी भूलें देखी जाती हैं। भूलें प्रायः अनावश्यक प्रत्यय लगाने के कारण होती हैं–

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अधिक्यता	अधिकता	पूज्यनीय	पूज्य
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल	माधुर्यता	माधुर्य
षष्टम	षष्ठ	सौजन्यता	सौजन्य
सशंकित	शंकित–सशंक	सौन्दर्यता	सौन्दर्य
सावधानता	सावधानी	औदारिता	औदार्य

3. शब्दार्थगत – शब्दों के सही अर्थ न मालूम होने की स्थिति में प्रायः उनका गलत प्रयोग हो जाता है तथा उनके गलत प्रयोग से भाषा दोषपूर्ण हो जाती है। जैसे–

अशुद्ध –नौकर आटा पिसवाने गया है।

शुद्ध वाक्य – नौकर गेहूँ पिसवाने गया है।

अतएव शब्दों के सही अर्थों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। इसी प्रकार शब्दों की क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी हो जाया करती है, जिनका सुधार होना अति आवश्यक है। व्याकरण के नियमों के अनुसार ही वाक्य में शब्द का निश्चित क्रम होना चाहिए। शब्दों का क्रम वाक्य में सही न होने पर वाक्य का सही अर्थ नहीं निकलेगा। जैसे–

1. अशुद्ध वाक्य– राम, जो कल बीमार था, ने आज भी कोई दवा नहीं खायी।

   शुद्ध वाक्य– राम ने, जो कल बीमार था, आज भी कोई दवा नहीं खायी।

2. अशुद्ध वाक्य– सब लड़के अपनी किताब और कलम से लिख और पढ़ रहे हैं।

शुद्ध वाक्य–सब लड़के अपनी किताब और कलम से पढ़ और लिख रहे हैं।

3. अशुद्ध वाक्य–राम एक फूलों की माला बाजार से लाया।

   शुद्ध वाक्य–राम बाजार से फूलों की एक माला लाया।

4. वाक्यगत–वाक्य अशुद्ध तब होता है जब इसके निर्माण में व्याकरण का ध्यान न रखा जाए। व्याकरण के जितने भी पक्ष होते हैं, उनका असावधान प्रयोग वाक्य को अशुद्ध बना देता है। कुछ उदाहरण–

   1. विभक्ति सम्बन्धी अशुद्धियाँ – सर्वनाम के साथ विभक्ति का प्रयोग संयुक्त रूप से ही करना चाहिए। जैसे–उसने, किसने, तिसने, जिसने, हमको, आपको आदि। अन्य शब्दों के साथ विभक्ति अलग से ही लिखी जाती है।

क. कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' का प्रयोग– संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का ज्ञान होता है, उसको कर्ता कहते हैं। जैसे–'राम ने रावण को मारा' इस वाक्य में 'मारना' क्रिया है। इस क्रिया को राम ने किया। अतः इस वाक्य में 'राम' कर्ताकारक हैं। कर्ताकारक की विभक्ति 'ने' है। इस 'ने' विभक्ति का प्रयोग सकर्मक (जिसमें कर्म हो) क्रिया के सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतकाल में कर्तृ वाच्य में ही होता है। जैसे–

1. मैंने खाना खाया। (सामान्य भूतकाल)
2. मैंने खाना खाया है। (आसन्न भूत)
3. मैंने खाना खाया था। (पूर्ण भूतकाल)
4. शायद मैंने खाना खाया हो। (संदिग्ध भूतकाल)

अकर्मक क्रिया (जिसमें कर्म न हो) के साथ 'ने' विभिक्त का प्रयोग कभी भी नहीं होता है। जैसे–

1. मैं घर जाऊँगा 2. मैं दौड़ा।
3. वे रोये। 4. वह दिन भर सोई।

ख. **कर्मकारक की विभक्ति 'को' का प्रयोग–** जिस शब्द पर कर्ता के व्यवहार का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे–'राम ने रावण को मारा' इस वाक्य में 'राम' कर्ता के व्यापार अर्थात मारने का फल रावण पर पड़ा। अतः 'रावण' इस वाक्य में कर्मकारक है। अतः कहा जा सकता है कि कर्म की विभक्ति 'को' हुई। कर्म की विभक्ति 'को' का प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

1. **कभी–कभी सम्प्रदान करके ही विभक्ति 'को', 'के लिए' के स्थान पर कर्मकार की विभक्ति 'को' का गलत प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे–**

अशुद्ध प्रयोग	**शुद्ध प्रयोग**
भिखारियों को अन्न लाओ	भिखारियों के लिए अन्य लाओ।

2. कभी–कभी सम्प्रदान करके ही विभक्ति 'को' 'के लिए' के स्थान पर कर्मकार की विभक्ति 'को' का गलत प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे–

अशुद्ध प्रयोग– उनको रोटी खाने की इच्छा नहीं है।

शुद्ध प्रयोग–उनकी रोटी खाने की इच्छा नहीं है।

2. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ–लिंग का अर्थ 'चिह्न' या 'निशान' संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। जैसे–'घोड़ा' शब्द से पुरूष जाति और 'घोड़ी' शब्द से स्त्री जाति का बोध है। लिंग तीन प्रकार के होते हैं–

1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. उभयलिंग

पुरूषों के लिए पुल्लिंग, स्त्रियों के लिए स्त्रीलिंग तथा जो शब्द आवश्यकता के अनुसार पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उभयलिंग कहते हैं। जैसे–कमीज, दही, अखबार इत्यादि।

1. संज्ञा शब्दों में लिंग परिवर्तन होता है। अग्रलिखित शब्दों में प्रायः अशुद्धियाँ की जाती हैं–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
सम्पादक	सम्पादिका	कवि	कवयित्री
छात्र	छात्रा	विद्वान	विदुषी
युवक	युवती	पाठक	पाठिका

2. जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता तब क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार होता है। जैसे–

   हरी खाना खाता है।

   मीरा गाना गाती है।

3. समस्त पदों में लिंग अन्तिम पद के अनुसार होता है। जैसे–

   बगीचों में गायें और बैल चर रहे हैं।

   बगीचे में बैल और गायें चर रही हैं।

4. जब कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है, परन्तु यदि कर्म के साथ 'को' का प्रयोग नहीं होता तब क्रिया का लिंग 'कर्म' के अनुसार होता है। जैसे–

   गीता ने आम खाया। राम ने रोटी खायी।

5. जिस वाक्य में कर्ता 'ने' रहित हो उस वाक्य में क्रिया का लिंग कर्ता के अनुसार न हो तो वहाँ क्रिया का लिंग कर्ता के लिंग के अनुसार कर देना चाहिए।

   अशुद्ध–गोभी का फूल खाने की वस्तु होती है।

   शुद्ध– गोभी का फूल खाने की वस्तु होता है।

3. वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ– एक वचन को बहुवचन बनाने में छात्र प्रायः अशुद्धि करते हैं। उसमें निम्नलिखित कुछ नियमों का ध्यान रखना चाहिए।

संज्ञा के जिस रूप में इनकी संख्या का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं, वचन दो प्रकार के होते हैं–

1. एकवचन 2. बहुवचन

जिससे एक वस्तु का पता चले वह 'एकवचन' तथा जिसमें एक से अधिक वस्तुओं का पता चले वह –'बहुवचन' होता है। कभी–कभी छात्र 'वचन' सम्बन्धी अशुद्धियाँ कर देते हैं। एकवचन से बहुवचन बनाते समय यह गलती विशेष रूप से दिखाई पड़ती है।

1. अकारान्त शब्दों के अंत में (एँ) का प्रयोग आवश्यक है। जैसे संस्थाएँ, कन्याएँ, दिशाएँ आदि।
2. ईकारान्त शब्दों के अंत में (याँ) का प्रयोग आवश्यक है। दीर्घ ई बहुवचन में ह्रस्व इ में बदल जाता है।
3. उकारान्त शब्द बहू, झगडालू का बहुवचन बहुओं, झगड़ालुओं होगा।
4. 'और', 'एवं', 'तथा' से जुड़े हुए शब्दों में से अधिक कर्ता हों और एक ही लिंग के हों तो क्रिया 'बहुवचन' में होती है और उसका लिंग कर्ताओं के अनुसार होता है। जैसे–

   (i) हरी और श्यामू घूम रहे हैं।

   (ii) सीता और गीता घूम रही हैं।

5. जिस वाक्य में कर्ता 'ने' रहित हो, लिंग भेद हो। साथ वह 'और' से जुड़ा हो तो क्रिया अंतिम कर्ता के लिंग के अनुसार लगती है। जैसे–

   (i) लड़कियाँ और लड़के खेलने गये।

   (ii) हरी और मोहन घर गये।

(ii) नारी और पुरूष घूम रहे हैं।

6. जिस वाक्य में कर्ता 'ने' रहित हो तथा 'या' से जुड़े हों तो उनकी क्रिया अन्तिम कर्ता के अनुसार लिंग और वचन में प्रयुक्त होगी। जैसे–

(i) बालक या बालिकाएँ लड़ रही हैं।

(ii) हरी या मोहन रो रहा है।

(ii) मैं या तुम नाचोगे।

7. असमान क्रिया होने पर वचन सम्बन्धी दोष प्रायः आ जाते हैं।

	अशुद्ध	**शुद्ध**
(i)	हम खाना खाती है।	हम खाना खाते हैं।
(ii)	सीता पानी पीता है।	सीता पानी पीती है।

8. यदि कर्ता 'ने' रहित हो तथा समान लिंग हो तथा 'और' से जुड़ा हो तथा समुदाय का बोध होता हो तो क्रिया एकवचन में होती है और लिंग कर्ता के अनुसार होता है जैसे–

(i) घर और गृहस्थी सुख देती है।

(ii) भूख और प्यास दुःख देती है।

9. शब्दों का सही ज्ञान न होने पर वचन संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं, जैसे–

अशुद्ध	**शुद्ध**
ईश्वर के अनेकों रूप हैं	ईश्वर के अनेक रूप हैं।

10. यदि वाक्य में एक से अधिक 'और' से जुड़े हुए 'ने' रहित कर्ता हों और उसके अन्त में समुदायवाचक शब्द हो तो क्रिया 'बहुवचन' में होगी और उसका लिंग कर्ताओं के समान होगा। जैसे –

(i) मोहन और रीता दोनों तैर रहे हैं।

(ii) मोहन, सोहन और रमेश तीनों घूम रहे हैं।

11. एक पुरूष का अनेक पुरूषों के रूप में प्रयोग करने पर भी वाक्यों में अशुद्धियाँ आ जाती हैं। जैसे

अशुद्ध– मैं खाने बैठा हूँ। हमारे लिए खाना लाओ।

शुद्ध– मैं खाने बैठा हूँ। मेरे लिए खाना लाओ।

अशुद्ध– यह मेरी छड़ी है। इसे हम किसी को नहीं देंगे।

शुद्ध– यह मेरी छड़ी है। इसे मैं किसी को नहीं दूँगा।

3. **विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ–** संज्ञा के समान ही विशेषण के प्रयोग में भी अनुकूलता, आवश्यकता आदि की उपेक्षा होती है, जिसके कारण वाक्य–विन्यास में अशुद्धियाँ हो जाती है। जैसे–

अशुद्ध–कोयल का कंठ सबसे मधुरतम।
शुद्ध–कोयल का कंठ मधुरतम है।
अशुद्ध–रावण का आचरण बुरा दुराचरण है।
शुद्ध– रावण का आचरण बुरा है।
अशुद्ध–आकाश बहुत उच्च है।
शुद्ध– आकाश बहुत विशाल है।
अशुद्ध–यह घी की शुद्ध दुकान है।
शुद्ध– यह शुद्ध घी की दुकान है।

5. **विपरीत शब्दों के प्रयोग सम्बन्धी अशुद्धियाँ–**एक ही वाक्य में एक–दूसरे के विपरीत शब्दों के प्रयोग करने से भी वाक्य का अर्थ गलत हो जाता है। जैसे–

अशुद्ध–वह शायद अवश्य आएगा।
शुद्ध–वह अवश्य आएगा।
अशुद्ध–सम्भवतः वह निश्चित उत्तीर्ण हो जाएगा।
शुद्ध– वह निश्चित उत्तीर्ण हो जाएगा।
अशुद्ध–राम को अनुतीर्ण होने की आशा है।
शुद्ध– राम को अनुत्तीर्ण होने की आशंका है।

अशुद्धियाँ के उदाहरण

नीचे हिन्दी में प्रयुक्त अशुद्ध वाक्यों की सूची दी गई है। इन वाक्यो के मानक रूपों के लिए कृपया आगे देखिए।

अशुद्ध वाक्य

1. सम्प्रति वे कुलपति रह चुके हैं।
2. उसे घोड़े का दाम मिला।
3. दही स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती है।
4. बुरे से बुरा आदमी समय आने पर ठीक हो जाते है।
5. मैं साढ़े चार बजे अपने मित्र के नया घर पहुंचा।
6. राम के अन्दर कई दोष हैं।
7. मैं मेरे घर जा रहा हूँ तुम तुम्हारे घर जाओ।
8. यह उसके आत्मा की आवाज है।
9. देश में शान्ति और व्यवस्था की वातावरण स्थापित हो गई है।
10. उसने मुझ पर कायरपूर्ण हमला किया।
11. नेता मंच पर से बोला।
12. बहुत मिठास मुझे सहन नहीं होती।
13. मैं शामों को आपके घर पर ही बिताऊँगा।
14. परीक्षा में नकल करनी अनुचित है।
15. मेरी फाउण्ड पेन आज खराब हो गई।
16. साहित्य और जीवन में घोर सम्बन्ध है।
17. पत्रकारिता का कार्य तलवार की धार पर चलना है।
18. श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु का समाचार सुनकर सारा भारत खेद में डूब गया।
19. वीर षोडशवर्षीय अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने चक्रव्यूह तोड़ा।

20. अचानक उसके सीने पर दर्द हुआ।

शुद्ध वाक्य

1. सम्प्रति वे कुलपति हैं।
2. उसे चार घोड़ों के दाम मिले।
3. दही स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।
4. बुरे से बुरा आदमी समय आने पर ठीक हो जाता है।
5. मैं साढ़े चार बजे अपने मित्र के नये घर पहुँचा।
6. राम में कई दोष हैं।
7. मैं अपने घर जा रहा हूँ तुम अपने घर जाओ।
8. यह उसकी आत्मा की आवाज है।
9. देश में शान्ति और व्यवस्था का वातावरण स्थापित हो गया है।
10. उसने मुझ पर कायरतापूर्ण हमला किया।
11. नेताजी मंच पर से बोले।
12. बहुत मिठास मुझे सहन नहीं होती।
13. मैं शामें आपके घर पर ही बिताऊँगा।
14. परीक्षा में नकल करना अनुचित है।
15. मेरा फाउन्टेन पेन आज खराब हो गई।
16. साहित्य और जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध है।
17. पत्रकारिता का कार्य तलवार की धार पर चलने जैसा है।
18. श्रीमती इन्दिरा गाँधी की मृत्यु का समाचार सुनकर सारा भारत शोक में डूब गया।
19. अर्जुन पुत्र षोडश वर्षीय वीर अभिमन्यु ने चक्रव्यूह तोड़ा।
20. अचानक उसके सीने में दर्द हुआ।

संक्षिप्त व्याख्या

पाठ का केन्द्रीय भाव

इस पाठ के माध्यम से व्याकरण में वाक्य, वाक्य संरचना, प्रकार, अशुद्धिया एवं अशुद्धियों के प्रकार के विषय में ज्ञान का विकास हो सकेंगा ।

शब्दार्थ	अर्थ	Meaning
उद्देश्य	जिसके विषय में कहा जा रहा हो	Subject
विधेय	जो कहा गया हैं	Predicate
अर्थ	मतलब	Meaning
सरल	साधारण	Simple
मिश्र	मिला हुआ	mixed
संयुक्त	दो से अधिक का मेल	Compound
अशुद्धियाँ	त्रुटियाँ / कमियाँ / न्यूनता	Errors

उद्देश्य :–

1 छात्र भाषा की आत्मा अर्थात व्याकरण का महत्व जान सकेंगे।

2 छात्र वाक्य की संरचना एवं उसके प्रकार के विषय में अवगत हो संकेगे।

3 छात्र भाषा की अशुद्धि के विषय में समझ सकेंगे एवं उन्हें दूर कर सकेंगे।

4 छात्र शुद्ध व्याकरण का उपयोग कर सकेंगे एवं इस प्रकार हिन्दी भाषा के विकास एवं संवर्धन में सहयोगी हो सकेंगे।

5 छात्र व्याकरण के ज्ञान के द्वारा शुद्ध वाक्य एवं शुद्ध हिन्दी की संरचना कर सकेंगे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–

1. विचार की पूर्णता किससे व्यक्त होती है।

   अ. उद्देश्य ब. उपवाक्य स. वाक्य द. शब्द

2. छुधा का शुद्ध रूप होगा।

   अ. क्षुधा ब. छुःधा स. क्षूःधा द. छूधा

3. सरल वाक्य वाक्य का भेद किस दृष्टि से है :–

   अ. अर्थ ब. योग्यता स. रचना द. संयुक्त वाक्य

4. किसी बात के होने का संकेत देने वाला वाक्य होता है :–

   अ. निषेधवाचक ब. विधिवाचक स. विस्मय बोधक द. प्रश्नवाचक

5. संयुक्त वाक्य कौन से दो वाक्यो के संयोग से बनता है :–

   अ. आज्ञा तथा प्रश्नवाचक वाक्य ब. संदेहवाचक व इच्छावाचक

   स. विधि तथा निषेधवाचक द. सरल तथा मिश्र वाक्य

6. व्याकरण के अज्ञान से भाषा में क्या होता है

   अ. शुद्धि ब. अशुद्धि स. भेद द. अभेद

7. अशुद्धियाँ के मुख्यतः कितने प्रकार है :–

   अ. 4 ब. 2 स. 6 द. 3

8. लिखित अभिव्यक्ति का संबंध होता है :–

   अ. वाक्यो से ब. शब्दो से स. भावो से द. मात्रा अथवा वर्तनी से

9. वाक्य के मुख्य घटक होते हैं :–

   अ. उद्देश्य ब. विधेय स. दोनो द कोई नही

10. शुद्ध वर्तनी चुनिए :–

    अ आर्शीवाद ब आशिरवाद स आशिर्वाद द आर्शोवाद

11. रचना या रूप के आधार पर वाक्य होते है।

    अ. दो प्रकार के ब. तीन प्रकार के स. छः प्रकार के द. चार प्रकार के

12. अर्थ के आधार पर वाक्य होते है।

    अ. आठ प्रकार के ब. चार प्रकार के स. तीन प्रकार के द. छः प्रकार के

13. मौखिक अभिव्यक्ति का सम्बन्ध होता है।

    अ. श्रवण करने से ब. उच्चारण से स. कहने से द. बोलने से

14. किसी भी भाषा की मूलभूत इकाई है

    अ. संकेत ब. वाक्य स. ध्वनि द. शब्द

उत्तर :–1 स, 2. अ, 3. स, 4. ब, 5. द, 6. ब, 7. अ, 8. द, 9. स, 10. अ 11.ब ,12. अ,13. ब,14.ब

जोड़ी मिलाइयें –

1	सरीर	1	सावधानी
2	विकाश	2	पष्ठ
3	दुस्चरित्र	3	शरीर
4	पष्ठम	4	विकास
5	सावधानता	5	दुश्चरित्र

उत्तर :– 1/3, 2/4, 3/5, 4/2, 5/1.

निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध कीजिए –

अशुद्ध		**शुद्ध**	**अशुद्ध**		**शुद्ध**
चीड़िया	–	चिड़िया	कीनारा	–	किनारा
निरमाण	–	निर्माण	गीलहरी	–	गिलहरी
अनुकुल	–	अनुकूल	प्रथक	–	पृथक
अनुसंशा	–	अनुशंसा	दुस्चरित्र	–	दुश्चरित्र
विसम	–	विषम	ग्रहणी	–	गृहिणी
पूज्यनीय	–	पूज्य			

लघुउत्तरीय प्रश्न :–

प्र.1 वाक्य की परिभाषा क्या है।

उ0 किसी भी विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह वाक्य कहलाता है

प्र.2 वाक्य के दो अवयव लिखे।

उ0 1. उद्देश्य 2. विधेय

प्र.3 वाक्य में किन तीन तत्वो को प्रधानता होती है।

उ0 वाक्य में मुख्यतः तीन तत्व आकांक्षा, योग्यता, क्रम प्रधान होते है।

प्र.4 वाक्य के कितने भेद है ।

उ0 वाक्य के दो भेद – 1. रचना की दृष्टि से

2. अर्थ की दृष्टि से

प्र.5 रचना की दृष्टि से वाक्यो के भेद लिखे।

उ0 रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद है –

1. सरलवाक्य 2. मिश्रवाक्य 3. संयुक्त वाक्य

प्र.6 अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेद बताये।

उ0 अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते है।

1. विधिवाचक 2. निषेधवाचक 3. आज्ञावाचक 4. प्रश्नवाचक 5. विस्मयवाचक 6. संदेहवाचक 7. इच्छावाचक 8. संकेतवाचक

प्र.7 अशुद्धियाँ किसे कहते है ?

उ0 अशुद्धियाँ अर्थात् व्याकरण शब्द के स्वरूप का सही ज्ञान न होने पर प्रयुक्त भाषागत दोष अशुद्धियाँ है।

प्र.8 अशुद्धियाँ कितने प्रकार की हैं?

उ0 अशुद्धियाँ 4 प्रकार की हैं –

1. उच्चारण और वर्तनीगत 2. शब्दगत 3. शब्दार्थगत 4. वाक्यगत

प्र.9 'राम, जो कल बीमार था, ने आज भी कोई दवा नही खायी।' को शुद्ध स्वरूप में लिखे ।

उ0 राम ने, जो कल बीमार था, आज भी कोई दवा नहीं खायी।

प्र.10 शब्दो को शुद्ध करें।

1. सिता 2. लडकीयाँ 3. सरीर 4. श्रमण

उ0 1. सीता 2. लड़कियाँ 3. शरीर 4. श्रवण

इकाई–2 : हिन्दी भाषा

1. पूस की रात (कहानी) – प्रेमचंद
2. अप्प दीपो भव (लेख) – स्वामी श्रद्धानंद
3. पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी एवं शब्दयुग्म शब्द (संकलित)

पूस की रात

प्रेमचन्द

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा–सहना आया है, लाओ, जो रूपये रखे हैं, उसे दे दूं, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाड़ू लगा रही थी। पीछे फिरकर बोली–तीन ही तो रूपये हैं, दे दोगे तो कम्मल कहां से आवेगा ? माघ–पूस की रात हार में कैसे कटेगी। उससे कह दो, फसल से रूपये दे देंगे। अभी नहीं।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दशा में खड़ा रहा। पूस सिर पर आ गया, कम्मल के बिना हार में रात को वह किसी तरह नहीं सो सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुड़कियां जमायेगा गालियां देगा। बला से जाड़ों मरेंगे, बला तो सिर से टल जायेगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी–भरकम डील लिए हुए (जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था) स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला–ला दे दे, बला तो छूटे। कम्मल के लिए दूसरा उपाय सोचूंगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गयी और आंखें तरेरती हुई बोली–कर चुके दूसरा उपाय। जरा सुनूं, कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूं, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर–मर काम करो उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आये। मैं रूपये न दूंगी–न दूंगी।

हल्कू उदास होकर बोला–तो क्या गाली खाऊं ?

मुन्नी ने तड़पकर कहा–गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है ?

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहे ढीली पड़ गयीं। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, मानो एक भीषण जन्तु की भांति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रूपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये। फिर बोली–तुम छोड़ दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह उसी में झोंक दो, उस पर से धौंस।

हल्कू ने रूपये लिए और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक–एक पैसा काट–काटकर तीन रूपये कम्मल के लिए जमा किये थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक–एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था।

पूस की अंधेरी रात ! आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़े कांप रहा था। खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुंह डाले सर्दी से कूं–कूं कर रहा था। दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गर्दन में चिपकाते हुए कहा–क्यों जबरा, जाड़ा लगता है ? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहां क्या लेने आये थे। अब खाओ ठण्ड, मैं क्या करूं। जानते थे, मैं यहां हलवा–पूरी खाने आ रहा हूं, दौड़े–दौड़े आगे–आगे चले आये। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पड़े–पड़े दुम हिलाई और अपनी कूं–कूं को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान–बुद्धि ने शयद ताड़ लिया, स्वामी को मेरी कूं–कूं से नींद नहीं आ रही है।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुआ कहा– कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह रांड पछुआ न जाने कहां से बरफ लिए आ रही है। उठूं, फिर एक चिलम भरूं। किसी तरह रात तो कटे ! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है ! और एक–एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गर्मी से घबराकर भागे। मोटे–मोटे गद्दे, लिहाफ–कम्मल। मजाल है कि जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है ! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

हल्कू उठा और गड्ढे में से जरा–सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा, पियेगा चिलम, जाड़ा तो क्या जाता है, जरा मन बहल जाता है।

जबरा ने उसके मुंह की ओर प्रेम से छलकती हुई आंखों से देखा।

हल्कू–आज और जाड़ा खा ले। कल से मैं यहां पुआल बिछा दूंगा ! उसी में घुसकर बैठना, तब जाड़ा न लगेगा।

जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियें पर रख दिये और उसके मुंह के पास अपना मुंह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म सांस लगी।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊंगा, पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा। कभी इस करवट लेटता, कभी उस करवट, पर जाड़ा किसी पिशाच की भांति उसकी छाती को दबाये हुए था।

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद मे सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही

थी, पर उसे अपनी गोद से चिपटाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी ! अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा को पहुंचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक–एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमे एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छतरी के बाहर आकर भूंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकारकर बुलाया, पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड़–दौड़ भूंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरन्त ही फिर दौड़ता। कर्तव्य उसके ह्रदय में अरमान की भांति उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत को हवा से धधकना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमे छिपा लिया। फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रहा है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है। सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढें। ऊपर आ जायेंगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर भर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का बाग था। पतझड़ शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियां बटोंरू और उन्हें जलाकर खूब तापूं। रात को कोई मुझे पत्तियां बटोरते देखे तो समझे कोई भूत है। कौन जाने कोई जानवर ही छिपा बैठा हो, मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौध उखाड़ लिए और उनका एक झाड़ू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिए बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा तो पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा–अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो, बगीचे में पत्तियां बटोरकर तापें! टांटे हो जायेंगे, तो फिर आकर सोयेंगे। अभी तो रात बहुत है।

जबरा ने कूं–कूं करके सहमति प्रकट की और आगे–आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अंधेरा छाया हुआ था और अन्धकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूंदें टप–टप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहंदी के फूलों की खुशबू लिए हुए आया।

हल्कू ने कहा–कैसी अच्छी महक आई जबरू ! तुम्हारी नाक में भी सुगन्ध आ रही है ?

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पड़ी मिल गई थी। उसे चिचोड़ रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियां बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का एक ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पांव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड़ खड़ा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठण्ड को जलाकर भस्म कर देगा। थोड़ी देर मे अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की और वह पत्तियों को छू–छूकर भागने लगी। उस स्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अन्धकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अन्धकार के उस अनन्त सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पड़ता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। एक क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली और दानों पांव फैला दिये, मानो ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में जो आये सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय पाकर वह विजय–गर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा–क्यों जब्बर, अब ठंड नहीं लग रही है ?

जब्बर ने कूं–कूं करके मानो कहा–अब क्या ठंड लगती ही रहेगी।

'पहले से यह उपाय न सूझा, नहीं इतनी ठंड क्यों खाते।'

जबरा ने पूंछ हिलाई।

'अच्छा आओ इस अलाव को कूद कर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गये बच्चा, तो मैं दवा न करूंगा।

जबरा ने उस अग्निराशि की ओर कातर नेत्रों से देखा।

'मुन्नी से कल न कह देना नहीं तो लड़ाई करेगी।'

यह कहता हुआ वह उछला और अलाव के ऊपर से साफ निकल गया ! पैरों से जरा लपट लगी, पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खड़ा हुआ।

हल्कू ने कहा–चलो–चलो, इसकी सही नहीं। ऊपर से कूदकर आओ। वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

पत्तियां जल चुकी थीं। बगीचे में फिर अन्धेरा छाया था। राख के नीचे कुछ–कुछ आग बाकी थी, जो हवा का झोंका आ जाने पर जरा जाग उठती थी, पर एक क्षण में फिर आंखे बन्द कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गयी थी, पर ज्यों–ज्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाये लेता था।

जबरा जोर से भूंककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुण्ड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुण्ड था। उनके कूदने–दौड़ने की आवाजें साफ कान में आ रही थीं। फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर–चर सुनायी देने लगी।

उसने दिल में कहा–नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहां ! अब तो कुछ नहीं सुनायी देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ !

उसने जोर से आवाज लगायी–जबरा, जबरा।

जबरा भूंकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली ! अब वह अपने को धोखा न दे सका। से अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दंदाया हुआ बैठा था। इस जाड़े–पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौड़ना असूझ जान पड़ा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगायी–लिहो–लिहो ! लिहो !!

जबरा भूंक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी, पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किये डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो–तीन कदम चला, पर एकाएक हवा का ऐसा ठण्डा, चुभने वाला, बिच्छू के डंक का–सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठण्डी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाड़े डालता था। नीलगायें खेत का सफाया किये डालती थीं। और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भांति उसे चारों तरफ से जकड़ रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढ़कर सो गया।

सवेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गयी थी। और मुन्नी कह रही थी–क्या आज सोते ही रहोगे ? तुम यहां आकर रम गये और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा–क्या तू खेत से होकर आ रही है ?

मुन्नी बोली–हां, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला ऐसा भी कोई सोता है ! तुम्हारे यहां मंड़ैया डालने से क्या हुआ ?

हल्कू ने बहाना किया–मैं मरते–मरते बचा, तुझे अपने खेत की पड़ी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, कि मैं ही जानता हूं।

दोनों फिर खेत की डांड़ पर आये। देखा, सारा खेत रौंदा पड़ा हुआ है, और जबरा मंडैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हों।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी। पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिंतित होकर कहा–अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा–रात की ठण्ड में यहां सोना तो न पड़ेगा।

लेखक परिचय

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकार एवं उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय था। इनका जन्म बनारस जिले के लमही ग्राम में 1880 में हुआ थां। प्रेमचंद ने पहले उर्दू में ही लेखन कार्य आरंभ किया। उन्होनें लगभग 300 से अधिक कहानियाँ और 12 उपन्यास लिखे है। जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद से पूर्व हिन्दी की कहानियाँ चमत्कार एवं कौतुक पर आधारित हुआ करती थीं, प्रेमचंद इसे यथार्थ से जोड़ने से सिद्धहस्त थे। ग्रामीण जीवन के चित्रण में वे प्रवीण थें । आदर्शात्मक यथार्थवाद से प्रेरित इनकी कहानियों के पात्र वर्गगत होने के साथ –2 जीवंत है। भाषा शैली अत्यंत चुस्त एवं सरल है। उनकी कहानियाँ की लोकप्रियता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि वे आज भी प्रांसगिक बनी हुई हैं। हिन्दी उर्दू मिश्रित मुहावरेदार भाषा का योगदान इनकी लोकप्रियता का एक महात्वपूर्ण कारक है।

जीवन पर्यन्त पारिवारिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबन्धी विरोधाभासों के बावजूद इतना उत्कृष्ट लेखन उनकी असीमित एवं अतुलनीय क्षमता का स्वयं परिचायक है।

प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम धनपतराय था। हिन्दी के सर्वेत्तम कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित होने के पहले वे उर्दू में लिखते थे। हिन्दी में उनकी प्रथम कहानी 'पंचमरमेश्वर' 1961 में सरस्वती नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। उन्होने लगभग 300 से भी अधिक कहानियॉ एवं 12 उपन्यास लिखे है। कहानियों में यथार्थ (वास्तविकता) का चित्रण करने में प्रेमचंद की बराबरी नहीं की जा सकती।

कृतियाँ

प्रथम कहानी – (उर्दू में) – 1970 में 'संसार का सबसे अनमोल रत्न'उर्दू के 'जमाना' नामक पत्र में छपी।

हिन्दी की प्रथम कहानी – पंच परमेश्वर – 1961 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई।

उद्देश्य –

1. छात्र पूस की रात कहानी के माध्यम से ग्रामीण भारत के जीवन से परिचित होंगे।
2. छात्र महान लेखक प्रेमचंद की कहानी कला की श्रेष्ठता के परिचित हो सकेंगे।
3. छात्र ऋणग्रस्तता के दुष्परिणामों से परिचित होकर उसके समाधान के विषय में मंथन कर सकेंगे।
4. छात्र मानव पशु प्रेम एवं परस्पर आत्मीयता से परिचित हो सकेंगे।
5. छात्र जीवन में आलस्य एवं अकर्मण्यता के दुष्परिणामों से परिचित हो सकेंगे।

केन्द्रीय भाव –

ऋणग्रस्तता से त्रस्त होकर व्यक्ति किस प्रकार अकर्मण्य एवं आलसी हो सकता है, इसका एक जीवंत उदाहरण प्रेमचंद की कहानी पूस की रात में दृष्टव्य है।

सारांश –

कहानी पूस की रात में मुख्य पात्र हल्कू खेती करता है और जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी खेती से उसे कोई विशेष लाभ नही होता और वह ऋणग्रस्तता के अंतहीन जाल मे फंस जाता है। यहाँ तक कि पूस के जाड़े की रात में स्वयं को भीषण ठंड से बचाने हेतु कम्बल खरीदने के पैसे भी उसके पास नही रहते। सूदखोर अलग उसे परेशान एवं जमींदार गाली देते रहते है। वह एवं उसकी पत्नी यह सोच लेते हैं कि मजदूरी ही बेहतर है कि कम–से–कम चैन तो है। इस बीच एक पूस की रात अत्यधिक ठंड मे हल्कू अपने पालतू कुत्ते जबरा के साथ खेत मे

एक विशेष प्रकार के सानिध्य का अनुभव करता है । दोनो एक दूसरे का सहारा बनते है परन्तु ऋणग्रस्तता से उत्पन्न खिन्नता एवं अत्यधिक ठंड के कारण उपजे आलस्य से हल्कू अकर्मण्यता का परिचय देता है। परिणामस्वरूप रात मे उसकी खड़ी फसल को नीलगाये नष्ट कर देती है । कहानी मे समाज मे व्याप्त आर्थिक असमानता एवं ऋणग्रस्तता की त्रासदी का बेहद सजीव चित्रण प्रेमचंद जी द्वारा किया गया है एवं कहीं कहीं उन्होंने व्यंग्य का भी सहारा लिया है। उदाहरणार्थ : एक–एक भागवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाये तो गर्मी से घबराकर भागे। मोटे–मोटे गद्दे, लिहाफ–कम्मल। मजाल है कि जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें!

शब्दार्थ –

शब्द	अर्थ	Meaning
कम्मल	कम्बल	Blanket
खुशामद	चापलूसी	Sycophancy
खैरात	निःशुल्क	Free of cost
मस्तक	सिर	Head
ऊख	गन्ना	Sugarcane
संगी	साथी	Companion
दीर्घ	लम्बा	Long
श्वान	कुत्ता	Dog
दुर्गन्ध	बदबू	Bad odour/unpleasant smell
निर्दय	बिना दया के	Kindless/cruel
बगीचा	बाग	Orchard
सत्यानाश	पूरी तरह नष्ट होना (विनाश)	Destruction

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पूस की रात कहानी के मुख्य पात्र का नाम क्या है ?

   (अ) मुन्नी (ब) जबरा (स) हल्कू (द) सहना

2. हल्कू के पालतू कुत्ते का क्या नाम था ?

   (अ) जबरा (ब) टाइगर (स) जैकी (द) भूरा

3. किस पशु ने खड़ी फसल को नष्ट किया ?

   (अ) टिड्डी दल (ब) नीलगाये (स) तोते (द) बन्दर

4. पूस की रात किसने लिखी हैं ?

   (अ) प्रेमचंद (ब) जयशंकर प्रसाद (स) जैनेन्द्र (द) भीष्म साहनी

उत्तर –

   (1) स (2) अ (3) ब (4) अ

Summary -

The story 'Poos ki Raat' means winter night, written by legendary Indian Hindi Novelist Premchand. Poos is the peak of winter. The main character of story is Halku who is a farmer suffering from indebtedness. He was stuck in the vicious circle of indebtedness despite his hard work as a farmer. Now he and his wife Munni aspire for labour work, such is their plight. Now, due to indebtedness Halku became careless and lazy. Due to poverty he is not able to buy even a blanket and fight the extreme cold of winter. All these circumstances led him to become careless, listless and idle. Ultimately due to his new found mentality he is not able to save his standing crops from the invasion of Nilgai (blue bull or Asian antelope). Thus it shows how harmful is indebtedness and poverty which can transform even the hardworkers into a idle one .

अप्प दीपो भव

स्वामी श्रद्धानंद

लेखक परिचय :– जन्म 2 फरवरी 1856 मृत्यु 23 दिसम्बर 1926.

स्वामी श्रद्धानंद महान शिक्षाविद के साथ –2 वकील, आर्यसमाजी व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। वे भारत के उन राष्ट्रभक्त सन्यासियों में से थे जिन्होनें अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज, शिक्षा व वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु न्यौछावर कर दिया। उन्होनें स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार किया एवं उनके अनुसरण स्वरूप देवनारारी लिपि में लिखी हिन्दी को प्राथमिकता दीं। वे वर्तमान उत्तराखण्ड स्थित हरिद्वार के गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक थे। साथ ही उन्होनें हिन्दू समाज को संगठित करने व स्त्री शिक्षा का प्रचार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

मूल पाठ –

पुत्रों! आज मैं तुम्हें उन बंधनों से मुक्त करता हूँ जिनके अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बंधन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बंधन बाँध रखे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूँ। इन बंधनों का पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं, इसलिए ये बंधन और भी कड़े हैं। ये बंधन उन उपनिषद् वाक्यों में वर्णित हैं जिन्हें आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातकों को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हूँ।

पुत्रों! परमात्मा सत्य स्वरूप है। उसका प्यारा बनने के लिए अपने जीवन को सत्यस्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो।

धर्म–मर्यादा का उल्लंघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अंतःकरण ही है, बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वही तुम्हें धर्म बतला देगा। अपने आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो।

स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचाएगा। जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की, उसके प्रति तुम्हारा जो कर्त्तव्य है, उसे अपने हृदय से पूछो। यह कुल तुम्हारा आचार्य है। मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुमसे केवल एक ही दक्षिणा माँगता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे से ऐसा कोई काम न हो जिससे तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुममें से अब कई गृहस्थ जीवन में प्रवेश करेंगे। उनसे मैं कहता हूँ कि पाँचों यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना। माता–पिता, आचार्य और अतिथि, ये तुम्हारे देवता हैं, इनकी सदा सुश्रुषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निराभिमान थे। वे कभी पूर्ण या दोष रहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें कहता हूँ कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड़ दो। इस संसार की अंधियारी में किसी को अपना ज्योंति–स्तम्भ बनाओ। पढ़ा–पढ़ाया कुछ अंश तक पथ–प्रदर्शक होता है। पर सच्चे पथ–प्रदर्शक वे ही महापुरूष होते हैं जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन समुद्र में ज्योति–स्तंभ का काम देते हैं। ऐसे आत्मत्यागी–सत्यवादी और पक्षपात रहित महापुरूषों के चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक, पीछे चलो।

लेना तो सभी संसार जानता है, तुम इस योग्य हुए हो कि अपनी बुद्धि ओर विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बंद न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारी देह बनी है, जिसकी गंगा का तुमने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भारत–भूमि में रहते हुए तुम उसके यश को उज्जवल करोगे, यह मुझे पूरी आशा है। इसके साथ ही जिस सरस्वती की कोख से तुमने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना । किसी भी काम को करते हुए साावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप में उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जो कि सहस्त्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूँजते रहे हैं। इन्हें गुरु–मंत्र समझो और अपना पथ–प्रदर्शक बनाओ।

इसके अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का संबंध रहा है। मैं तुमसे गुरु–दक्षिणा नहीं माँगता । गुरु–दक्षिणा देना तुम्हारा धर्म हैं, माँगना मेरा धर्म नहीं। मैं तुमसे यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनैतिक, सामाजिक या मानसिक विचार क्या–क्या

हैं? मैं केवल तुमसे यह पूछता हूँ कि क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित हैं या नहीं? स्मरण रखो, यह संसार सत्य पर आश्रित है। सत्य के बिना राजनीति धिक्कारने योग्य है, सत्य के बिना समाज के नियम पददलित करने योग्य हैं। यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलंबन है तो मुझे न कोई चिंता है और न कुछ माँगना है।

(गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह सन् 1914 ई. में स्वामी श्रद्धानंद का भाषण)

उद्देश्य –

- पाठ के माध्यम से छात्र स्वामी श्रद्धानंद का परिचय पा सकेंगे।
- छात्र पाठ के माध्यम से गुरूकुल की शिक्षा पद्धति को समझ सकेंगे।
- छात्र इस पाठ के माध्यम से सदाचरण तथा स्वयं दीपक बनने की प्रेरणा ग्रहण करता हैं।
- पाठ के माध्यम से छात्रों में सत्य का संदेश प्रसारित होता है।

केन्द्रीय भाव :– स्वामी श्रद्धानंद द्वारा छात्रों को उनकी शिक्षा समाप्ति पर दीक्षांत समारोह में अपने दीपक स्वयं बन कर मार्ग प्रकाशमान करते चलने एवं सत्य की राह पर चलने का संदेश दिया जातां है।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) प्रस्तुत लेख किसके भाषण का एक अंश है।

(अ) स्वामी विवेकानंद (ब) स्वामी श्रंद्वानंद (स) स्वामी परमानंद (द)रामकृष्णन परमहंस

(2) यह भाषण कहाँ पर दिया गया।

(अ) बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय (ब) दिल्ली वि.वि.

(स)गुरूकुल कांगडी वि.वि (द) शांतिनिकेतन

(3) स्वामी श्रद्वानंद का जन्म हुआ था।

(अ) 14 नवंबर (ब) 30 जनवरी (स) 2 फरवरी (द) 6 मई

(4) स्वामी जी ..... के सन्यासी थे।

(अ) ब्रहम समाज (ब) गायत्री समाज (स) थियोसोफिकल सोसायटी (द) आर्य समाज

(5) उन्होनें किस विश्वविद्यालय की स्थापना की।

(अ) बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय (ब) शांति निकेतन

(स) गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय (द) हरी सिंह गौर वि.वि

(6) छात्रों के उपदेश में उन्होनें किस धर्म का साक्षी माना।

(अ) शिक्षा (ब) चक्षु (स) अन्तःकरण (द) ऋषि भुमि

(7) किसका अनुसरण करने का गुरूमंत्र स्वामीजी ने दिया।

(अ) महापुरूषों का (ब) नेताओं का (स) ऋषि मुनियों का (द) अभिनेताओं का

(8) छात्रों को क्या स्मरण रखने का उपदेश दिया।

(अ) समाज (ब) अहिंसा (स) सत्य (द) धर्म

(9) छात्रों को स्वामीजी ने कौन से पथ पर चलना ही उनको सबकुछ मिल जाने के समान बताया गया है।

(अ) अहिंसा (ब) अपरिग्रह (स) अस्तेय (द) सत्य

(10) स्वामी जी ने ..... शिक्षा का प्रचार प्रसार भी किया था।

(अ) अनिवार्य शिक्षा (ब) स्त्री शिक्षा (स) प्राथमिक शिक्षा (द) उच्च शिक्षा

उत्तर – (1) ब (2) स (3) स (4) द (5) स (6) स (7) अ (8) स (9) द (10) ब

रिक्त स्थान भरों –

1. आज मैं तुम्हे ..... से मुक्त करता हूँ।
2. ..... में कभी मुख न मोड़ो।
3. महापुरूष जीवन में ..... का काम देते है।

उत्तर – (1) बंधनों (2) स्वाध्याय (3) ज्योति स्तंभ

लघुउत्तरीय प्रश्न –

प्र.1 अप्प दीपो भव का क्या आशय है।

उ0 अपने दीपक स्वयं बनो अर्थात् अपना पथ स्वयं निश्चित करो एवं ज्ञानरूपी पथ पर उजाला करते बढ़ते चलो।

प्र.2 स्वामीजी ने परमात्मा को किस स्वरूप में बताया है।

उ0 स्वामी जी ने परमात्मा को सत्य स्वरूप बताया हैं।

प्र.3 धर्म मर्यादा के विषय में स्वामीजी ने क्या उपदेश दिया ?

उ0 धर्म मर्यादा का भी साक्षी अंतःकरण है, कोई बाहर से धर्म नही बतायेगा जो हृदय परमात्मा का आसन है, वही धर्म बतायेगा।

प्र.4 स्वाध्याय का क्या महत्व है।

उ0 स्वाध्याय के द्वारा जो भी तुम्हारे अंतःकरण में है, जो सीखा है उस पर श्रवण, मनन तथा चिंतन करों, वो तुम्हे प्रमाद से बचायेगा।

प्र.5 गृहस्थ के लिये क्या संदेश दिया है।

उ0 पांचो यज्ञों को करने हेतु प्रमाद नही करने एवं माता–पिता , आचार्य एंव अतिथि जैसे देवताओं की सेवा सुश्रुषा करने का संदेश दिया गया हैं।

पांच यज्ञ –

1. **ब्रहम्यज्ञ**
2. **देवयज्ञ**
3. **पितृयज्ञ**
4. **भूत यज्ञ**
5. **अतिथि यज्ञ**

दीर्ध उत्तरीय प्रश्न

प्र.1 अप्प दीपों भव दीक्षान्त भाषण का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ0 स्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा दिये गये दीक्षान्त भाषण का केन्द्रीय भाव उसके शीर्षक 'अप्प दीपो भव' में ही छिपा हुआ है कि विद्यार्थियों तुम अपनी शिक्षा पूरी होने पर, स्वयं के प्रयासों से दीपक के समान प्रकाशवान बनो और दुनिया में ज्ञान का प्रकाश फैलाओं। अपने जीवन में सदा सत्य का ही सहारा लो।

प्र.2 ' अप्प दीपों भव ' का आशय संक्षेप में लिखिए। अप्प दीपों भव क्या हैं।

उ0 स्वामी श्रद्धानंदजी ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में सन 1914 में गुरूकुल के विद्यार्थियों को उनकी शिक्षा(पढ़ाई) पूरी होने पर 'अप्प दीपो भव' अर्थात दीपक के समान प्रकाशवान बनने और अपने ज्ञान से समूचे (पूरे) संसार को रोशन करने वाला सम्बोधन, भाषण में रूप में दिया था।

प्र.3 धर्म – मर्यादा की कसौटी अन्तः करण क्यों है?

उ0 ऐसा कहा जाता है कि हमारे अन्दर परमात्मा रहते हैं जबकि परमात्मा सत्य का स्वरूप हैं वही हमें सही मार्गदर्शन देते हैं/या वही हमें सही रास्ता दिखाते हैं। इसलिए हम जिस धर्म – मर्यादा को अतःकरण की कसौटी पर कसते हैं अर्थात

सत्य की कसौटी पर उसे हमने एक तरह से परमात्मा की कसौटी पर कसर हुआ समझना चाहिए। इसीलिए धर्म मर्यादा की कसौटी हमारा अंत करण ही हैं।

प्र.4 महापुरूष ' ज्योति स्तम्भ' क्यों कहे जाते हैं ?

उ0 ज्योति स्तम्भ में आशय उन प्रकाश स्तम्भों से है जो हमे राह चलते समय रोशनी या प्रकाश प्रदान कर मार्ग दिखाते हैं। उनके प्रकाश की सहायता से हमे मार्ग की हकीकत (सच्चाई/वास्तविकता) का पता चलता हैं तथा हम ठोकर आदि खाने से बच जाते हैं एवं बिना किसी बाधा/परेशानी के आगे बढ़ जाते है।

स्वार्मी श्रद्धानंद जी ने यहां महापुरूषों को उन्ही ज्योति स्तम्भों की उपमा दी है। क्योंकि वे भी हमें सही रास्ता दिखाने का काम ही करते हैं।

प्र.5 सरस्वती की कोख से दूसरा जन्म लेने से क्या आशय है?

उ0 बालक अपनी माँ की कोख से जन्म लेता हैं, और इस संसार में प्रवेश करता है। किन्तु फिर उसे कोई अच्छा गुरू मिलने पर वह उनसे गुरू दीक्षा लेकर ज्ञान प्राप्त करता है। गुरू से प्राप्त ज्ञान के द्वारा वह उस संसार से सही रूप में परिचित होता हैं, जिसमें उसने जन्म लिया है। अब इस प्रकार वह अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाता हैं एंव पहचान प्राप्त करता हैं। इसी को बालक का दूसरा जन्म होना कहा गया हैं। ज्ञान की देवी सरस्वती को माना जाता हैं, चूंकि यह सब कुछ ज्ञान की देवी सरस्वती की कृपा से होता हैं, अतः दूसरा जन्म सरस्वती से होना कहा गया हैं।

प्र.6 संसार जिस तथ्य पर आश्रित बताया गया है, वह क्या है और उसकी इतनी महिमा क्यों है?

उ0 संसार जिस तथ्य पर आश्रित है वह है– सत्य। सत्य के आधार पर ही हमारे सारे कार्य आश्रित हैं। बिना सत्य के राजनीति धिक्कारने योग्य हो जाती है। सत्य के बिना समाज के नियम पद्दलित करने योग्य हैं, सत्य ही हमारे जीवन का आधार हैं। सारांश में कहें तो सारा संसार इसी सत्य पर आधरित हैं।

प्र.7 दीक्षान्त भाषण का वक्तृत्व कला की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।

उ0 स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर दिया गया दीक्षान्त भाषण, 'अप्प दीपो भव' उनकी प्रभावी वक्तृत्व कला को दर्शाता हैं। स्वामी श्रद्धानंद जी ने गुरूकुल के शिष्यों को अत्यन्त प्रभावित

किया। ऐसा भाषण सुनते समय अच्छे से अच्छा श्रोता भी भाषण सुनने में खो जाएगा, जिसमें गुरू द्वारा अपने शिष्यों से गुरू दक्षिणा के रूप में कुछ नही मांगते हुए, उन्हें प्राप्त ज्ञान को दीप के समान समाज में रोशनी फैलाने के रूप में काम में लेने का आह्वान किया है। यह एक उत्तम एंव प्रभावी वक्तृत्व कला की मिसाल कही जा सकती है।

Summary -

'App Deepo Bhav' means come and be like a Deepak to spread light of knowledge and end the darkness through it. The whole article is based on the part of speech which was given by Swami Shrdhanand at Haridwar based Gurukul Kangdi University's Convocation ceremony in 1914. He was addressing the pass out students at the end of their education. The whole speech is mainly based on the god's truthfulness. He said that to live without any control or restraint is even more difficult because in that case, you have to be self disciplined. Try to listen the voice of your soul. Try to find one good soul as your pathfinder. Don't forget the goddess Saraswati and don't run away from self study.The Gurudakshina will be that you should not do anything which ashames your soul and the God.

पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी एवं शब्दयुग्म शब्द (संकलित)

शब्द और अर्थ में अटूट सम्बन्ध है। व्याकरण की दृष्टि से एक या एक से अधिक अक्षरों के सार्थक योग को शब्द कहते हैं। शब्द के दो प्रकार हैं– सार्थक और निरर्थक। जिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है या शब्दकोष में जिनका अर्थ दिया गया है वे सार्थक शब्द होते हैं, जैसे – पानी, सम्पत्ति, सूर्य आदि, इसके विपरीत जिन शब्दों का कोई अर्थ नही होता उन्हें निरर्थक शब्द कहा जाता है, जैसे – चाय,–वाय, रोटी–बोटी, इसमें वाय, बोटी शब्द निरर्थक हैं।

व्याकरण में सार्थक शब्दों का अध्ययन किया जाता है।

अर्थ की दृष्टि से शब्दों के अनेक रूप हैं, जैसे – पर्यायवाची शब्द, युग्म शब्द, एकार्थक शब्द, विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द आदि।

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्द भाषा को समृद्ध करते हैं। हिन्दी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के अतिरिक्त देशज (लोकभाषा के शब्द) शब्द हैं जो हिन्दी के पर्यायवाची शब्दों को महत्वपूर्ण बनाते हैं। यद्यपि पर्यायवाची शब्दों के अर्थ में समानता होती है तथापि इनका प्रयोग एक ही तरह से नहीं होता। एक ही अर्थ के सूचक शब्द बार–बार यदि प्रयुक्त किये जाते हैं तो भाषा के प्रवाह एवं सौन्दर्य में बाधा पड़ती है।

प्रत्येक शब्द की महत्ता विषय और स्थान के अनुसार होती है।

पर्यायवाची शब्द दो प्रकार के होते हैं –

1. पूर्ण पर्यायवाची शब्द
2. अपूर्ण पर्यायवाची शब्द
3. पर्यायावची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी, एवं शब्दयुग्म शब्द (संकलित)

पूर्ण पर्यायवाची शब्द

शब्द – पर्याय

अग्नि – आग, पावक, अनल, दहन, जातवेद, हुताशन, ज्वाला।

आकाश – व्योम, गगन, नभ, अम्बर, आसमान, अनन्त, अन्तरिक्ष।

आँख – नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, अक्षि।

अनुपम – अपूर्व, अनोखा, अद्‌भुत, अद्वितीय, अतुल।

आनन्द – मोद, प्रमोद, हर्ष, आमोद, सुख, प्रसन्नता, उल्लास।

कमल – सरोज, जलज, पंकज, अरविन्द, शतदल, सरसिज, नलिन, तामरस।

गणेश – एकदन्त, लम्बोदर, गजानन, गणपति, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन।

जल – नीर, सलिल, पानी, अम्बु, वारि।

पृथ्वी – धरा, भू, भूमि, धरती, वसुधा, जगती, धरित्री।

प्रकाश – प्रभा, ज्योति, चमक, आभा, आलोक, रोशनी, उजियारा।

महादेव – शिव, पशुपति, शंकर, चन्द्रशेखर, नीलकण्ठ, त्रिलोचन, महेश्वर।

पक्षी – विहंग, खग, परिन्दा, पखेरू, शकुन्त।

दास – अनुचर, चाकर, सेवक, नौकर, भृत्य, परिचारक।

पुष्प – फूल, प्रसून, कुसुम, सुमन।

सरस्वती – ब्राह्मी, भारती, वाक्, गिरा, शारदा, वागीशा, वीणापाणि।

सूर्य – दिनकर, भास्कर, अंशुमाली, रवि, सविता, दिवाकर, मार्त्तण्ड, आदित्य, तरणि।

हनुमान – पवनसुत, कपीश्वर, महावीर, मारुति, अंजनीपुत्र, रामदूत।

सिन्धु – जलधि, वारधि सागर, समुद्र, पारावार, वारीश पयोधि।

अपूर्ण पर्यायवाची शब्द

जिन शब्दों में अर्थ, प्रयोग, स्त्रोत और भाव की दृष्टि से अन्तर दिखाई देता है उन्हें अपूर्ण पर्यायवाची शब्द कहते हैं ।

अंहकार – झूठे सम्मान का बोध, गर्व अभिमान, घमण्ड।

दर्प – नियम के विरुद्ध काम करने पर भी गर्व करना।

अनभिज्ञ – जिसे किसी बात की जानकारी न हो।

अस्त्र – वह हथियार जो फेंककर चलाया जाता है। जैसे – तीर, बर्छी, भाला।

शस्त्र – वह हथियार जो हाथ में पकड़कर चलाया जाता है जैसे – तलवार, बन्दूक।

आवश्यक – जरूरी।

अनिवार्य – जिसके बिना कार्य संभव न हो।

अवस्था – जीवन के कुछ बीते हुए समय, काल या स्थिति को अवस्था कहते हों।

आयु – सम्पूर्ण जीवन की अवधि को आयु कहते हैं। जैसे – आप दीर्घायु हों।

पर्यटन – किसी विशेष उद्देश्य से की गयी यात्रा।

भ्रमण – दर्शनीय स्थानों की यात्रा को भ्रमण कहा जाता है।

आधि – मानसिक कष्ट को आधि कहते हैं।

व्याधि – शारीरिक कष्ट व्याधि कहे जाते हैं।

अपराध – कानून का उल्लंघन अपराध कहा जाता है।

पाप – नैतिक अथवा धर्म के विरुद्ध आचरण करना।

विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द

विलोम से आशय है विपरीत अर्थ, उल्टा अर्थ । यह अर्थ गुण, स्वभाव, स्थिति इत्यादि के वाचक अर्थों को प्रकट करता है। विलोम अर्थ में विरोध विद्यमान रहता है। इसलिए इन्हें विरुद्धार्थी या विपरीतार्थक शब्द भी कहते हैं।

विलोम शब्द के उदाहरण –

मूल शब्द	विलोम शब्द	मूल शब्द	विलोम शब्द
अथ	इति	अनुराग	विराग
आदि	अन्त	आशा	निराशा
पाप	पुण्य	उदय	अस्त
आदर	निरादर, अनादर	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपकार	अपकार	निन्दा	स्तुति
पक्ष	विपक्ष	घात	प्रतिघात
स्वाधीन	पराधीन	सुलभ	दुर्लभ

नूतन	पुरातन	सुमति	कुमति
हर्ष	विषाद	नैतिक	अनैतिक
उचित	अनुचित	अमृत	विष
मुख्य	गौण	मंगल	अमंगल
स्वामी	सेवक	विरह	मिलन
राग	द्वेष	विजय	पराजय

एकार्थी शब्द

हिन्दी भाषा में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण शब्द हैं जो भाव और अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हैं। ऐसे शब्दों को निश्चित अर्थबोधक शब्द या एकार्थी शब्द कहा जाता है। कुछ उदाहरण –

आश्रय	–	ऋषियों, तपस्वियों और अध्ययन का स्थान
अलकापुरी	–	कुबेर की नगरी
ऐरावत	–	इंद्र का हाथी
उर्वशी	–	एक अप्सरा का नाम
पांचजन्य	–	श्रीकृष्ण के शंख का नाम
गाण्डीव	–	अर्जुन के धनुष का नाम
कोकनाद	–	लाल कमल
चेतक	–	महाराणा प्रताप का घोड़ा
कलभ	–	हाथी का बच्चा
बछड़ा	–	गाय का बच्चा
वज्र	–	इंद्र के अस्त्र का नाम
मकरध्वज	–	श्रीकृष्ण के रथ का ध्वज
नृसिंह	–	नरहरि
उच्चैः श्रवा	–	सूर्य का घोड़ा
कपिध्वज	–	अर्जुन के रथ का ध्वजा

अनेकार्थी शब्द

हिन्दी भाषा में कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिनके अनेक अर्थ होते हैं, जो भिन्न–भिन्न प्रसंगों के अनुसार गृहीत हैं।

अनेकार्थी शब्दों के उदाहरण –

शब्द	**अर्थ**
अम्बर	आकाश, वस्त्र
अक्षर	'अ' आदि वर्णाक्षर, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि
उत्तर	हल, एक दिशा, जवाब, बाद में,
कृष्ण	काला, भगवान कृष्ण, वेदव्यास
घन	बादल, अधिक, जिसमें लम्बाई–चौड़ाई बराबर हो
अशोक	शोक सहित, प्रसिद्ध राजा, एक वृक्ष
काल	समय, मृत्यु, यम, शिव
गुरु	आचार्य, बड़ा, भारी, दीर्घ दो मात्राओं का अक्षर, बृहस्पति
सूर्य	दिनकर, भास्कर, अंशुमाली, रवि मार्तण्ड, सविता, आदित्य, दिवाकर
पक्षी	विहंग, खग, परिन्दा, पखेरू, शकुन्त
पानी	सम्मान, जल, चमक, शस्त्र की धार, मर्यादा
सरस्वती	विद्या की देवी, एक नदी का नाम, वाणी
हरि	इंद्र, विष्णु, सिंह, वानर, सूर्य, साँप, कोयल
मधु	अमि, शहद, शराब या मदिरा, बसंत ऋतु
हँस	प्राण, पक्षी
कनक	सोना, धतूरा
महावीर	जैन धर्म के प्रचारक, हनुमान, बहुत बलशाली
सैंधव	घोड़ा, नमक
सारंग	मोर, मेघ, पानी, धनुष, कमल, दीपक, शोभा, शंख
नीलकण्ठ	मोर, शिखी, शंकर

वरुण	एक वैदिक देवता, जल, पानी, सौर जगत का सबसे दूरस्थ ग्रह जिसका पता सन् 1884 को लगा।
अर्क	सूर्य, काढ़ा, आक का पौधा
अक्षि	आँख, ज्ञान, धुरी, आत्मा, कील, मण्डल

युग्म शब्द (समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द)

हिन्दी में ऐसे अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिनका उच्चारण मात्रा या वर्ण के कारण समान प्रतीत होता है, किन्तु अर्थ भिन्न या अलग होता है। ऐसे शब्दों को युग्म शब्द या समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं –

उदाहरण –

अंस	कन्धा	अंश	भाग, हिस्सा
अन्न	अनाज	अन्य	दूसरा
अणु	कण	अनु	पीछे, एक उपसर्ग
अनिल	हवा	अनल	आग
अभिराम	सुंदर	अविराम	लगातार, निरन्तर
अवलम्ब	सहारा	अविलम्ब	शीघ्र
अभिज्ञ	जानने वाला	अनभिज्ञ	अनजान
अलि	भ्रमर	आली	सखी
अवधि	समय, काल	अवधी	अवध प्रान्त की भाषा
आदि	आरम्भ	आदी	अभ्यस्त, अदरक
आरति	दुःख, कष्ट	आरती	धूप, दीप से पूजन
कुल	वंश	कूल	किनारा
कृपण	कंजूस	कृपाण	कटार
ग्रह	सूर्य, चंद्र, ग्रह	गृह	घर
गुड़	मीठी वस्तु	गूढ़	गंभीर
चतुष्पद	चौपाया	चतुस्पथ	चौराहा

तुरंग	घोड़ा	तरंग	लहर
दिन	दिवस	दीन	गरीब
निश्छल	छलरहित	निश्चल	अटल, स्थिर
नीरज	कमल	नीरद	बादल
परिणाम	फल, नतीजा	परिणाम	मात्रा
सर	तालाब	शर	बाण, तीर, शरीर
शुल्क	फीस	शुक्ल	स्वच्छ, उज्जवल
हरि	विष्णु	हरी	हरा रंग

उद्देश्य :–

1. छात्र व्याकरण तथा हिन्दी की शब्द संपदा के विषय में जान सकेंगे।
2. छात्र शब्द, अर्थ तथा शब्दकोष का ज्ञान ले पायेंगे।
3. छात्र शब्द के रूपों के विषय में जान सकेंगे।
4. छात्र विलोम, पर्यायवाची शब्दों को जान सकेंगे।
5. छात्रों की भाषा समृद्ध हो सकेगी।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत संकलन से छात्रो की शब्द संपदा समृद्ध होगी, पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थक, एकार्थक एवं शब्दयुग्म शब्दों के ज्ञान एवं उपयोग द्वारा उन्हें अपनी भाषा सामर्थ्य बढ़ाने में मदद मिलेगी।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ

1. पर्यायवाची शब्द का तात्पर्य है

   अ. समानार्थी ब. विरूद्धार्थी स. एकार्थी द. अनेकार्थी
2. विलोम का तात्पर्य

   अ. समान ब. अनेकार्थक स. उल्टा लिखा हुआ द. उल्टे अर्थवाला
3. युग्म शब्द अर्थात्

   अ. उच्चारण असमान ब. वर्ण समान स. अर्थ भिन्न द. उल्टे अर्थवाला
4. एकार्थी शब्द का अर्थ है

अ. द्विअर्थी ब. भिन्नअर्थ स. भावार्थ पूर्ण द. उल्टे अर्थ वाले

5. पर्यायवाची शब्द के प्रकार :–

अ. 2 ब. 4 स. 8 द. 6

6. सूर्य का पर्यायवाची शब्द

अ. निशीथ ब. दिनकर स. सारंग द. अनल

7. 'अग्नि' का पर्याय आग कौनसा पर्यायवाची शब्द है

अ.पूर्ण ब. अपूर्ण स. सम्पूर्ण द. अर्थपूर्ण

8. ऐसा शब्द जिसका प्रसंग के अनुसार अनेक अर्थ होते है

अ. पर्यायवाची ब. एकार्थी स. अनेकार्थी द. युग्म

9. 'सारंग' शब्द है :–

अ. एकार्थी ब. अनेकार्थी स. विरूद्धार्थी द. समानार्थी

10. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द युग्म शब्द नही है

अ. पाप–पुण्य ब. सुख–दुःख स. मान–अपमान द. चिर–चिर

उत्तर :– 1 अ, 2 द, 3 स, 4 स, 5 अ, 6 ब, 7 अ, 8 द, 9 अ, 10 द

प्रश्न :– जोड़ी बनाये :–

1.	स्वाधीन	इंद्र का हाथी
2.	चेतक	विपक्ष
3.	पाँचजन्य	दर्शनीय स्थलो की यात्रा
4.	पक्ष	श्री कृष्ण का शंख
5	भ्रमण	पराधीन
6	ऐरावत	महाराणा प्रताप का घोड़ा

उत्तर :– 1–5, 2–6, 3–4, 4–2, 5–3, 6–1

रिक्त स्थानो की पूर्ति –

1. यदि बाढ़ पीड़ितों को ..... उपयुक्त ..... न दिया गया, तो स्थिति बेकाबू हो जायेगी। (अवलम्ब, अविलंब)
2. मुझे तुमसे यह ..... नही थी कि तुम घर आए अतिथि की इस प्रकार ..... करोगे । (उपेक्षा,अपेक्षा)
3. उसे तो बस नए नए ..... खरीदने का ..... हैं। (व्यसन, वसन)

4. उसका ..... तीन ..... रूपये एकत्रित करना हैं। (लक्ष्य, लक्ष)
5. किसान ने अपने खेत की रक्षा के लिए ..... तो लगाई थी पर वह ..... में बह गई। (बाड़, बाढ़)
6. कुशल नाविक जल के ..... की ..... नही करते और अपने मंजिल तक पहुँच ही जाते हैं। (प्रवाह, परवाह)
7. उचित .....में औषधि खाओगे तो ..... भी अच्छा निकलेगा। (परिमाण, परिणाम)

उत्तर :– 1.(2,1), 2. (2,1), 3. (2,1), 4. (1,2) 5. (1,2), 6. (1,2), 7. (1,2)

रिक्त स्थानो में कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त पयार्यवाची भरिए –

1. दुःशासन में द्रोपदी के ..... हरण का प्रयास किया। (वस्त्र)
2. मुख्य अतिथि ने अपने ..... कमलों से पुरस्कार वितरित किए। (हाथ)
3. बसंत पंचमी को ..... की पूजा की जाती हैं। (वाणी)
4. संसद में ..... दल के नेता ने भी प्रस्ताव का समर्थन किया। (रिपु)

उत्तर :– 1. चीर, 2. कर, 3. सरस्वती, 4. शत्रु/विरोधी।

उचित विलोम लिखिए :–

1. गरिमा शब्द का विलोम है :
   (अ) शर्मनाक (ब) शोक (स) महिमा (द) लघिमा
2. श्लाघा का विलोम है :
   (अ) निंदा (ख) प्रशंसा (ग) चिंता (घ) क्रोध
3. संकीर्ण का विलोम हैं :
   (अ) विशाल (ब) विस्तीर्ण (ग) गंभीर (घ) विस्तृत
4. प्रलय का विलोम हैं :
   (अ) सृष्टि (ब) विभिषीका (ग) विपदा (द) संरचना

उत्तर :– (1) द, (2) अ, (3) ब, (4) अ

लघुउत्तरीय प्रश्न /एक शब्द प्रश्न उत्तर

प्र.1 शब्द को परिभाषित करें।

उ0 एक या एक से अधिक अक्षरो के सार्थक योग को शब्द कहते हैं।

प्र.2 शब्द के कितने प्रकार होते हैं।

उ0 शब्द के दो प्रकार है – 1. सार्थक और निरर्थक ।

प्र.3 निरर्थक शब्द कौन से है।

उ0 जिन शब्दो का कोई अर्थ नही होता जैसे चाय–वाय, दुकान–बुकान, रोटी–बोटी।

प्र.4 व्याकरण के द्वारा कौन से शब्दो का अध्ययन किया जाता है।

उ0 व्याकरण के द्वारा सार्थक शब्दो का अध्ययन किया जाता है।

प्र.5 सार्थक या अर्थ की दृष्टि से शब्दों के कौन से रूप है।

उ0 अर्थ की दृष्टि से शब्द के निम्न रूप है जैसे– पर्यायवाची शब्द, युग्म शब्द, एकार्थक शब्द, विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द।

प्र.6 पर्यायवाची शब्द की परिभाषा तथा प्रकार लिखे।

उ0 जिन शब्दो के अर्थ में समानता होती है, वे पर्यायवाची शब्द होते है। वे दो प्रकार के हैं पूर्ण पर्यायवाची शब्द तथा अपूर्ण पर्यायवाची शब्द ।

प्र.7 पूर्ण व अपूर्ण पर्यायवाची शब्दो को परिभाषित करें।

उ0 पूर्ण वे जिसमें शब्द के पर्याय हो जैसे अग्नि – आग, पावक, अनल।

अपूर्ण वे जिन शब्दों में अर्थ, प्रयोग, स्त्रोत और भाव की दृष्टि से अंतर होता है।

जैसे – अहंकार ,झूठे सम्मान का बोध, गर्व, अभिमान, घमण्ड।

प्र.8 एकार्थी शब्द क्या है ?

उ0 ऐसे शब्द जो भाव और अर्थ की दृष्टि से पूर्ण है जैसे –

आश्रम – ऋषियो, तपस्वियों के अध्ययन का स्थान

चेतक – महाराणा प्रताप का घोड़ा

प्र.9 अनेकार्थी शब्द की परिभाषा लिखे –

उ0 जिन शब्दो के अनेक अर्थ होते है एवं जो प्रसंगो के अनुसार उपयोग में लाये जाते है

अम्बर – आकाश, वस्त्र

प्र.10 युग्म शब्द की परिभाषा क्या है ?

उ0 ऐसे शब्द जिनका उच्चारण मात्रा व वर्ण के कारण समान प्रतीत होता है किंतु उसका अर्थ भिन्न होता है जैसे अंस–कंधा, अंश–भाग, हिस्सा

इकाई–3 : हिन्दी भाषा

1 भगवान बुद्ध (निबंध) – स्वामी विवेकानंद

2. कछुआ धर्म – चंद्रधर शर्मा गुलेरी

3. नहीं रूकती है नदी – हीरालाल बाछोतिया

4. पल्लवन

भगवान बुद्ध

निबंध

स्वामी विवेकानंद

लेखक परिचय

जन्म : 12 जनवरी 1863 (कलकत्ता) मृत्यु : 04 जुलाई 1902 (बेलूर मठ)

स्वामी विवेकानंद वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरू थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का वेदान्त अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जो आज भी अपना कार्य कर रहा हैं।

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारतीय ही नही बल्कि विश्व के चिन्तकों में एक अग्रणी हस्ताक्षर हैं। समाज केन्द्रित चिन्तन के आधार पर उन्होनें समाज के हितार्थ समाधान आधारित लेखों एवं भाषणों को मूर्त्त रूप दिया। मानव के सर्वागीण एंव उच्चतम् विकास हेतु उन्होनें जन सेवा का संदेश सर्वत्र प्रसारित किया। भारतीय संस्कृति का परचम विश्व पटल पर लहराकर उन्होनें भारत की छवि को गरिमामय रूप प्रदान करने में अपना अमूल्य, अनुकरणीय एवं अतुलनीय योगदान दिया।

गुरू/शिक्षक : श्री रामकृष्ण परमहंस

दर्शन : आधुनिक वेदांत, राज योग

कार्य : राज योग, कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, माई मास्टर

कथन : उठो, जागो और तब तक नही रूको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।

मेरे अमेरिकी बहनों एवं भाइयों

मूल पाठ – भगवान बुद्ध(निबंध)

(अमेरिका के डेट्रॉएट नगर में दिया हुआ भाषण)

–स्वामी विवेकान्द

'भगवान बंद्ध' स्वामी विवेकानन्द द्वारा अमेरिका के डेट्रॉएट नगर में दिया गया व्याख्यान है। इस व्याख्यान में भगवान बुद्ध की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित करने के साथ–साथ बौद्ध–धर्म की उपलब्धियों का भी आकलन हुआ है। स्वामी विवेकानन्द वेदान्तदर्शन के व्याख्याता थे। बौद्ध–दर्शन की नास्तिकता से उनकी असहमति थी तथापि उन्होंने बौद्ध–धर्म की करुणाजनित अहिंसा और उदारता की सराहना करते हुए उसकी श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। अतः वैदिक–बौद्ध दर्शन की यह समन्वयकारी प्रस्तुति इस पाठ की अद्‌भुत उपलब्धि है।

हर एक धर्म में हम किसी एक प्रकार की साधना को चरम सीमा पर पहुँची हुई पाते हैं। बौद्ध धर्म में निष्काम कर्म का भाव अत्यन्त विकसित है। तुम लोग बौद्ध धर्म तथा ब्राह्माण धर्म को समझने में भूल न करो। बौद्ध धर्म हमारे सम्प्रदायों में से एक है। भारतीय वर्ण–व्यवस्था, कठिन कर्मकाण्ड एवं दार्शनिक वाद–विवादों से ऊबकर गौतम नामक एक महापुरुष ने बौद्ध धर्म की स्थापना की। कुछ लोग कहते हैं कि हमारा एक विशेष कुल में जन्म हुआ है और इसलिए हम उन लोगों से श्रेष्ठ हैं, जिनका जन्म ऐसे वंश में नही हुआ। भगवान बुद्ध का इस सिद्धान्त में कोई विश्वास न था– वे इस प्रकार के जाति–भेद के विरोधी थे। और पुरोहित लोग धर्म के नाम पर जो कपटाचरण द्वारा स्वार्थ–सिद्धि करते थे, इसके भी वे घोर विरोधी थे। इसलिए उन्होंने एक ऐसे धर्म का प्रचार किया, जिसमें कामनाओं तथा वासनाओं के लिए स्थान न था। वे दर्शन तथा ईश्वर के सम्बंध में सम्पूर्ण अज्ञेयवादी थे।

उनसे कई बार ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे गये, पर उन्होंने सदैव यही उत्तर दिया, ''मैं नहीं जानता'' उनसे पूछा गया कि मनुष्य का प्रकृत कर्तव्य क्या है। उन्होंने कहा, ''शुभ चरित्र बनो और शुभ कर्म करो। एक बार पाँच ब्राह्मणों ने आकर उनसे विनती की, ''भगवन्, हमारे वाद–विवाद का न्याय कीजिए।'' उनमें से एक ने कहा, '' भगवन् मेरे शास्त्रों में ईश्वर का यह स्वरूप बतलाया गया है और उसकी प्राप्ति के लिए

यह मार्ग दर्शाया गया है।'' दूसरे ब्राह्मण ने कहा, ''नही, यह सब मिथ्या है, क्योंकि मेरे शास्त्र में इसके विपरीत लिखा है और ईश्वर–प्राप्ति का अन्य मार्ग बतलाया गया है।'' इस प्रकार दूसरों ने भी शास्त्रों की दुहाई देकर ईश्वर के स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के सम्बन्ध में अपने–अपने मत प्रकट किये। बुद्धदेव यह विवाद शान्तिपूर्वक सुनकर उनसे क्रमशः पूछने लगे, ''क्या किसी के शास्त्र में यह भी कथन है कि ईश्वर कभी क्रोध करता है ? किसी की हानि करता है या अशुद्ध है?'' उन सब ने कहा, ''नहीं भगवन्, हमारे सभी शास्त्र यही कहते हैं कि ईश्वर शुद्ध, विकाररहित और कल्याणकर है।'' तब भगवान् बुद्ध बोले, ''मित्रों, तब तुम पहले शुद्ध और सदाचारी बनने की चेष्टा क्यों नहीं करते, जिससे तुम्हें ईश्वर का ज्ञान हो सके।''

अवश्य ही मैं बुद्ध के समस्त दर्शन का अनुमोदन नहीं करता हूँ। मुझे अपने लिए यथेष्ट दार्शनिक विचार की आवश्यकता प्रतीत होती है। मैं पूर्णतया बौद्ध दर्शन से सहमत नहीं हूँ, किन्तु यह मेरे उस महान् आत्मा के चरित्र एवं भावसौन्दर्य के दर्शन में बाधक नहीं है। बुद्ध ही एक व्यक्ति थे, जो पूर्णतया तथा यथार्थ में निष्काम कहे जा सकते हैं। ऐसे अन्य कई महापुरूष थे, जो अपने को ईश्वर का अवतार कहते थे और विश्वास दिलाते थे कि जो उनमें श्रद्धा रखेंगे, वे स्वर्ग प्राप्त कर सकेंगे। पर बुद्ध के अधरों पर अन्तिम क्षण तक ये ही शब्द थे, 'अपनी उन्नति अपने ही प्रयत्न से होगी। अन्य कोई इसमें तुम्हारा सहायक नहीं हो सकता। स्वयं अपनी मुक्ति प्राप्त करों।' अपने सम्बन्ध में भगवान् बुद्ध कहा करते थे, 'बुद्ध शब्द का अर्थ है – आकाश के समान अनन्त ज्ञानसम्पन्न, मुझ गौतम को यह अवस्था प्राप्त हो गई है। तुम भी यदि प्राणपण से प्रयत्न करो, तो उस स्थिति को प्राप्त हो सकते हो।' बुद्ध ने अपनी सब कामनाओं पर विजय पा ली थी। उन्हें स्वर्ग जाने की कोई लालसा न थी और न ऐश्वर्य की ही कोई कामना थी। अपने राज–पाट और सब प्रकार के सुखों को तिलांजलि दे, इस राजकुमार ने अपना सिन्धु–सा विशाल हृदय लेकर नर–नारी तथा जीव–जन्तुओं के कल्याण के हेतु, आर्यावर्त की वीथि में भ्रमण कर भिक्षावृत्ति से जीवन–निर्वाह करते हुए अपने उपदेशों का प्रचार किया। जगत् में वे ही एकमात्र ऐसे हैं, जो यज्ञों में पशुबलि–निवारण के हेतु, किसी प्राणी के जीवन की रक्षा के लिए अपना जीवन भी निछावर करने को तत्पर रहते थे। एक बार उन्होंने एक राजा से कहा, ''यदि किसी निरीह पशु के होम करने से तुम्हें स्वर्ग–प्राप्ति हो सकती है, तो मनुष्य के होम से और किसी उच्च फल की प्राप्ति होगी । राजन्, उस पशु के पाश काटकर मेरी आहुति दे

दो– शायद तुम्हारा अधिक कल्याण हो सके।'' राजा स्तब्ध हो गया ! इस प्रकार हम देखते हैं कि भगवान् पूर्ण रूप से निष्काम थे। वे कर्मयोग के ज्वलन्त आदर्शस्वरूप थे और जिस उच्चावस्था पर वे पहुँच गए थे, उससे प्रतीत होता है कि कर्म–शक्ति द्वारा हम भी उच्चतम आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

ईश्वर में विश्वास रखने से अनेक व्यक्तियों का मार्ग सुगम हो जाता है, किन्तु बुद्ध का चरित्र बताता है कि एक ऐसा व्यक्ति भी, जो नास्तिक है, जिसका किसी दर्शन में विश्वास नहीं, जो न किसी सम्प्रदाय को मानता है और न किसी मन्दिर–मस्जिद में ही जाता है, जो घोर जड़वादी है, परमोच्च अवस्था प्राप्त कर सकता है। बुद्ध के मतामत या कार्यकलापों का मूल्यांकन करने का हमें कोई अधिकार नहीं । उनके विशाल हृदय का सहस्रांश पाकर भी मैं स्वयं को धन्य मानता। बुद्ध की आस्तिकता या नास्तिकता से मुझे कोई मतलब नहीं। उन्हें भी वह पूर्णावस्था प्राप्त हो गई थी, जो अन्य जन भक्ति, ज्ञान या योग के मार्ग से प्राप्त करते हैं। केवल इसमें–उसमें विश्वास करने से ही पूर्णता प्राप्त नहीं होती, जल्पना से कोई अर्थ–सिद्धि नहीं होती । यह तो शुक–सारिका भी कर लेते हैं। केवल निष्काम कर्म ही मनुष्य को पूर्णत्व तक पहुँचा सकता है।

उद्देश्य :–

1. छात्र स्वामी विवेकानंद के विषय में जान सकेंगे
2. छात्र बौद्ध धर्म की विशेषताओं को जान सकेंगे
3. छात्र करूणा, अंहिसा, निष्काम कर्म को जान सकेंगे
4. छात्र बौद्ध धर्म की उपलब्धियों को जान सकेंगे
5. छात्र पशु बलि जैसी समाज की बुराई का ज्ञान एवं उसे दूर करने के प्रति कृत संकल्पित हो सकेंगे।

शब्दार्थ

शब्दार्थ	**अर्थ**	**Meaning**
निष्कामकर्म	बिना हेतु के किया कर्म	Selfless action
वीथि	गली	Corridore

विशेष प्रयोग

विकार रहित	:–	बिना किसी गलती/अशुद्धि के
कल्याणकर	:–	जिसमें भलाई हो
अनन्त ज्ञान संपन्न	:–	न समाप्त होने वाला ज्ञान
पशुबलि–निवारण	:–	पशु को बलि न देने वाला

केन्द्रीय भाव

स्वामी विवेकानंद के द्वारा डेट्राइट (अमेरिका)में दिये गये इस भाषण के अंश में भगवान बुद्ध तथा बौद्ध धर्म की विशेषताओं और चरित्र को केन्द्र में रखा गया है।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''भगवान बुद्ध'' पर स्वामीजी ने ..... व्याख्यान दिया।

   अ. शिकागो ब. केलिफोर्निया स. डेट्राएट द. सान फ्रांसिसको

2. स्वामी विवेकानंद किस दर्शन के व्याख्याता थे।

   अ. सांख्य दर्शन ब. वेदान्त दर्शन स. हिन्दू दर्शन द. जैन दर्शन

3. बौद्ध धर्म में ..... का भाव विकसित है।

   अ. सेवा ब. निष्काम कर्म स. आदर द. पुण्य कर्म

4. भगवान बुद्ध जातिभेद के ..... थे।

   अ. समर्थक ब. उदभावक स. प्रचारक द. विरोधी

5. 'मैं बुद्ध के समस्त दर्शन का अनुमोदन नही करता हूँ'..... का कथन है

   अ. विवेकानंद ब. कबीर स. शंकराचार्य द. रामानंद

6. अपनी उन्नति अपने ही ..... से होगी

अ. भाग्य ब. प्रयत्न स. धन द. परिवार

7. ..... से कोई अर्थ–सिद्धि नही होती

अ. कल्पना ब. अल्पना स. जल्पना द. स्वप्न

8. केवल निष्काम कर्म ही मनुष्य को ..... तक पंहुचा सकता है –

अ. सम्पन्नता ब. सफलता स. बुद्धत्व द. पूर्णत्व

9. ब्राह्मणों ने भगवान बुद्ध से क्या विनती की ?

अ. शास्त्रार्थ ब. प्रश्नोत्तरी स. वाद–विवाद का न्याय द. शास्त्रों को सर्वोपरि सिद्ध करना

10. पुरोहित धर्म के नाम पर लोग ..... बनाते है

अ. मूर्ख ब. ज्ञानी स. धार्मिक द. नैतिक

उत्तर :– 1 स, 2 ब, 3 ब, 4 द, 5 अ, 6 ब, 7 स, 8 द, 9 स, 10 अ

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

1. मनुष्य का ..... क्या है।

2. ईश्वर ..... है।

3. बुद्ध शब्द का अर्थ ..... है।

उत्तर :– 1 प्रकृत कर्त्तव्य 2 शुद्ध विकार रहित और कल्याणकर 3. आकाश के समान अनंत ज्ञान संपन्न

लघुउत्तरीय प्रश्न / एक शब्द प्रश्न – उत्तर

प्र.1 अमेरिका के डैट्राएट नगर में स्वामी विवेकानंद ने किस विषय पर भाषण दिया ?

उ0 स्वामी विवेकानंद ने भगवान बुद्ध पर अमेरिका के डेट्राएट नगर में भाषण दिया।

प्र.2 स्वामीजी किस दर्शन के व्याख्याता थे।

उ0 स्वामीजी वेदान्तदर्शन के व्याख्याता थें

प्र.3 स्वामी ने कौन से गुणों के कारण बुद्ध धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया ?

उ0 स्वामीजी ने बौद्ध धर्म की करूणा जनित अहिंसा और उदारता के कारण उसकी श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया।

प्र.4 बुद्ध धर्म की स्थापना क्यों हुई ?

उ0 भारतीय वर्ण व्यवस्था की कठिन कर्मकाण्ड व दार्शनिक वाद–विवादो से उबकर गौतम बुद्ध ने इस धर्म की स्थापना की।

प्र.5 भगवान बुद्ध ईश्वर के विषय में पूछे गये प्रश्न का उत्तर क्या देते थे।

उ0 इस विषय में वे कहते थे 'मैं नहीं जानता' ।

प्र.6 भगवान बुद्ध के अनुसार मनुष्य का प्रकृत कर्त्तव्य क्या है ?

उ0 वे इस विषय में कहते थे ''शुभ चरित्र बनो और शुभ कर्म करो''।

प्र.7 स्वामी विवेकानंद के अनुसार भगवान बुद्ध कैसे व्यक्ति थे ?

उ0 स्वामीजी के अनुसार बुद्ध ही एक व्यक्ति थे जो पूर्णतया यथार्थ में निष्काम कहे जा सकते थे।

प्र.8 बुद्ध के अधरो पर अंतिम समय तक क्या शब्द थे ?

उ0 वे अपने अंतिम समय तक यही कहते रहे 'अप्पदीपो भव' अर्थात् अपनी उन्नति अपने ही प्रयत्नो से करो। कोई तुम्हारी सहायता नही करने आयेगा।

प्र.9 बुद्ध शब्द का क्या अर्थ है ?

उ0 बुद्ध अर्थात् आकाश के समान अनन्त ज्ञान संपन्न।

प्र.10 मनुष्य को पूर्णता प्राप्ति का कौन सा उपाय बुद्ध ने बताया ।

उ0 बुद्ध के अनुसार मनुष्य को निष्काम कर्म के द्वारा ही पूर्णता मिल सकती है।

सारांश

स्वामी विवेकानन्द जी सुप्रसिद्ध विश्वविख्यात भारतीय चिन्तक हैं। वे आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि हैं। प्रस्तुत निबंध, स्वामी विवेकानंद द्वारा अमेरिका के डेट्रॉयट नगर में दिए गये भाषण पर आधारित है। स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारतीय चिन्तकों में अग्रणी स्थान रखते है। उनके द्वारा दिए गये भाषण व लेख आधुनिक भारत की समस्याओं के

सार्थक समाधान प्रस्तुत करने के कारण महत्वपूर्ण हैं। इसमें जनकल्याण एवं मानव के सर्वोत्तम विकास के सूत्र सम्मिलित हैं।

इस भाषण (व्याख्यान) में स्वामी विवेकानंद ने भगवान बुद्ध की चारित्रिक विशेषताओं के साथ–साथ बौद्ध धर्म की उपलब्धियों को भी बताया है। बौद्ध धर्म, चूँकि नास्तिकता में विश्वास रखता है, अतः इस बिन्दु पर स्वामी विवेकानंद की उससे असहमति थी परन्तु बौद्ध धर्म में निहित करूणा से उत्पन्न अहिंसा एवं उदारता के वे प्रशंसक थे। बौद्ध धर्म मुख्यतः निष्काम कर्म में विश्वास रखता हैं। हिन्दू धर्म में निहित वर्ण व्यवस्था, कठिन कर्मकाण्ड एवं दार्शनिक वाद–विवादों से ऊबकर गौतम नामक महापुरूष ने बौद्ध धर्म की स्थापना की।

वे दर्शन व ईश्वर के सबंध में अज्ञेयवादी थे। वे जाति–भेद के भी विरोधी थे। बुद्ध ही एकमात्र व्यक्ति थे जो पूरी तरह एवं वास्तविक रूप में निष्काम कहे जा सकते है। 'बुद्ध' शब्द का अर्थ – आकाश के समान ज्ञानवान/ज्ञान सम्पन्न। बुद्ध ने अपनी सभी कामनाओं पर विजय प्राप्त कर ली थी, उन्हें न तो स्वर्ग की कामना थी और न ही ऐश्वर्य की। उन्होंने स्वयं की बलि/(पशु बलि) के स्थान पर देने तक का प्रस्ताव दे दिया था जो इस बात का परिचायक है कि वे पूर्ण रूप से निष्काम एवं कर्मयोगी थे। वे इस बात के उदाहरण हैं कि एक नास्तिक व्यक्ति भी पूर्णत्व को प्राप्त कर सकता है। उनके अनुसार अपनी उन्नति अपने ही प्रयत्नों से होगी। मनुष्य का प्रकृत कर्तव्य है : शुभ चरित्र बनो एवं शुभ कार्य करो।

Summary

' Bhagwan Buddh ' is the lecture which was given by Swami Vivekanand at Detroit city of USA. In this lecture, he has Stressed upon the characteristics of Bhagwan Buddh along with his teachings and achievements. Swami Vivekanand was the lecturer of Vedant Philosophy. He was not in favour of Atheistism of Buddhism but was full of praise for nonviolence and generosity of Buddhism as Such. In Buddhism Niskam karma is very much developed .He has focused upon people to first become pure and of good conduct so that they can get the knowledge of God. Ultimatily he has stressed upon Niskam Karma (Selfless deeds) to achieve completeness .

कछुआ–धर्म

–चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

मनुस्मृति में कहा गया है कि जहाँ गुरू की निन्दा या असत्कथा हो रही हो वहाँ पर भले आदमी को चाहिए कि कान बंद कर ले या कहीं उठकर चला जाये। यह हिन्दुओं के या हिन्दुस्तानी सभ्यता के कछुआ–धरम का आदर्श है। ध्यान रहे कि मनु महाराज ने न सुनने जोग गुरू की कलंक–कथा के सुनने के पाप से बचने के दो ही उपाय बताये हैं। या तो कान ढककर बैठ जाओ या दुम दबाकर चल दो। तीसरा उपाय, जो और दशों के सौ में नब्बे आदमियों को ऐसे अवसर पर पहले सूझेगा, वह मनु ने नहीं बताया कि जूता लेकर, या मुक्का तानकर सामने खड़े हो जाओ और निन्दा करने वाले का जबड़ा तोड़ दो या मुँह चिपका दो कि फिर ऐसी हरकत न करे। यह हमारी सभ्यता के भाव के विरूद्ध है। कछुआ ढाल में घुस जाता है, आगे बढ़कर मार नहीं करता। अश्वघोष महाकवि ने बुद्ध के साथ–साथ चले जाते हुए साधु पुरूषों को यह उपमा दी है–

देशादनार्येरभिभूयमानान्महर्षयो धर्ममिवापयान्तम्।

अनार्य लोग देश पर चढ़ाई कर रहे हैं। धर्म भागा जा रहा है। महर्षि भी उसके पीछे–पीछे चले जा रहे हैं। यह कर लेंगे कि दक्षिण के अप्रकाश देश को कोई अति या अगस्तय यज्ञों और वेदों के योग्य बना ले .... तब तक ही जब तक कि दूसरे कोई राक्षस या अनार्य उसे भी रहने के अयोग्य न कर दे .. पर यह नहीं कि डटकर सामने खड़े हो जायें और अनार्यों की बाढ़ को रोकें। पुराने से पुराने आर्यों की अपने भाई असुरों से अनबन हुई। असुर असुरिया में रहना चाहते थे, आर्य सप्तसिन्धुओं को आर्यावर्त बनाना चाहते थे। आगे चल दिये। पीछे वे दबाते आये। विष्णु ने अग्नि और यज्ञपात्र को अरणि रखने के लिए तीन गाड़ियाँ बनाईं उसकी पत्नी ने उसके पहियों की चूल को घी से आँज दिया। ऊखल, मूसल और सोम कुटने के पत्थरों को साथ लिये हुए यह 'कारवाँ' मूजवत हिन्दुकुश के एकमात्र दर्रे खैबर से होकर सिन्धु की घाटी में उतरा। पीछे से श्वान, भ्राज, अम्भारि, वम्भारि, हस्त, सुहस्त, कृशन, शण्ड, मर्क मारते चले आते थे, वज्र की मार से पिछली गाड़ी भी आधी टूट गई, पर तीन लम्बी डग भरने वाले विष्णु ने पीछे फिर कर नहीं देखा और न जमकर मैदान लिया। पितृभूमि अपने भ्रातृव्यों के पास छोड़ आये और यहाँ 'भ्रातृव्यस्य

बधाय', 'सजातना मध्यमेष्ठ्याय' देवताओं की आहुति देने लगे। चलो, जम गये। जहाँ–जहाँ रास्ते में टीके थे वहाँ–वहाँ यूप खड़े हो गये। यहाँ कि सुजला सुफला शस्यश्यामला भूमि में ये बुलबुले चहकने लगीं। पर ईरान के अंगुरों और गुलों का, यानी मजबूत पहाड़ की सोमलता का चस्का पड़ा हुआ था। लेने जाते तो ये पुराने गंधर्व मारने दौड़ते। हाँ, उनमें से कोई–कोई उस समय का चिल–कौआ नकद नारायण लेकर बदले में सोमलता बेचने को राजी हो जाते थे। उस समय का सिक्का गौएँ थीं, जैसे आजकल लखपति, करोड़पति कहलाते हैं वैसे तब 'शतगु', 'सहस्रगु' कहलाते थे। ये दमड़ीमल के पोते करोड़ीचन्द अपने 'नवाग्वा', दशग्वाँ' पितरों से न शरमाते थे, आदर से उन्हें याद करते थे। आजकल के मेवा बेचने वाले पेशावरियों की तरह कोई –कोई सरहदी यहाँ पर भी सोम बेचने चले आते थे। कोई आर्य सीमाप्रान्त पर जाकर भी ले आया करते थे। मोल ठहराने में बड़ी हुज्जत होती थी जैसे कि तरकारियों का भाव करने में कुँजड़िनों में हुआ करती है। ये कहते कि गौ की एक कला में सोम बेच दो। वह कहता कि वाह! सोमराजा का दाम इससे कहीं बढ़कर है। इधर ये गौ के गुण बखानते। जैसे बुढ्डे चौबेजी ने अपने कंधे पर चढ़ी बालवधू के लिए कहा था कि याही में बेटी और याही में बेटा, ऐसे ये भी कहते कि इस गौ से दूध होता है, मक्खन होता हैं, दही होता है, यह होता है, वह होता है। पर काबुली काहे को मानता, उसके पास सोम की मानोपली थी और इन्हें बिना लिये सरता नहीं । अन्त को गौ का एक पाद, आर्ध, होते –होते दाम तै हो जाते । भूरी आँखों वाली एक बरस की बछिया में सोमराज खरीद लिये जाते । गाड़ी में रखकर शान से लाये जाते । जैसे मुसलमानों के यहाँ सूद लेना तो हराम है, पर हिन्दू साहूकारों को सूद देना हराम होने पर भी देना ही पड़ता है वैसे यह तो फतवा दिया गया कि 'पापो हि सोमविक्रयी' पर सोम क्रय करना –उन्हीं गन्धर्वो के हाथ गौ बेचकर सोम ना–पाप नहीं कहला सका। तो भी सोम मिलने में कठिनाई होने लगी। गन्धर्वो ने दाम बढ़ा दिये या सफर दूर का हो गया, या रास्ते में डाके मारने वाले 'वाहीक' आ बसे, कुछ न कुछ हुआ। तब यह तो हो गया कि सोम के बदले में पूतिक लकड़ी का ही रस निचोड़ लिया जाये, पर यह किसी को न सूझी कि सब प्रकार के जलवायु को इस उर्वरा भूमि में कहीं सोम की खेती कर ली जाये जिससे जितना चाहे उतना सोम घर बैठे मिले । उपमन्यु को उसकी माँ ने और अश्वत्थामा को उसके बाप ने जैसे जल में आटा घोलकर दूध कहकर पतिया लिया था, वैसे पूतिक की सीखों में देवता पतियाये जाने लगे।

अच्छा, अब उसी पंचनद में वाहीक आकर बसे। अश्वघोष की पड़कती उपमा के अनुसार धर्म भागा और दण्ड–कमंडल लेकर ऋषि भी भागे। अब ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षिदेश और आर्यावर्त की महिमा हो गई और वह पुराना देश– न तत्र दिवसं यसेत् ! युगन्धरे पयः पीत्वा कथं स्वर्ग गमिष्यति !!!

बहुत वर्ष पीछे की बात है। समुद्र पार के देशों में और धर्म पक्के हो चले। वे लूटते–मारते तो सही, बेधर्म भी कर देते। बस, समुद्रयात्रा बंद ! कहाँ तो राम के बनाये सेतु का दर्शन करके ब्रह्महत्या मिटती थी और कहाँ नाव में जाने वाले द्विज का प्रायश्चित कराकर भी संग्रह बन्द। वही कछुआ धर्म ! ढाल के अन्दर बैठे रहो।

पुर्तगाली यहाँ व्यापार करने आये। अपना धर्म फैलाने की भी सूझी।

'विपृतजघनां को विहातुं समर्थः ?' कुएँ पर सैकड़ों नर–नारी पानी भर रहे और नहा रहे थे। एक पादरी ने कह दिया कि मैंने इसमें तुम्हारा अभक्ष्य डाल दिया है। फिर क्या था ? कछुए की ढाल बल उलट दिया गया। अब वह चल नहीं सकता। किसी ने यह नहीं सोचा कि कुल्ले कर लें, घड़ें फोड़ दें या कै ही कर डालें। गाँव के गाँव ईसाई हो गये और दूर–दूर के गाँवों के कछुओं को यह खबर लगी तो बम्बई जाने में भी प्रायश्चित कर दिया गया।

हिंदू से कह दीजिए कि विलायती खाँड खाने में अधर्म है। उसमें अभक्ष्य चीजें पड़ती हैं। चाहे आप वस्तुगति से कहें, चाहे राजनैतिक चालबाजी से कहें, चाहें अपने देश की आर्थिक अवस्था सुधारने के लिए उसकी सहानुभूति उपजाने को कहें। उसका उत्तर यह नहीं होगा कि राजनेतिक दशा सुधरनी चाहिए। उसका उत्तर यह नहीं होगा कि गन्ने की खेती बढ़े। उसका केवल एक ही कछुआ उत्तर होगा–वह खांड खाना छोड़ देगा, बनी–बनाई मिठाई गौओं को डाल देगा या बोरियाँ गंगाजी में बहा देगा। कुछ दिन पीछे कहिए कि देशी खाँड के बेचने वाले भी सफेद बूरा बनाने के लिए वही उपाय करते हैं। यह मैली खाँड खाने लगेगा। कुछ दिन ठहरकर कहिए कि सस्ती जावा या मोरस की खाँड मैली करके बिक रही है। वह गुड़ पर उतर आवेगा। फिर कहिए कि गुड़ के शीरे में भी सस्ती मोरिस की मैल का मेल है। वह गुड़ छोड़कर पितरों की तरह शहद (मधु) खाने लगेगा, या मीठा ही खाना छोड़ देगा। वह सिर निकालकर यह न देखेगा कि सात सेर की

खाँड छोड़कर डेढ़ सेर की कब तक खाई जाएगी, यह न सोचेगा कि बिना मीठे कब तक रहा जाएगा। यह नहीं देखेगा कि उसकी सी गति वाले श्रबत न पीने वालों की संख्या घटती–घटती दहाइयों और इकाइयों पर आ जा रही है, वह यह नहीं विचारेगा कि बन्नू से कलकत्ते तक डाक–गाड़ी में यात्रा करने वाला जून के महीने में झुलसते हुए कंठ को बरफ ने ठंडा बिना किये नहीं रह सकता । उसका कछुआपन कछुआ–भगवान् की तरह की पीठ पर मंदराचल की मथनी चलाकर समुद्र से नये–नये रत्न निकालने के लिए नहीं है। उसका कछुआपन ढाल के भीतर और भी सिकुड़कर घुस जाने के लिए है।

किसी बात का टोटा होने पर उसे पूरा करने की इच्छा होती हैं, दुःख होने पर उसे मिटाना चाहते हैं। यह स्वभाव है। अपनी–अपनी समझ है। संसार में विविधा दुःख दिखाई पड़ने लगे। उन्हें मिटाने के लिए उपाय भी किये जाने लगे। 'दृष्ट' उपाय हुए। उनसे संतोष न हुआ तो सुने सुनाये (आनुश्रविक) उपाय किये। उनसे भी मन न भरा। सांख्यों ने काठ कड़ी गिन–गिनकर उपाय निकाला, बुद्ध ने योग में पककर उपाय खोजा, किसी ने कहा कि बहस, बकझक, वाक्छल, बोली की चूक पकड़ने और कच्ची दलीलों की सीवन उधेडनें में ही परम पुरूषार्थ है। यही शगल सही। किसी न किसी तरह कोई न कोई उपाय मिलता गया। कछुओं ने सोचा, चोर को क्या मारें, चोर की मां को ही न मारें। न रहे बॉस न बजे बांसुरी । यह जीवन ही तो सारे दुःखों की जड़ हैं। लगीं प्रार्थनाएं होने –

' मां देहि राम। जननीजठरे निवासम्' ज्ञात्वेत्थं न पुनः जननी– गर्भेंडर्भकत्वं जनाः' और यह उस देश में जहां कि सूर्य का उदय होना इतना मनोहर था कि ऋषियों का यह कहते कहते तालू सूखता था कि सौ बरस इस हम उगता देखें, सौ बरस सुनें सौ बरस बढ़ बढ़कर बोंलें सौं बरस अदीन होकर रहें – सौ बरस ही क्यों , सौं बरस से भी अधिक । भला जिस देश में बरस में दो ही महीनें घूम फिर सकते हों और समुद्र की मछलियों मारकर नमक लगाकर सुखाकर रखना पड़े कि दस महीनें में शीत और अंधियारे में क्या खाएंगे, यहां जीवन से इतनी ग्लानि हो तो समझ में आ सकती है पर जहां राम के राज में ' अकृष्ट – पच्या पृथिवी पुटके मधु बिना खेती के फसलें पक जायें और पत्तें – पत्तें में शहद मिले, यहां इतना वैराग्य क्यों ?

यह ग्रीव या हिरणयाक्ष दोनों में से किसी एक दैत्य से देव बहुत तंग थे कवि कहता है –

विनिर्गत मानदमात्मन्दिराद् भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयापि यम्।

ससंभ्रमेन्द्रदुतपातितार्गला निमीलिताक्षीव भियामरावती ।

महाशय यों ही ही मौजें से घुमने निकले हैं। सुरपुर में अफवाह पहुंची । बस , इंद्र ने झटपट किवाड़ा बन्द कर दिये । आगल डाल दी । मानो अमरावती ने आंखे बन्द कर लीं।

यह कछुआ – धरम का भाई शुतुर्मुर्ग धरम है कि शुतुर्मुर्ग का पीछा कीजिएउ तो वह बालू में सिर छिपा लेता है। समझता है कि मेरी ऑखों से पीछा करने वाला नंहीं दिखता तो उसे भी मैं नहीं दिखता । लम्बा चौड़ा चाहे बाहर रहे आंखों और सिर तो छिपा लिया । कछुए ने हाथ पांव सिर भीतर डाल लियां

इस लड़ाई में कम से कम पांच लाख हिन्दू आगे पीछे समुद्र पर आये हैं। पर आज कोई पढ़ने के लिए विलायत जाने लगे तो हनोज रोज अव्वल अस्त अभी पहिला ही दिन है सिर रेत में छिपा है!

लेखक परिचय –

चंद्रधर शर्मा गुलेरी – जन्म 7 जुलाई 1883, जयपुर

निधन 12 सितम्बर 1922

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकार थे। बचपन से ही संस्कारों को आत्मसात् कर वे प्रकाण्ड विद्वान बने मात्र 39 वर्ष की अवस्था में देहावसान के पूर्व उन्होंने कई क्षेत्रो में अपना लोहा मनवा लिया था। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी को हिन्दी साहित्य मे सबसे अधिक ख्याति 1915 मे 'सरस्वती' मासिक पत्रिका मे प्रकाशित कहानी 'उसने कहा था' के कारण हुई। यह कहानी शिल्प और विषय वस्तु की दृष्टि से आज भी मील का पत्थर मानी जाती है।

कछुआ धर्म वस्तुतः चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित एक व्यंग्य आलेख है।

रचनाएं :

झुकी कमान

भारत की जय

उसने कहा था

1. 'जहाँ गुरू की निंदा हो रही हो वहाँ पर भेल आदमी को चाहिए कि कान बंद कर ले या कहीं उठ कर चले जाएँ', यह कथन है –

   (अ) नारदस्मृति का (ब) मनुस्मृति का (स) याज्ञवल्क्य का (द) स्मृति का

2. विष्णु ने अग्नि यज्ञपात्र और अरणि रखने के लिए कितनी गाड़ियाँ बनायीं –

   (अ) सात (ब) तीन (स) पाँच (द) छह

3. 'कछुआ धर्म' निबंध में कछुआ धरम का भाई कौन है –

   (अ) श्वान–धरम (ब) शुतुर्मुर्ग–धर्म (स) कच्छप–धरम (द) मानव–धरम

4. 'कछुआ धरम' निबंध में किसकी मोनोपॉली है –

   (अ) चरस (ब) शराब (स) गाँजा (द) सोम

5. पुर्तगाली लोग भारत में क्या करने आए थे –

   (अ) व्यापार करने (ब) विवाह करने (स) कृषि करने (द) राज्य करने

6. मुसलमानों के यहाँ क्या लाना हराम है –

   (अ) घूस लेना (ब) सूद लेना (स) कर्ज लेना (द) दहेज लेना

7. 'कछुआ धर्म' निबंध के लेखक कौन हैं –

   (अ) मोहन राकेश (ब) बाबू गुलाबराय (स) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

   (द) पं. रामनारायण उपाध्याय

उत्तर –

(1) ब (2) ब (3) ब (4) द (5) अ (6) ब (7) स

नही रूकती है नदी

हीरालाल बाछोतिया

लेखक परिचय –

डॉ. हीरालाल बाद्वोतिया प्रतिष्ठित शिक्षाविद्, कवि और लेखक है। वे एन.सी. ई.आर.टी में हिन्दी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष तथा हिन्दी पाठ्य पुस्तक से सम्बन्धित रहकर हिन्दी की अत्यन्त सेवा करते रहें है। उन्होनें शिक्षा, संस्कृति और भाषा पर अनवरत लेखन किया हैं।

कृतियां – अभी भी , जनहित और अन्य कविताएं , विद्रोहिणी शबरी (काव्य), नेकी की राह, आँगन का पेड़ , इत्यादि

मूल पाठ

महाकवि कालिदास ने 'मेघदूत' में आम्रकूट पर्वत का वर्णन किया है। मेघदूत में वर्णित आम्रकूट विन्ध्याचल का पूर्वी छोर है। इसी पूर्वी छोर का एक हिस्सा है– अमरकंटक। 'अमरकंटक' नाम में ही ऐसा आकर्षण है जो पर्यटक के मन को बाँध लेता है। किसी ओर से भी जाएँ– अमरकंटक की यात्रा कंटकपूर्ण किन्तु रोमांचक है।

पहले अमरकंटक पहुँचने में बड़ी कठिनाई होती थी, किन्तु अब सड़कों के बन जाने से सुविधा हो गई है। कटनी से बिलासपुर जाने वाली रेल लाइन पर पेंडरा रोड से यह 40 किलोमीटर है। जबलपुर–बिलासपुर से भी यहाँ पहुँचा जा सकता है। अमरकंटक की यात्रा बिलासमुर से जीप द्वारा करना कुछ अधिक ही कंटकपूर्ण और रोमांचक थी।

वह नए साल का पाँचवाँ या छठाँ दिन था। जनवरी में भी बारिश हो जाया करती है। पिछली रात ही वर्षा हुई थी। तेज हवाएँ अब भी चल रही थीं। बीच–बीच में तेज बौछारें आ–जा रही थीं। लहलहाते खेतों वाली भूमि पीछे छूटती जा रही थी। घने जंगलों का सिलसिला शुरू हो गया था। काफी देर बाद एकाध वन–ग्राम दिखाई दे जाता था। सड़क भी अब कच्ची–पक्की रह गई थी। नालों पर या तो नए पुल निर्माणाधीन थे या मात्र रपटे थे। निर्माणाधीन पुलों पर गिट्टी–मिट्टी का ऐसा रेल–पेल बन गया था कि जीप को कच्चे रास्ते से ले जाना ही सुरक्षित था। कई स्थानों पर आसपास की झाड़ियाँ आदि

काटकर बिछानी पड़ीं, तभी जीप आगे बढ़ सकी। झाड़ियाँ काटने के लिए एक ग्रामवासी गिरिजन ने कुल्हाड़ी दे दी थी। बड़ी प्रतीक्षा के बाद भी जब वह कुल्हाड़ी लेने नहीं आया तो सड़क के किनारे ही कुल्हाड़ी को रख देना पड़ा। उसी के नीचे पाँच रुपये का एक नोट भी रख दिया क्योंकि आसपास कहीं कोई था ही नहीं, जिसे कुछ बता सकें। वह यह भी न सोचे कि शहर के लोग मतलबी होते हैं।

घने वनों के बीच एक बड़ा–सा वनग्राम आया, नाम था–'अचानक मार'। कभी किसी अंग्रेज साहब पर यहाँ शेर ने अचानक हमला कर दिया था, इसीलिए नाम पड़ा–'अचानक मार'। 'अचानक मार' में वन–विभाग का कारोबार है। जंगल से लकड़ियाँ काटी जाकर यहाँ जमा की जाती हैं। डिपो है यहाँ – शासकीय काष्ठ भंडार । एक–दो होटलें, दो–एक दुकानें भी सड़क के किनारे दिखीं। सरकारी स्कूल भी था। यहाँ आदिवासी नृत्य अपने ही परिवेश में देखने का अवसर मिल गया। घने बादल छाए हुए थे। उस माहौल में आदिवासी नृत्य में शामिल होना असमय शायद हो किन्तु अयाचित या अनाकर्षक नहीं। ढोल पर आदिवासी स्त्रियाँ थिरकती रहीं और गूँजते रहे उनके गीत। उनका कला–प्रदर्शन सार्थक रहा, क्योंकि दर्शकों द्वारा उन्हें काफी इनाम आदि दिए गए।

अचानक मार के आगे सड़क कान्हा अभयारण्य क्षेत्र के पास से गुजरती है। हिरणों के झुंड पहले ही देख चुके थे। ड्राइवर ने बताया–रात में शेर, चीते सड़क पर ही मिल जाते हैं। बारिश अब लगातार हो रही थी। सड़क एक के बाद दूसरा मोड़ ले रही थी।

चढ़ाई के साथ ऊँचाई बढ़ रही थी और उसी के साथ बढ़ रही थी सर्दी । कहीं कोई गाँव तक नहीं था। काफी देर बाद यह सँकरी गौरेला (शहडोल) से आने वाली बड़ी सड़क से जा मिली। इस सड़क पर ट्रकों का आना–जाना ज्यादा ही था। लकड़ी से लदे हुए ट्रक हॉर्न बजाते सीधे निकले जा रहे थे। यह तो खैर थी कि पहाड़ी की ओर जीप को हट जाना पड़ता था, जबकि दूसरी ओर नुकीले बाँसों के जंगल से गहरी घाटी थी। कुछ ही देर में एक तिराहे –– कबीर चबूतरे पर जा पहुँचे । कबीर चबूतरा एक प्रसिद्ध स्थान है। कहते हैं, कभी कबीर यहाँ आए थे। इसके आगे और ऊँची चढ़ाई थी। सड़क पहाड़ के एक स्कंध को लाँघकर दूसरे पर पहुँच रही थी। सर्द हवाएँ पूर्ववत कँपकँपी पैदा कर रही थीं। यदि वर्षा न हो रही होती तो यह मार्ग अपनी रमणीयता का अद्‌भुत आयाम समग्रता में प्रस्तुत करता । मंडला जबलपुर–शहडोल से होकर आएँ तब भी मार्ग की रमणीयता या संभावित कंटक यही होते हैं।

ऊँचाई पर ऊँची–नीची समतलता अमरकंटक के बिल्कुल पास आ पहुँचने का संकेत दे रही थी। एक ओर ढालू जमीन पर मकानों का सिलसिला था। पास ही वन विभाग की इमारतों की कतार दिख रही थी। पृष्ठभूमि में सघन सागौन वन था। दूसरी ओर ढालू जमीन के निचले भाग में दुकानें तथा बस्ती थी और दोनों के बीच नर्मदा मैया का मंदिर दिख रहा था।

अमरकंटक की ऊँचाई लगभग साढ़े तीन हजार फुट है। एक तरह से हिल–स्टेशन की अर्हताएँ हैं। किन्तु हिल स्टेशन के आधुनिक निकषों को यह शायद ही कभी पूरा कर सके। अमरकंटक 'नर्मदा मैया' की जन्म–स्थली है और तीर्थ–यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र है। हाँ, प्रकृति प्रेमियों या पर्वतारोहण में रुचि रखने वाले भी यहाँ मिल जाएँगे। 'नर्मदा मैया की जय' की अनुगूँज ही यहाँ की पहचान है।

नर्मदा को चिर–कुँआरी कहा जाता है। कहते हैं– सोन इसे ब्याहने आया, किन्तु उसके अहं की क्षुद्रता नर्मदा को रास नहीं आई । नर्मदा ने सोन के अहं पर प्रहार किया। वह स्वयं पूर्वाभिमुख होकर बह निकला और यह ठीक उसके विरूद्ध पश्चिम दिशा की ओर बढ़ चली । नर्मदा कुंड से निकली हैं, जिसे कोटितीर्थ कहते हैं। कुंडों के पास खड़े होकर देंखें तो पूर्व की ओर दिखने वाली क्षितिज रेख को रोककर खड़े सघन वन से जमीन का एक ढाल पश्चिमाभिमुख है, दूसरा पूर्वाभिमुख। सघन वन में बाँस के भिड़े हैं, जो वर्षा के पानी को सँजोकर रखते हैं। यही पानी धीरे–धीरे उनमें से रिसता रहता है। यही नर्मदा का उद्‌गम है।

स्नान के लिए भी जल–कुंडों का प्रयोग किया जा सकता है। इन कंडों का जल पूजा–अर्चना के लिए भी है। कई मंदिर हैं जिनमें नर्मदा मैया का मंदिर सबसे भव्य है। यहाँ मंदिर है, तो पंडे–पुजारी भी हैं और हैं पूजा–अर्चना के बाद 'परकम्पा' (परिक्रमा) पर निकलने वाले तीर्थ–यात्री भी। नर्मदा की परिक्रमा उद्‌गम के एक ओर से शुरू होकर सागर–मिलन पर समाप्त होती है। कुछ यात्री इसे हिस्सों में पूरा करते हैं। फिर वहाँ से दूसरे तट से प्रारंभ होकर यहीं समाप्त होती हैं। कुछ यात्री हंडिया से यात्रा शुरू करते हैं। कुछ ओंकारेश्वर पर पड़ाव डालते हैं। यह परकम्पा पैदल की जाती है। घने जंगलों, वन्य–पशुओं, कंटकों, नावों, सबसे होकर गुजरते हैं – परकम्पावासी । शायद यही अमरत्व का काँटा है। हमने सोचा–कपिल धारा तक 'परकम्मा' की जाए और चल पड़े परकम्पा पर। कुंड से कितनी छोटी धारा को बहते देखा था, किन्तु 4 किलोमीटर बाद ही वह

प्रवाहमयी धारा बन गई थी। कितने ही परकम्मावासी मार्ग में मिले। मार्ग भी तो उछलती–कूदती नर्मदा के साथ–साथ आगे बढ़ता है। सामने से आते दल चाहे परकम्पा वाले हों, चाहें पर्यटकों के 'बोलो नर्मदा मैया की जय' के साथ एक दूसरे का अभिवादन करते मिले। उद्‌गम से कोई 5 किलोमीटर की दूरी पर नर्मदा को पार कर दूसरे किनारे जाना था कि पीछे से आती जीप बीच में फँसकर चट्‌टानों के पास बहती चली गई। रस्से से बाँधकर उसे निकाला जा सका। लगा कि पैदल परकम्पा करना ही निरापद है।

आगे कपिल धारा है, जहाँ नर्मदा चट्‌टानों से लगभग सौ फुट नीचे उतरती है और एक सुन्दर जल–प्रपात का निर्माण करती है। हरियाली के बीच लटकी यह जल–धारा एक अद्‌भुत दृश्य उपस्थित करती है। जहाँ धारा गिरती है वहाँ कतिपय गुफाएँ या चट्‌टानों को काटकर बनाए गए शैलाश्रम हैं, जहाँ बैठकर ध्यान–मनन किया जा सकता है कहा जाता है, कपिल मुनि ने यहीं तपस्या की थी।

पत्थरों–चट्‌टानों पर संभलकर चलना ही ठीक है। ठीक कपिल धारा के ऊपर नर्मदा को इसी तरह पार करना होता है। फिर सँकरी नीचे उतरती पगडंडी से चलकर वहाँ पहुँचते हैं, जहाँ नर्मदा फिर पाषाण–खंडों के बीच 'कलकल' करती घने वनों के बीच दौड़ती हैं। जिस ओर नर्मदा जा रही थी, उस ओर देखते रहे। आगे सघन वन और नीले पहाड़ थे। हाँ, सघन वनों के बीच एक खाली रेखा थी और दूर उसमें से झाँकते नीले पहाड़ों की श्रृंखला दिखाई दे रही थी। शायद वही नर्मदा का प्रवाह–पथ था, लेकिन नर्मदा तो उन सबको लाँघकर आगे बढ़ती जाती है–आगे बढ़ती रहती है।

नहीं रूकती नर्मदा–कहीं नहीं रूकती–न डिंडोरी में, न मंडला में न बरगी में, न भेड़ाघाट (जबलपुर) में। भेड़ाघाट में वह श्यामल चट्‌टानों को दूधिया बनाती है। भेड़ाघाट में ही सुंदरतम जल–प्रपात का आँचल फहराकर पथिकों को कुछ क्षण विश्राम की प्रेरणा देती है। फिर संगमरमरी चट्‌टानों के बीच बहती पर्यटकों को नौका विहार का सुख देती हैं।

नर्मदा का पथ सतपुड़ा और विन्ध्याचल के बीच से होकर गुजरता है। जगह–जगह शैल– श्रृंखलाएँ इसे रोकने जा खड़ी होती हैं और यह है कि अपनी तेज धारा से उन्हें काटती–छाँटती वेग से आगे बढ़ती रहती है। कितनी ही छोटी–बड़ी नदियों को यह गले लगाती बढ़ती जाती है। शक्कर, दूधी, गंजाल, मोरन, माचक, चोरल और न जाने कितनी नदियाँ जो अपने क्षेत्र की किंवदंतियों को नर्मदा के यशोगान में जोड़ती जाती हैं, जैसे तवा

जो होशंगाबाद के पास नर्मदा में मिलता है। कहते है तवा भी फुफकारते अहं के साथ नर्मदा को ब्याहने आया। उसे नर्मदा ने ऐसी फटकार लगाई कि वह वहीं चौड़ा हो गया । वहाँ तवा की चौड़ाई (फैलाव) तवा जैसी है भी।

नर्मदा का कंकर शंकर या शिवलिंग है। गोल पत्थर जो नर्मदा के तट पर मिलते हैं, उनमें प्रायः एक जनेऊ जैसी रेखा दिखती है। इन गोल पत्थरों को लोग जनेऊ जैसे देखकर शिवलिंग के रूप में अपने घरों में प्रतिष्ठित करते हैं । नर्मदा तट पर भिन्न नामें से शिव का ही वास है। कहीं गंगेश्वर, कहीं कालेश्वर, कहीं ओंकारेश्वर। नर्मदा तट पर घाट हैं। मंदिर हैं बरमान घाट, खल घाट, राजघाट और न जाने कितने घाट–जहाँ नाव से नर्मदा को पार करना होता था। अब सेतु बन जाने के बाद वे नाविकों के लिए आजीविका के केन्द्र नहीं रह गए हैं। होशंगाबाद के घाटों की अपनी शोभा है, तो माहेश्वर के घाटों में वाराणसी के घाटों का प्रतिरूप दिखाई देता है। इनके साथ पौराणिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं। नावड़ातोड़ी (महेश्वर) में पूर्व मध्यकालीन या उससे पहले की सभ्यता के अवशेष भी मिले हैं।

कपिल धारा पर खड़े होकर वेगवती नर्मदा के आगे बढ़ते रहने की कल्पना की जा सकती है। 'परकम्पा' पर निकले तो यह सारा कुछ देखा जा सकता है या इन्हें टुकड़ों में भी देखा जा सकता है। नर्मदा जहाँ भी पहुँचती हैं, वहीं तीर्थ बन जाता है। 'स्कंध–पुराण के रेवा–खंड' में कहा गया है कि गंगा कनखल तीर्थ में और सरस्वती कुरूक्षेत्र में सबसे अधिक मानी जाती हैं, परन्तु नर्मदा की महिमा का कोई पार नहीं । वह तो गाँव–गाँव और डगर–डगर सब कहीं पवित्र है। उसके महात्म्य को लेकर हर स्थान पर एक कहानी मिलती है। नर्मदा लोकजीवन को प्रेरित करती है। लोग गा उठते हैं –

मुरूआ–मुरूआ आ गई नरबदा रे।
आ गई नरबदा रे।।

उसकी लहरों में दीपदान किया जाता है। तागली, चोली और फरिया भेंट की जाती है।

नर्मदा जिस पथ से होकर बहती है, वह गोंडवाना कहलाता है। इसलिए आदिम जन की अनगढ़ता का सौंदर्य इसमें सहज सुलभ है। इसकी अगवानी पर बुंदेली, निमाड़ी, मालवी, भीली की लोक–पंरपरा आज भी जीवंत है। यहाँ लोकगीतों में नर्मदा को पतितपावनी, दरिद्र नारायण की रक्षक, अखंड सौभाग्य का वरदान देने वाली तथा मातृत्व

से परिपूरित कहा गया है। नर्मदा एक नदी नहीं, संस्कृति है। इस संस्कृति की अनुगूँज पूरे नर्मदा कछार में सुनी जा सकती है –

''म्हारा मेंहदी रचा न हुई हात
घागर म्हारो भरी रे दीजो
भरि दीजो रे नंदजी का लाल
घागर म्हारी भरी दीजो।।''

नर्मदा का महात्म्य जन–भावना में सर्वज्ञात है। अब इस चिर–कुमारी को बाँधों के घूंघट पहनाए जा रहे हैं। पुनासा बाँध, नर्मदा सागर बाँध आदि इसी प्रकार के प्रयास हैं, जो नर्मदा के जल को प्यासी फसलों तक पहुँचाएँगे और जल से उत्पन्न विद्युत गाँवों को बिजली की आँखें देगी। यह अलग बात है कि इनके कारण हजारों एकड़ बेकार भूमि ही नहीं, उर्वर जमीन भी पानी में डूबेगी। लोगों को अपने धर–जमीन छोड़कर देशबाहर होने का अभिशाप ढोना पड़ेगा। हरसूद जैसा बड़ा कस्बा और बम्बई जाने वाली रेल लाइन का एक हिस्सा तक डूब में आएगा। बड़वानी क्षेत्र का बड़ा भूभाग भी इस डूब में आएगा, लेकिन लोग अभी भी आशा नर्मदा पर ही लगाए हैं–''नर्मदा मैया जो चाहेगी वही होगा''–कितनी गहन आस्था है।

कार्तिक पूर्णिमा, संक्रांति, चन्द्र और सूर्य ग्रहण आदि अवसरों पर नर्मदा के हर घाट पर या कहें बसे हुए तट पर मेले जुड़ते हैं। आसपास के क्षेत्रों से लोग अपनी बैलगाड़ियों में गाते हुए नर्मदा के किनारे जुड़ते हैं और नर्मदा में डुबकी लगाते हैं–''हर हर नर्मदे।'' इस जयकारे के द्वारा ये अपने आपको कृतार्थ मानते हैं। नर्मदा के तट पर ही 'गक्कड़' बनाते और नर्मदा मैया के प्रसाद के रूप में उसे खाते हैं। अमरकंटक में तो सदा ही मेला भरा रहता है। तीर्थ–यात्रियों की भीड़ लगी रहती है, जिनमें परकम्मावासी भी शामिल हैं। यह परकम्मा हमारी परिक्रमाओं को एक वृहत् अर्थ भी तो देती है। कोटितीर्थ (गोमुख) से कपिल धारा और कपिल धारा से कोटितीर्थ की परकम्मा हमारी अमरकंटक यात्रा की उपलब्धि ही है।

शब्दार्थ

शब्द	**अर्थ**	**Meaning**
वैशिष्ट्य	विशेषज्ञता	Speciality

कंटकपूर्ण	काँटो से भरा	Full of thorns
काष्ठ	लकड़ी	Wood
अयाचित	अचानक	Suddenly
अभयारण्य	पशु/पक्षियों हेतु संरक्षित स्थल	Sanctuary
स्कंध	कंधा	Shoulder
ढालू	ढलान	Slope
सघन	घना	Dense
अहं	घमंड	Ego
क्षुद्रता	छोटापन	Pettiness

विशेष प्रयोग

कबीर चबूतरा	:–	कबीर कभी वहाँ आये थे (स्थल)
चिर–कुँवारी	:–	सदा अविवाहित
कोटितीर्थ	:–	सौ तीर्थों के बराबर
अभिवादन	:–	प्रणाम
शक्कड़	:–	एक प्रकार का प्रसाद

उद्देश्य :–

1. छात्र लेखक के जीवन से परिचित हो सकेंगे।
2. छात्र नदियों के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
3. छात्र नर्मदा की परिक्रमा के लिए पहुंच मार्ग से परिचित हो सकेंगे।
4. छात्र नर्मदा नदी के विषय में संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

केन्द्रीय भाव :– नर्मदा नदी के विषय में तथा उसकी परिक्रमा, धार्मिक महत्व, आस्था, उद्‌गम तथा यात्रा के मार्ग में आने वाले स्थान का वर्णन पाठ का केन्द्रीय भाव है।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ

1. प्रस्तुत पाठ की विधा है

   अ. निबन्ध ब. संस्मरण स. कहानी द. यात्रा–वृत्तांत

2. कालिदास ने आम्रकूट पर्वत का वर्णन किया है

   अ. शंकुतला ब. मृच्छकटिकम् स. मेघदूत द. विक्रमोवर्शीयम

3. अमरकंटक का मार्ग किस प्रकार का है

   अ. रोमांचक ब. सुखद स. दुःखद द. भयानक

4. घने वनो के बीच एक वनग्राम था

   अ. कांगड़ा ब. डिडोरी स. अचानकमार द. कालेश्वर

5. अमरकंटक की ऊँचाई लगभग कितनी है

   अ. तीन हजार फुट ब. चार हजार फुट स. साढ़े तीन हजार फुट द. एक हजार फुट

6. नर्मदा कृति से प्रेरणा मिलती है

   अ. इतिहास को ब. लोकजीवन को स. आर्थिक को द. राजनीति को

7. नर्मदा के उद्‌गम स्थल को कहते है

   अ. अमरकंटक ब. कोटितीर्थ स. गौरेला द. चेरिल

8. नर्मदा को ..... कहा जाता है

   अ. चिर–कुँआरी ब. कुँआरी स. कुमारी द यौवना

9. नर्मदा की महिमा ..... है

अ. अपार ब. पारम्परिक स. परम्पार द

10. नर्मदा का पथ क्या कहलाता है

अ. गोंडवाना ब. मालवा स. राजपूताना द. बुन्देलखंण्ड

उत्तर :– 1 द, 2. स, 3. अ, 4. स, 5. स, 6. ब, 7. ब, 8. अ, 9. अ, 10. अ

खाली स्थान भरें :–

1. ..... चबूतरा एक प्रसिद्ध स्थान है

2. अमरकंटक ..... की जन्म स्थली है

3. नर्मदा की परकम्पा ..... की जाती है

उत्तर :– 1 कबीर, 2 नर्मदा मैया, 3 पैदल

लघुउत्तरीय प्रश्न / एक शब्द प्रश्न

प्र.1 ''नही रूकती है नदी'' में किसका वर्णन मिलता है ?

उ0 ''नहीं रूकती है नदी'' नर्मदा परिक्रमा पर केन्द्रित यात्रा वृतान्त है।

प्र.2 नर्मदा नदी का उद्‌गम स्थल कहाँ है ?

उ0 नर्मदा नदी का उद्‌गम अमरकंटक है।

प्र.3 अमरकंटक की यात्रा कैसी है ?

उ0 अमरकंटक की यात्रा कंटकपूर्ण किंतु रोमाचंक है।

प्र.4 अमरकंटक के घने वनो के मार्ग में एक वनग्राम आया, उसका नाम क्या है ?

उ0 ''अचानक मार'' ।

प्र.5 इसका नाम अचानक मार क्यों पड़ा ?

उ0 किसी अंग्रेज साहब पर शेर ने अचानक हमला कर दिया था इसलिए नाम पड़ा 'अचानक मार'।

प्र.6 कबीर चबूतरा क्यों प्रसिद्ध है ?

उ0 कहते है यहाँ कबीर कभी आये थे।

प्र.7 नर्मदा को ब्याहने कौन आया था ?

उ0 नर्मदा को ब्याहने सोन आया था।

प्र.8 होशंगाबाद के पास कौन सी नदी नर्मदा में मिलती है?

उ0 होशंगाबाद के पास तवा नदी नर्मदा में मिलती है।

प्र.9 नर्मदा को क्या क्या भेंट किया जाता है ?

उ0 नर्मदा की लहरो में दीपदान किया जाता है तथा तागली, चोली और फरिया भेट की जाती है।

प्र.10 नर्मदा के जल को जनजीवन के काम में कैसे लाया जा रहा है।

उ0 नर्मदा का महात्म्य जन भावना में सर्वज्ञात है। इसके तटो पर अब बांध बनाये जा रहे हैं जैसे – पुनासा, नर्मदा सागर जिससे गाँवो को बिजली तथा फसलों को पानी मिलेगा।

सारांश

'नहीं रूकती है नदी', नर्मदा परिक्रमा पर केन्द्रित यात्रा वृतान्त है जिसमें लेखक ने नर्मदा के उद्‌गम स्थल अमरकण्टक से लेकर कपिलधारा तक की यात्रा का जीवंत–वर्णन किया है। महाकवि कालिदास ने 'मेघदूत' में आम्रकूट पर्वत का वर्णन किया है। आम्रकूट पर्वत विन्ध्याचल का पूर्वी क्षेत्र है एवं इसी का एक हिस्सा है : अमरकण्टक। अमरकण्टक की यात्रा कंटकपूर्ण एवं रोमांचक है। लेखक ने अमरकण्टक पहुंचने के मार्ग की कठिनाईओं एवं बाधाओं के विषय में विस्तृत रूप से बताया है। घने वनो के मध्य एक बड़ा सा ग्राम (जंगल में स्थित गॉव/छोटी बस्ती) जिसका नाम अचानक मार इसलिए संभवतः रखा होगा जब यहां किसी अंग्रेज साहब पर शेर ने अचानक हमला कर दिया होगा। अमरकण्टक की उँचाई लगभग साढ़े तीन हजार फिट है। पृष्ठभूमि में सागौन (Teak) के घने वन है। अमरकण्टक से नर्मदा एवं सोन नदियां का उद्‌गम होता है, अतः यह धार्मिक आस्था का प्रतीक तो है ही, तीर्थ यात्रियो के साथ–साथ पर्वतारोहण के लिए भी प्रसिद्ध है। नर्मदा की परिक्रमा (परकम्पा) पैदल की जाती है। घने जंगलो, वन्य पशुओ,

कंटको (कॉटो) नावो सबसे होकर गुजरने के कारण ही परकम्पावासी। शायद यही अमरत्व का कांटा (Thorn of Immortality) हैं। अमरकण्टक के प्रसिद्ध स्थलों (पड़ावो) में कबीर चबूतरा, कपिलधारा (जहाँ कपिल ऋषि ने तपस्या की थी) है। नर्मदा कही नहीं रूकती न डिंडोरी में, न मण्डला में, न बरगी (जबलपुर) एवं न भेड़ाघाट में भेड़ाघाट में तो सुन्दरतम जल प्रपात बनाती है। नर्मदा जहाँ भी पहुँचती है, वहॉ घाट बन जाता है। नर्मदा जिस पथ से होकर बहती है, वह गोंडवाना कहलाता है। नर्मदा मात्र एक नदी नहीं है बल्कि संस्कृति है। लोकगीतों में नर्मदा को पतितपावनी, दरिद्र नारायण रक्षक, अखण्ड सौभाग्य प्रदान करने का एवं मातृत्व से परिपूरित कहा गया है। इसे चिर कुमारी भी कहा गया है। कार्तिक पूर्णिमा, संक्राति, चंद्र एवं सूर्य ग्रहण आदि अवसरों पर नर्मदा के तट/घाट पर मेले लगते हैं। कोटितीर्थ (गोमुख) से कपिलधारा और कपिलधारा से कोटितीर्थ की परिक्रमा अमरकण्टक यात्रा की उपलब्धि ही हैं।

Summary -

' Nahi Rukti hai Nadi' is a Memoir which is based on Narmda Parikrama . In this memoir the author has lively narrated the whole journey from Narmda 's origin Amarkantak to Kapildhara.

पल्लवन

पल्लवन मूल पाठ

पल्लवन अथवा विस्तारण –

पल्लवन का सीधा और स्पष्ट अर्थ है – विस्तार करना या फैलाव।

मानक हिन्दी कोश के अनुसार – पल्लवन और पल्लवित शब्दों का अर्थ भी विस्तार, अभिवृद्धि के रूप में ध्वनित होता है यथा – पल्लवना – (स. पल्लव + हि. ना प्रत्यय)।

पल्लवित – (सं. पल्लव + इतच्) (1) पेड़ या पौधा जो नये पत्तों से युक्त हो अथवा जिसमें नये–नये पत्ते निकल रहे हों। (2) हरा–भरा लहलहाता हुआ। (3) जिसे नई–नई चीज़ों, रचनाओं आदि से युक्त किया गया हो और इस प्रकार उसका अभिवर्द्धन तथा विकास हुआ हों।

अँग्रेजी में पल्लवन के लिए एम्पलीफिकेशन (Amplification) शब्द का प्रयोग भी मिलता है।

पल्लवन विचारों का एक ऐसा क्रमबद्ध पुनर्प्रस्तुतिकरण है, जिसमें उदाहरण द्वारा बात को स्पष्ट करना होता है। कतिपय भावों, तथ्यों, विचारों और रचना – संकेतों का स्पष्टीकरण ही पल्लवन है, जिसमें आरंभ से लेकर अंत तक मूलभाव, विचार या मंतव्य की रक्षा की जाती है। पल्लवन लेखन–कला का एक महत्वपूर्ण अंग है। किसी भावपूर्ण वाक्य, कथन, वाक्यांश, लोकोक्ति, दार्शनिक विचार, उक्ति, मुहावरें तथा पद्यात्मक सूक्ति को समझाकर लिखना 'पल्लवन' कहलाता है। पल्लवन एक कला है, जिसके लिए सतत् अभ्यास की आवश्यकता होती है।

पल्लवन के लिए दिए गए मूलभाव का विचार, भाव या सूक्ति के अर्थ को विस्तृत करते हुए एक निबंध सा लिखा जा सकता है, किन्तु यह जान लेना आवश्यक है कि पल्लवन निबंध नहीं है। निबंध में व्याख्या एवं भाव या विचार के पक्ष–विपक्ष के तर्क और प्रमाण प्रस्तुत किसे जाते है। निबंध–लेखन स्वतंत्र है कि वह विषय का वर्णन–विश्लेषण जैसा चाहे कर सकता है, लेकिन पल्लवन में लेखक को बँधे–बाधाएँ, संकुचित एवं सीमित क्षेत्र में ही रहना पड़ता है।

पल्लवन में मूल भाव या विचार की व्याख्या की जाती है, किन्तु यह जान लेना भी आवश्यक है कि पल्लवन व्याख्या नहीं है। व्याख्या में प्रसंग, निर्देश, उदाहरण, तुलना और

टिप्पणी करने की स्वतंत्रता होती है। पल्लवन में दिए गए भाव या विचार का विस्तार करना होता है जो उसमें निहित है। पल्लवन के केन्द्र में मूल भाव या विचार का विस्तार करना होता है जो उसमें निहित है। पल्लवन के केंद्र में मूल भाव या विचार के मंतव्य की रक्षा करती होती है। अतः निबंध रचना सी स्वतंत्रता नहीं रहती।

इसी प्रकार पल्लवन करना भावार्थ करना भी नहीं है। भावार्थ में भाव विस्तार की सीमा होती है। पल्लवन में भाव को स्पष्ट करना होता है। भावार्थ में यह आवश्यक नहीं कि मूलभाव को पल्लवित कर उसे एक अनुच्छेद में लिखा जाए। भावार्थ में केंद्रीय भाव को पकड़ने की और पल्लवन में केंद्रीय भाव को निरंतर स्पष्ट करने की चेष्टा निहित रहती है। पल्लवन में गौण भावों और विचारों को भी ग्रहण किया जाता है। पल्लवन में विवेचन और विश्लेषण की आवश्यकता कम ही होती है। विवेचन और विश्लेषण से विस्तार लेने का भय रहता है। पल्लवन में विस्तार का भाव निहित है। किन्तु यह विस्तार सीमातीत नहीं है। सामान्यतः यह माना जाता है कि पल्लवन के लिए दिए विषय पर पच्चीस–तीस पंक्तियों का एक अनुच्छेद लिखना उचित एवं पर्याप्त है।

पल्लवन की प्रक्रिया –

सामान्य रूप से पल्लवन करने के कोई निश्चित नियम नहीं है। फिर भी पल्लवन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान अवश्य रखना चाहिए –

1. मूल वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति आदि पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए।
2. पल्लवन में मूलभाव या विचार की पृष्ठभूमि में जो भाव और विचार हों उन्हें भी स्पष्ट करना चाहिए।
3. मूल एवं गौण भावों–विचारों को सोच–समझकर क्रमशः अनुच्छेद में लिखा जाना चाहिए तथा ध्यान रखना चाहिए कि उक्ति या विषय का कोई अंश या भाव छूटे नही और न ही पुनरावृत्ति हो।
4. विषय का विकास धीरे–धीरे और स्वाभाविक रूप में करना चाहिए। वाक्य भी एक दूसरे से सहज रूपेण संबद्ध होने चाहिए।
5. पल्लवन में उदाहरण, दृष्टांत सम्मिलित किए जा सकते है।
6. भाषा तथा अभिव्यक्ति स्पष्ट, मौलिक एवं सरल होनी चाहिए।
7. पल्लवन अन्य पुरूष में ही होना चाहिए।

8. व्यास शैली पल्लवन का मूलाधार है। अतः इस शैली के लेखन का अभ्यास करना चाहिए।

9. पल्लवन में पूरी रचना या अनुच्छेद एक संपूर्ण रचना–प्रोक्ति अर्थात् वाक्यों की व्यवस्थित कड़ी के रूप में उभरकर आनी चाहिए अर्थात् वाक्य–विन्यास में बिखराव नहीं होना चाहिए। वाक्य–विन्यास, सुगठित पल्लवन का प्राण है।

पल्लवन मुख्यतः एक संक्षिप्त रचना है जो प्रायः एक अनुच्छेद में लिखी होती है। इससे लेखक की वैचारिक क्षमता, विषय पर एकाग्रता और चिंतन, अभिव्यक्ति सामर्थ्य तथा भाषा–शैली पर अधिकार का पता चलता है।

'प्रमाणन अंकेक्षण की रीढ़ की हड्डी है'

जिस प्रकार शरीर में रीढ़ की हड्डी महत्वपूर्ण है उसी प्रकार अंकेक्षण में प्रमाणन का महत्व है। यदि रीढ़ की हड्डी कमजोर हो या टूट जाए तो अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य की क्या दशा होगी ? यही विचार अंकेक्षण के बारें में भी किया जा सकता है। अंकेक्षण के प्रमाणन की तुलना रीढ़ की हड्डी से की जा सकती है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि शरीर को सीधा और सुचारू रूप से रखने में तथा इससे वांछित कार्य लेने में रीढ़ की हड्डी का महत्वपूर्ण योगदान है। अंकेक्षण में प्रमाणन महत्वपूर्ण है। प्रमाणन जितना भी अच्छा तथा लगन के साथ किया जाता है, अंकेक्षण का कार्य उतना ही सरला तथा सुविधाजनक एवं विश्वसनीय हो जाता है। रीढ़ की हड्डी बहुत सख्त होती है। प्रमाणन कार्य भी ठोस होना चाहिए। रीढ़ की हड्डी व्यक्ति की पीठ की ओर है। अंकेक्षण के पीछे प्रमाणन है।

'ब्रह्माण्ड की झलकें कितनी भी अनूठी हों, उनके
रहस्यों की कुंजी विज्ञान में हैं'

ब्रह्माण्ड में कहाँ क्या हो रहा है ? ब्रह्माण्ड कहाँ तक फैला है ? उसकी उत्पत्ति कब हुई ? उनकी रचना कैसी है ? पुरातन काल से ही मानव अपने ही चारों ओर फैले ब्रह्माण्ड के बारें में जिज्ञासु रहा है। ऐसे प्रश्नों पर दार्शनिकों, कवियों आदि ने बहुत कुछ चिंतन, मनन एवं मंथन किया है। उपनिषदों में सृष्टि के बारें में कई मूलभूत प्रश्न पूछे गए है। ब्रह्माण्ड की एक अण्डे की उपमा हमारे पुराणों में की गई है। ऐसा अंडा, जिसमें सब कुछ समाहित है। उत्तरी यूरोप की नार्डिक सभ्यता में एक विशाल वृक्ष की कल्पना की गई है, जिसकी जड़ों में डालियों तक सभी भागों में चाँद, तारे, जीव, वनस्पति आदि पाए जाते

है। विज्ञान इस क्षेत्र में देरी से और धीरे–धीरे बढ़ा है। वैज्ञानिक प्रणाली ऐसी है कि उसमें कालानुरूप सुधार की गुंजाइश रहती है। नित नए सिद्धांत और आविष्कार होते रहते हैं। ब्रह्माण्ड कितना विशाल और कैसा है ? इसका आभास मानव को क्रमशः ही मिलता गया है। ब्रह्माण्ड के संबंध में आज जो कुछ हमारा ज्ञान है, वह विज्ञान के कारण ही है। विज्ञान हमारे समक्ष नए–नए रहस्यों को खोलकर निरंतर प्रस्तुत करता रहा है।

'परिश्रम सफलता की कुंजी है'

सफलता के द्वार के ताले बिना परिश्रम दकी कुंजी के नहीं खुलते। जीवन की सफलता का रहस्य परिश्रम है। परिश्रम करने वाला व्यक्ति कर्मवीर कहा जाता है। ऐसा व्यक्ति किसी बाधा से विचलित नहीं होता। वैज्ञानिक आविष्कारों के पीछे केवल परिश्रम है। यहाँ तक कि मधुमक्खी के परिश्रम का उदाहरण देखा जा सकता है। जो फूलों के रस की एक–एक बूँद एकत्र कर शहद का छत्ता तैयार करती है। ऊपर की ओर चढ़ती चींटी जो न जाने कितनी बार गिरती है, पुनः श्रम कर आगे बढ़ती है।

विश्व उन महापुरूषों से पूर्ण है जिन्होनें अपने जीवन में परिश्रम के बल पर ख्याति प्राप्त की। महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री इसके उदाहरण है।

जीवन में हम सब सुख की कामना करते है किन्तु बिना श्रम के सुख के साधन नहीं जुटाये जा सकते। कहते हैं जो बिना श्रम किये भोजन ग्रहण करता है वह चोरी का अन्न खाता है।

अतः परिश्रम ही वह कुंजी है जिसके माध्यम से उस सफलता के द्वारा खुलेंगे जो आगे बढ़ने के कई अवसर हमें देगा।

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई'

मनुष्य इस सृष्टि की अनमोल कृति कही जाती है। उसका जन्म ही इसलिए हुआ है कि वह दूसरों के लिए जिए अन्यथा उसमें और पशु में कोई अंतर नही रह जाएगा।

महाकवि तुलसीदास का यह आदर्श वाक्य 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' इसी उद्‌देश्य की ओर संकेत करता है। मनुष्य को हमेशा सोचना चाहिए कि सभी चेतन जगत के प्राणी सुखी हों, क्योंकि परोपकार से बढ़कर न कोई पुण्य है न धर्म।

आज विश्व में समस्त व्यक्ति केवल अपने हित के बारें में सोचने लगे है। परिणामतः पूरा विश्व स्वार्थ केन्द्रित होता जा रहा है, यहाँ तक कि हम अपने पड़ोसी व्यक्ति के सुख–दुःख से भी परिचित नहीं है अतः चारो ओर अशांति, असुरक्षा, बढ़ती जा रही है। यदि

मनुष्य गहराई से अपने हित के अतिरिक्त दूसरों के हित के बारे में सोचेगा तो विश्व में शांति, सद्भाव स्थापित होगा और व्यक्ति स्वयं भी सुखी हो सकेगा। दूसरों के प्रति परोपकार का भाव सामाजिक–समन्वय संतुलन के लिए भी आवश्यक हैं

महर्षि दधीचि, राजा शिवि, दयानन्द सरस्वती हमारे सामने उदाहरण है – राजा शिवि ने तो पक्षी की रक्षा करने के लिए अपना माँस ही नहीं, पूरा शरीर दान कर दिया। दयानन्द सरस्वती ने स्वयं को विष देने वाले रसोइए को वहाँ से भाग जाने का सुझाव दिया। सुकरात ने दूसरों के हित के लिए स्वयं जहर पिया। ऐसी विभूतियाँ धन्य है जो दूसरों के लिए जीती हैं। तुलसीदास ने इसके लिए कहा है –

'परहित लागि तजहिं जो देही,
सन्तन सन्त प्रशंसहि तेही।

शब्दार्थ

शब्द	**अर्थ**	**Meaning**
पल्लवन	विस्तार	Elaboration
क्रमबद्ध	कतार में	linearly

उद्देश्य :–

1. छात्र प्रस्तुत पाठ से व्याकरण के अंश समझ सकेंगे।
2. छात्र पल्लवन का अर्थ समझ सकेंगे ।
3. छात्र पल्लवन की प्रक्रिया समझ सकेंगे।
4. विभिन्न प्रकार के पल्लवन के उदाहरण समझ सकेंगे।

पल्लवन का महत्व –

पल्लवन लेखन कला का एक महत्वपूर्ण अंग है जब किसी भावपूर्ण वाक्य, कथन, वाक्यांश, लोकोक्ति, दार्शनिक विचार, उक्ति, मुहावरे एवं पद्यात्मक सूक्ति को पल्ल्वन के माध्यम से विस्तारपूर्वक समझाया जा सकता है।

कथन (Statement) भावपूर्ण वाक्य (Emotionfilled sentence) वाक्यांश (Part of sentence) लोकोक्ति (Proverb) दार्शनिक विचार (Philosophical thought) उक्ति (statement) मुहावरे (Idiom) पद्यात्मक सूक्ति (Prose statement)

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–

1. पल्लवन का अर्थ है

   अ. संक्षिप्त ब. विस्तार स. सारांश द. निबंध

2. हिन्दी अर्थ के अनुसार पल्लवन

   अ. नये पत्ते निकलना ब. हरा–भरा स. विचार द. रचना का अभिवृद्धि तथा विकास

3. पल्लवन का अंग्रेजी अर्थ :–

   अ. समरी ब. इडियम स. एम्प्लीफिकेशन द. अपोजिट

4. पल्लवन के लिए सतत ..... की आवश्यकता है

   अ. अभ्यास ब. पढ़ने स. लिखने द. भावो

5. पल्लवन सदा पुरूष में लिखा जाता है :–

   अ. प्रथम ब. द्वितीय स. अन्य द. उत्तम

6. पल्लवन का मूलाधार है :–

   अ. चंदेल ब. छायावादी स. व्यास शैली द. गद्यात्मक शैली

7. पल्लवन की भाषा ..... होनी चाहिए।

   अ. सरल ब. क्लिष्ट स. संस्कृतनिष्ठ द. भावप्रधान

8. पल्लवन के लिए ..... का अनुच्छेद लिखना उचित है

   अ. एक तिहाई ब. पच्चीस–तीस पंकितयों स. दो तिहाई द. दस पंक्तियाँ

9. पल्लवन में आवश्यकता ..... कम होती है

अ. विवेचन एवं विश्लेषण ब. विवेचन तथा संश्लेषण स. तर्क और प्रमाण द. भाव तथा विचार

10. पल्लवन में ..... सम्मिलित किया जा सकता है

अ. उदाहरण ब. व्यवस्थितता स. संगठन द. शब्द कोष

उत्तर :– 1 ब, 2 द, 3 स, 4 अ, 5 स, 6 स, 7 अ, 8 ब, 9 ब, 10 अ

प्रश्न :– खाली स्थान भरों

1. पल्लवन विचारों का एक क्रमबद्ध .....है।

2. पल्लवन में ..... सी स्वंतत्रता नही होती ।

3. पल्लवन करना अर्थात् ..... करना नही है।

उत्तर :– (1) पुनर्प्रस्तुतीकरण (2) निबंध (3) भावार्थ

लघुउत्तरीय प्रश्न / एक शब्द प्रश्न उत्तर

प्र.1 पल्लवन का क्या अर्थ है ?

उ0 पल्लवन का सीधा स्पष्ट अर्थ है विस्तार या फैलाव।

प्र.2 मानक हिन्दी कोश के अनुसार पल्लवन का क्या अर्थ है ?

उ0 मानक हिन्दी कोश के अनुसार नई रचनाओं आदि से युक्त अभिवर्द्धन तथा विकास हुआ हो।

प्र.3 अंग्रेजी में पल्लवन का क्या अर्थ हैं ?

उ0 अंग्रेजी में इसे एम्प्लीफिकेशन Amplification कहते है।

प्र.4 पल्लवन का क्या आशय है ?

उ0 पल्लवन विचारों का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण है जिसमें उदाहरण के द्वारा कतिपय भाव, तथ्यों, विचारों एवं संकेतो का स्पष्टीकरण करना होता है।

प्र.5 पल्लवन के लिए क्या आवश्यक है ?

उ0 पल्लवन के लिए सतत अभ्यास आवश्यक है।

प्र.6 क्या पल्लवन निबंध हैं ?

उ0 नहीं पल्लवन निबंध नही है । निबंध में व्याख्या, विचार के पक्ष–विपक्ष के तर्क और प्रमाण प्रस्तुत कर स्वतंत्र लेखन कर सकते है किंतु पल्लवन में बंधे–बंधाए संकुचित एंव सीमित क्षेत्र में रहना पड़ता है।

प्र.7 पल्लवन में किसकी व्याख्या की जाती है ?

उ0 पल्लवन में मूलभाव या विचार की व्याख्या की जाती है ।

प्र.8 पल्लवन के विस्तार की क्या कोई सीमा निश्चत है ?

उ0 पल्लवन में दिये विषय पर पच्चीस–तीस पंक्तियो का एक अनुच्छेद लिखना उचित एवं पर्याप्त है।

प्र.9 पल्लवन में क्या सम्मिलित करना चाहिए।

उ0 पल्लवन में उदाहरण दृष्टांत को सम्मिलित करना चाहिए।

प्र.10 पल्लवन का प्रस्तुतिकरण कैसा होना चाहिए।

उ0 पल्लवन की भाषा अभिव्यक्ति स्पष्ट, मौलिक एवं सरल होनी चाहिए।

सारांश

पल्लवन विचारों का एक ऐसा क्रमबद्ध पुनर्प्रस्तुतिकरण है, जिसमें उदाहरण द्वारा बात को स्पष्ट करना होता है। पल्लवन स्वयं में एक स्पष्टीकरण है जिसमें मूलभाव/विचार की रक्षा की जाती है। किसी भी दिये हुए भाव को समझाकर लिखना पल्लवन है, जिसके लिए लगातार सतत् अभ्यास की आवश्यकता होती है।

यह निबन्ध, भावार्थ एवं व्याख्या से भिन्न प्रक्रिया है। इनमें अन्तर निम्नवत् है :–

1. निबन्ध में भाव के पक्ष – विपक्ष के तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत किए जाते हैं जो स्वयं में स्वतन्त्र लेखन है परन्तु पल्लवन में लेखक को सीमित क्षेत्र में रहना पड़ता है।
2. भावार्थ में मात्र केन्द्रीय भाव (Central theme) को पकड़ने की आवश्यकता होती है अतः यह स्पष्टतः संक्षिप्ति होता है। भावार्थ में भी विस्तार की सीमा होती है।

3. व्याख्या में प्रसंग निर्देश तुलना एवं टिप्पणी करने की स्वतन्त्रता हेाती है, जबकि पल्लवन में मूलभाव या विचार की व्याख्या की जाती है।
4. पल्लवन में विस्तार का भाव निहित है किन्तु यह विस्तार सीमा के परे (सीमा से बाहर) नहीं है। पल्लवन में विवेचन एवं विश्लेषण की आवश्यकता कम ही होती है क्योंकि इनसे विस्तार का भय होता है। हालांकि पल्लवन में गौण भावों (Secondary themes) एवं विचारों को भी ग्रहण किया जाता है।
5. सामान्यतः यह माना जाता है कि दिए गए विषय का पच्चीस–तीस पंक्तियों का एक अनुच्छेद उचित एवं पर्याप्त होता है।
6. पल्लवन अन्य पुरूष में होना चाहिए। व्यास शैली इसका आधार है।

Summary

Extension is an important segment of writing. We can explain elaborately any emotional sentence, statement, part of sentence, idioms, phrases and philosophical opinion etc through this. For the process of extension first of all we should study the whole sentence very carefully to ascertain the theme and subthemes and then each subtheme is elaborated properly.

इकाई–4 : हिन्दी भाषा

1. अफसर (निबंध) – शरद जोशी
2. हमारी सांस्कृतिक एकता (निबंध) – रामधारी सिंह दिनकर (एक भारत श्रेष्ठ भारत के अन्तर्गत)
3. संक्षेपण (संकलित)

अफसर

शरद जोशी

लेखक परिचय –

हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंगकार शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 को उज्जैन (म.प्र.) में हुआ । शरद जोशी की लोकप्रियता का कारण उनकी व्यंग्य की गुणवत्ता रही है। उन्होंने हिन्दी व्यंग्य को गंभीर सामाजिक सारोकारों से सम्बद्ध करके उसे फूहड़ हँसी और पैराडी के घटिया स्तर से उबारने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। व्यंग्य वह नायाब आईना है जो हमारे युग और जीवन के प्रत्येक पहलू के हर धब्बे और छिद्र से हमारा साक्षात्कार कराता है। व्यंग्य महज हँसन–हँसाने या मनोरंजन के लिये नही होता। वह व्यक्ति समाज और व्यवस्था को सुधारने का सशक्त अभियान है। शरद जोशी के व्यंग्य में कलात्मक विविधता का ऐसा स्रोत था कि भाषा, विषयवस्तु, कहने का ढंग और सामयिकता की समझ में उनके व्यंग्य अद्वितीय बन गए। उनके व्यंग्य में हास्य, कड़वाहट, मनोविनोद और चुटीलापन है जो उन्हें लोकप्रिय रचनाकार बनाता है। उन्होंने समसामयिक जीवन की विसंगतियों, त्रासदियों, एवं भ्रष्ट व्यवस्था के विरूद्ध जमकर लिखा और लोकप्रियता के विभिन्न आयाम गढ़े। उन्होंने कवि सम्मेलनो के बीच व्यंग्य निबन्ध पाठ की परंपरा भी आरंभ की। उन्होंने व्यंग्यात्मक गद्य को कविता की भांति श्रवणीय भी बना दिया। इस अर्थ में वे लेखक ही नही वाचक के रूप में भी श्रोताओं के मध्य लोकप्रिय हो गये। इनके दार्शनिक लोकप्रिय धारावाहिको का दूरदर्शन से प्रसारण भी हुआ। वे साहित्य को पत्रकारिता के निकट लाने में भी सफल रहे। उन्होने कई महत्वपूर्ण फिल्मों के लिये संवाद , पटकथा लेखन भी किया। उनका देहावसान 05 सितम्बर 1991 को हो गया।

नाटक – अंधो का हाथी, एक था गधा

उपन्यास – मैं, मैं और केवल मैं

कहानी संग्रह – तिलिस्म

पुरस्कार – पद्मश्री : भारत सरकार

चक्कलस सम्मान – मुंबई की संस्था द्वारा प्रदत्त

शरद जोशी सम्मान – म.प्र. शासन द्वारा प्रारंभ

मूल पाठ

नाव में अफसर के साथ बैठने से बेहतर है कि डूब मरिए, क्योंकि जब सुराख होगा, वह आपसे इसका स्पष्टीकरण माँगेगा। जब नाव हिचकोले ले तो इधर–उधर डोलेगी, वह आपको जलती आँखों से घूरेगा और डाँट लगाएगा और जब वह धीरे–धीरे सधी हुई लहरों पर बहती चली जाएगी तब ? तब वह आपका आभारी नहीं होगा। यह अपने को सफल अफसर मानेगा, जिसके योग्य प्रशासन में नाव ठीक चल रही है।

चॉदनी रात है। हाव है। लहर है। चारों तरफ वही अमृत बिखरा है जिसमें रोमांस पनपता है और कविताएँ लिखी जाती हैं पर नाव में एक अफसर बैठा है। हो सकता है इस संगीतमय वातावरण में वह किसी फाइल का किस्सा छेड़ दे उस फाइल का जो इस समय मुख्य सचिव के पास है, जिसमें मूल टीप अफसर की है और जो कैबिनेट के सामने जाने वाली है।

मन करता है नाव से कूद पडे, क्योंकि दुनिया की जिन झंझटों से मुक्ति पाने के लिए आप नाव में बैठे थे, वे इस काव्यमय वातावरण में भी ज्यों–की–त्यों हैं। गलती वास्तव में आपकी है। आप नाव में अफसर के साथ बैठे ही क्यों? अफसर अफसर होता है और वह जितना दफ्तर में अफसर होता है उतना ही नाव में होता है। वह बोर करता है, पर वह इतना सहज बोर है कि बेचारा नहीं जानता कि बोर है और वह यह भी नहीं जानता कि नाव में बैठा है, जब तक आप उसे 'मेमो' न थमा दें कि सर, यह चाँदनी रात है और जो यह ठण्डी हवा चल रही है, भगवान के बजट में इसका प्रावधान है और हुजूर, श्रीमान् हेड आफिस से आर्डर हुए हैं कि आप पूनम की रात नाव पर बैंठकर सैर को जाएँ।

लोग सोचते हैं, अफसर किस मिट्टी का बना है ? मिट्टी तो देशी है, सिर्फ साँचा विदेशी है, जिसमें अफसर ढलता है। अफसर ढलकर तैयार होता है या जनम से अफसर हो जाता है, यह बहस का विषय है। यह सच है कि कुछ लोग पैदायशी अफसर होते हैं। अफसर से रिटायर होने के बाद भी आदमियों में अफसरत्व कायम रहता है, जो घर के लोगों को परेशान करता है। वह परम अवस्था जब पत्नी एक न सुलझने वाली चिर पेंडिग साक्षात् फाइल की तरह नजर आती है और हर बच्चा अपने–आपमें एक केस लगता है, जो हमेशा अनुशासन भंग करता है, पर जिसे न 'सस्पेंड' किया जा सकता है और न उसका 'प्रमोशन' रोका जा सकता है। वे घर को एक दफ्तर की तरह चलाते हैं और जिस तरह दफ्तर वे कभी ठीक नहीं चला पाए, उसी तरह घर भी नहीं चला पाते। जब तक चार सब्जी वालों से मौखिक टेंडर न ले लें, वे कद्दू नहीं खरीदते और जब तक वे 'सेक्शन' नहीं दे, प्यार नहीं करते।

वर्षो हो गए। कितने अफसर आए और चले गए। कितनी कुर्सियाँ उनके वजन से चरमराकर टूटीं और फेंक दी गयीं, पर वजन वही रहा। फाइलें उसी तरह बनती और विकसित होती रहीं। अफसर जाता है, पर अफसरी बनी रहती है। वह एक आत्मा है, एक शरीर के रिटायर होने के बाद नया शरीर ग्रहण कर लेती है। अफसर नहीं जाता, वह कायम रहता है। जिस तरह राजा नहीं मरता, उसी तरह अफसर भी नहीं मरता। वह विद्यमान रहता है। पेड़ उगते हैं और उनसें टेबल – कुसी बनती है। कागज का कारखाना चलता है और फाइलों तैयार होती रहती है है पता नहीं जब भोज– पत्र पर लिखा जाता था तब फाइलें कैसी होती होगीं अब उसका सवाल नहीं क्योंकि कागज की कमी नहीं और अफसरों की कमी नहीं। जैसे–जैसे कागज बढेंगे, नए 'सेक्शन' खुलेंगे और नित नए अफसर कुर्सी पर यों शोभा देंगे जैसे गमले में पौधा, जो झूमता रहता है, खिलता भी रहता है, पर जड़ से मजबूत होता है, हिलता नहीं। देश का विकास होगा, यानी अफसरों का विकास होगा। एक गड्ढा भी बिना दस्तखत के नहीं खुद सकता, सो ज्यादा–से–ज्यादा अफसर चाहिए और वे आयेंगे। विकास हो–न–हो, अफसर आयेंगे।

हर नया अफसर अपने में गमक लिए रहता है। जब आता है चमन में बहार बनकर आता है और जब जाता है मर्तबान का अचार बनकर जाता है।

कभी अफसर को जाते हुए देखिए। तबादले का दृश्य बड़ा रोचक होता है। कहा जाता है कि इस मौके पर हम क्या कहें। एक तरफ हमें बड़ा अफसोस है कि वर्मा साहब

आज हमारे बीच से जा रहे हैं और दूसरी तरफ हमें खुशी भी है कि शर्मा साहब हमारे बीच आ रहे हैं। विदाई का भाषण देने वाले के सामने धरम–संकट रहता है। नए अफसर को मक्खन लगाने और जाते हुए के लिए शाब्दिक अफसोस प्रकट करने की मिश्रित अभिव्यक्ति के लिए उसे शब्द नहीं सूझते। कुछ शब्द हैं जो कह दिए जाते हैं और जाता हुआ अफसर संतोष कर लेता है। एक प्लेट से चमचा कूदकर दूसरी प्लेट में आ जाता है। नया अफसर यानी सब कुछ नया। यहाँ की टेबल वहाँ और वहाँ की टेबल यहॉ। नए अफसर को क्रोटन पसन्द है, सो पुराने अफसर के कैक्टस गए भाड़ में। 'पंक्चुअलटी' पर विशेष जोर। साढ़े दस यानी साढ़े दस। बड़े बाबू की परेड और चपरासी का ओवरटाइम। नया अफसर आया है तो बिगड़ी दुरूस्त होगी, पर यह सारी चुस्ती शुरू के दो माह। बाद में वही ढर्रा। तब तक बड़े बाबू और अफसर में सूत्र जुड़ जाते हैं और दुरूस्त गाड़ी फिर उसी चाल से चलने लगती है जैसे बिगड़ी गाड़ी चलती है।

अफसर के शरीर की कोई रग सरकार के सूत्रों से अलग काम नहीं करती। फाइल, मीटिंग, दौरा, रिपोर्ट, डीओ, रिमाइण्डर, मेमो, आर्डर की दुनिया में बॅधा वह सहानुभूति का पात्र है। सब कुछ 'रूटीन' है। सुबह सूर्य का उगना 'रूटीन' है और देर रात चॉद का डूबना 'रूटीन' है। ऑधी आती है, फाइल हो जाती है। फूल खिलता है, स्टोर में जमा हो जाता है। कुछ 'अर्जेन्ट' होता है, बशर्ते बजट में गुंजाइश हो। चार पैसे की मटकी ठोक–बजाकर ली जाती है पर मटकी ठोंकने–बजाने के सरकारी तरीके अलग ही हैं, जिन्हें अफसर जानता है।

अफसर से दोस्ती नहीं जा सकती। उससे रिश्ता किया जा सकता है क्योंकि रिश्ते में नियम होते हैं, दोस्ती में नियम नहीं होते। अफसर के साथ नहीं चल सकते, उसके पीछे चलना होता है। कहावत है, अफसर के सामने और घोड़े के पीछे नहीं आना चाहिए। पुराने जमाने में जब अफसर घोड़े पर बैठकर दौरा करते थे तब पता नहीं लोग क्या करते होंगे क्योंकि तब आगे रहें या पीछे, हालत बिगडने का अन्देशा हरदम बना रहता है। तब किनारा काटकर बगल में रहना ही एक नीति रही।

अफसर डॉटता है, नेता सारे देश को एक साथ डॉटता है और अफसर हर व्यक्ति को अलग–अलग बुलाकर डॉटता है। हम डॅटते हैं। हम डॅटे हुए लोग हैं, जो डॉटने वालों के अधीन सटे हुए काम करते हैं। कुर्सी बनी रहेगी, पर कब खाट खड़ी हो जाएगी, कह नहीं सकते। वह गजटेड है यानी गजट में है और हम गजट के बाहर हैं, फिर भी फाइल

में है और फीते से बॅधे हैं। फीता हमारी आत्मा पर लिपटा है और लपेटने वाला है अफसर। अफसर सब जगह है। वह 'ऑन ड्यूटी' सर्वव्यापी है। वह 'रेडीमेट' मसीहा है, 'एक्टिव' शहीद है, फुर्तीला कछुआ है। वह ओखली में सिर रख मूसलों को अनुशासन में रखता है। वह हाथ को बिना आरसी के नहीं देखता और सत्य के प्रमाण मॉगता है। अफसर, अफसर है। वह अकेला अफसर है। आपके साथ अफसर है। सुबह अफसर है। शाम अफसर है। वह जीता नहीं, जीवन को 'डील' करता है, वह एक निश्चित तरीके से। वह सहज परिभाषित है और अनुमान से परे नहीं। फिर भी जिज्ञासा का केन्द्र है, क्योंकि प्रशासन के ब्रह्य में कार्य – कारण सम्बंध पहचानता है। उसके साथ रहकर क्या कीजिएगा ? वह जहॉ है, जितना है, मेरी समझ में काफी है। उसे वहीं रहने दें।

अफसर अगर इस किनारे जा रहा है तो आप उस किनारे जाइए, इसी में आपकी खैर है।

शब्दार्थ

शब्द	**अर्थ**	**Meaning**
व्यंग्य	विनोदपूर्ण ताने	Sarcasm
लाल फीताशाही	सरकारी तंत्र की लेटलतीफी	Redtapism
परोक्ष		Indirect
मर्तबान	छिपा हुआ/अप्रकट बरनी	vessel

विशेष प्रयोग :–

गमक	:–	सुगंधित हो जाना
धरमसंकट	:–	बड़ी मुसीबत
खाट खड़ी हो जाना	:–	भारी मुश्किल होना
सर्वव्यापी	:–	सब ओर रहने वाला
जिज्ञासा	:–	किसी विषय को जानने की लालसा

चाटुकारिता, :– घी, मक्खन लगाकर बात करना

उद्देश्य :–

1. छात्र लेखक के जीवन परिचय एवं हिन्दी की एक विधा 'व्यंग्य' से परिचित हो सकेंगे।
2. छात्र अफ़सर कहानी के माध्यम से अफ़सर की अफ़सरी की अकड़ से परिचित होंगे।
3. छात्र व्यंग्य के द्वारा अफ़सर की तुलना कर सकेंगे।
4. छात्र व्यंग्य के द्वारा अफ़सर की चाटुकारिता को जान सकेंगे।

केन्द्रीय भाव :–लेखक ने अफ़सर कहानी के माध्यम से संस्थानो में व्याप्त चाटुकारिता तथा लालफीताशाही पर करारा व्यंग्य किया है, जिससे समाज को सुधरने की परोक्ष शक्ति एवं प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अफसर' व्यंग्य के लेखक है

   (अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ब) श्रीलाल शुक्ल (स) शरदजोशी (द) त्यागी

2. लेखक का जन्मस्थान मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है।

   (अ) ओंकारेश्वर (ब) उज्जैन (स) साँची (द) महेश्वर

3. लेखक को ..... पुरस्कार से सम्मानित किया गया

   (अ) पद्मविभूषण (ब) पद्मश्री (स) भारतरत्न (द) दादासाहेब फाल्के

4. चाँदनी रात में अफसर किस सवारी की सैर कर रहे है

   (अ) घोड़ागाड़ी (ब) मोटरगाड़ी (स) नाव (द) जीप

5. अफसर घर को चलाते है।

(अ) दफ्तर की तरह (ब) एक मोटर साइकिल की तरह (स) एक होटल की तरह (द) एक स्कूल की तरह

6. नया अफसर आने पर बनकर आता है

(अ)मर्तबान (ब) चमन में बहार (स) वासी कढ़ी का उबाल(द) कैक्टस

7. अफसर प्रत्येक समय पर ..... है

(अ) अफसर (ब) रसोइया (स) बह्म (द) चालक

8. अफसर हर व्यक्ति को डाटता है।

(अ) हर व्यक्ति को रोज डॉटता हे

(ब) हर व्यक्ति को अलग–अलग बुलाकर डाटते है।

(स) चाय पीता जाता है और डॉटता जाता है।

(द) पत्नी से डॉट खाकर आता है और कर्मचारियो से उसका बदला लेता है।

9. अफसर के साथ बैठने से बेहतर है कि

(अ) डूब मरिए (ब) घर में टी वी देखिए

(स) बच्चों के साथ पिकनिक मनाइए (द) दोस्तो के साथ गप्पे मारिए

10. नये अफसर के आने पर उसका विशेष जोर होता है

(अ) डिसीजन (ब) अर्जेन्ट वर्क (स) पंक्चुअलटी (द) डेवलपमेंट

उत्तर :– 1 स, 2 ब, 3 ब, 4 स, 5 अ, 6 ब, 7 अ, 8 ब, 9 अ, 10 स

प्रश्न :– सही/गलत लिखिए

1. अफसर घर को घर की तरह चलाते है।

2. अफसर को देखकर एक किनारे हो जाएँ।

3. अफसर के सामने तथा घोड़े के पीछे नही रहना चाहिए।

उत्तर :– गलत, सही, सही

लघुउत्तरीय प्रश्न / एक वाक्य प्रश्न

प्र.1 अफ़सर के लेखक शरद जोशी की लेखन शैली की विशेषताएँ बताएँ।

उ0 उनकी शैली में व्यंग्य, हास्य, कड़वाहट, मनोविनोद और चुटीलापन है।

प्र.2 अफ़सर के साथ कहाँ की सैर कर रहे थे ?

उ0 चांदनी रात में अफ़सर के साथ नौका विहार कर रहे थे।

प्र.3 नाव में अफ़सर कैसा व्यवहार करता है।

उ0 नाव में भी अफ़सर दफ्तर की तरह व्यवहार करता है।

प्र.4 अफ़सर के रिटायर होने के बाद अफ़सर क्या करता है।

उ0 अफ़सर के रिटायर होने के बाद भी उसमें अफ़सरत्व कायम रहता है।

प्र.5 अफ़सर की परमावस्था कब होती है।

उ0 परमावस्था तब होती है, जब पत्नी एक न सुलझने वाली चिर पेंडिग साक्षात् फाइल की तरह नजर आती है ।

प्र.6 अफ़सर दैनिक जीवन में कैसा व्यवहार करते हैं।

उ0 अफ़सर रोज घर पर भी दफ्तर की तरह वयवहार करते है, सब्जी खरीदने के लिए भी जब तक मौखिक टेंडर न लें, वे सब्जी नही खरीदते।

प्र.7 लेखक ने वर्षो तक चलने वाली अफ़सरी प्रथा का कैसे वर्णन किया है।

उ0 वर्षो अफ़सरी चलती है। एक अफसर जाता है दूसरा आता है। वह एक आत्मा है, एक शरीर के जाने के पश्चात् नया शरीर ग्रहण करती है।

प्र.8 अफ़सर के आने जाने को क्या कहा गया है।

उ0 अफ़सर जब आता है चमन में बहार बनकर आता है जब जाता है मर्तबान का अचार बनकर जाता है।

प्र.9 अफ़सर के बिदाई भाषण का क्या दृश्य होता है।

उ0 बिदाई भाषण देने वाले के सामने धर्म संकट रहता है। नए अफ़सर को मक्खन लगाये या जाते हुए को शाब्दिक अफसोस प्रकट करें। एक प्लेट से चमचा दूसरे प्लेट में रखा जाता है।

प्र.10 अफ़सर से दोस्ती कर सकते है या रिश्ता बना सकते है।

उ0 अफ़सर से दोस्ती नही रिश्ता बना सकते है क्योंकि दोस्ती में नियम नही होते, रिश्तो में नियम होते है।

सारांश

प्रस्तुत व्यंग्य में शरद जोशी जी ने अफ़सर (अधिकारी वर्ग) से सावधान रहने को कहा है। जब आप कोई श्रेष्ठ कार्य करेंगे, तो आपकी प्रशंसा नहीं होगी एवं वह स्वयं को श्रेय देगा कि उसके कुशल नेतृत्व में श्रेष्ठता स्थापित हो रही है, परन्तु यदि आपसे यदि कोई मामूली सी भी त्रुटि/गलती हो जाए तो वह आपसे स्पष्टीकरण (explanation call) मांगेगा। गलती से भी अपने अफ़सर के साथ दैशाटन (पिकनिक/Picnic) मनाने न जाएं। अफ़सर की मिट्टी तो देशी है परन्तु सॉचा विदेशी है। वह घर व बाहर को दफ्तर की तरह चलाने का कार्य करता है। अफ़सर आते जाते रहते हैं, परन्तु अफ़सरी बनी रहती है। देश का विकास हो न हो, अफ़सर आयेगे। अफ़सर के तबादले (स्थानान्तरण/transfer) का हश्य बड़ा ही रोचक होता है। वक्ता हेतु धर्मसंकट की स्थिति होती है। नये को मक्खन लगाने एवं पुराने के लिए शाब्दिक अफ़सोस प्रकट करने के लिए कुछ शब्द नहीं सूझते। नए अफ़सर के आने पर सब कुछ चुस्त दुरूस्त, परन्तु कुछ दिन बाद वही पुराना ढर्रा बरकरार रहता है।

अफसर से दोस्ती नहीं की जा सकती, रिश्ता किया जा सकता है क्योंकि रिश्ते में नियम होते हैं, दोस्ती में नियम नहीं होते। अफसर के साथ भी नहीं चल सकते, उसके पीछे चलना होता हैं। वह अलग–अलग व्यक्ति को अलग–अलग बुलाकार डांटता है। अतः अफसर जहाँ है उसे कहीं रहने दें, वह जहाँ है, जितना है, मेरी समझ में काफी है, उसे वहीं रहने दे। अफसर अगर इस किनारे जा रहा है तो आप उस किनारे जाइए, इसी में आपकी खैर है।

Summary - The article 'Afsar' is a narration of the State of affairs in an office where the officer dictates his terms very authoritatively. The Sarcastic tone of the Author is very humourous and effective. The real life sketches are quite illustrative in its objective. The Author advices that one should maintain distance with the officer for his own wellbeing.

हमारी सांस्कृतिक एकता (निबंध)भारत एक है

रामधारी सिंह 'दिनकर'

लेखक परिचय – रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया ग्राम में हुआ था। विद्याध्ययन के दौरान उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, बंगाली, उर्दू एवं अंग्रेजी साहित्य का अभ्यास किया। वे अधिकांशतः इकबाल, रविन्द्रनाथ टैगोर कीट्स एवं मिल्टन की रचनाओ से प्रभावित हुए थे। एक छात्र के रूप में दिनकर जी आर्थिक समस्याओं से जूझते थे, बाद मे अपनी कविताओं के माध्यम से गरीबी के प्रभाव को समझाया। ऐसे ही वातावरण में पले–बढ़े वे आगे चलकर राष्ट्रकवि बने। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी साहित्य के सूर्य है। उन्हें 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने गद्य एवं पद्य दोनों में समान रूप से स्तरीय लेखन किया।

कृतियां : रश्मिरथी, उर्वशी, रेणुका, धूप और धुँआ, परशुराम की प्रतीक्षा इत्यादि प्रमुख है।
सम्मान : पदम भूषण (1959)
ज्ञानपीठ पुरस्कार (1972)
वे भारतीय संस्कृति, एकता, अखण्डता व सांस्कृतिक विरासत के अद्‌भुत पुरोधा थे। प्रस्तुत निबंध भारत एक है दिनकर जी की पुस्तक 'हमारी सांस्कृतिक एकता' से लिया गया हैं।

मूल पाठ

अक्सर कहा जाता है कि भारतवर्ष की एकता उसकी विविधताओं में छिपी हुई है और यह बात जरा भी गलत नहीं है, क्योंकि अपने देश की एकता जितनी प्रकट है, उसकी विविधताएँ भी उतनी ही प्रत्यक्ष हैं।

भारतवर्ष के नक्शे को ध्यान से देखने पर यह साफ दिखाई पड़ता है कि इस देश के तीन भाग प्राकृतिक दृष्टि से बिल्कुल स्पष्ट हैं। सबसे पहले तो भारत का उत्तरी भाग है जो हिमालय के लगभग दक्षिण से लेकर विन्ध्याचल के उत्तर तक फैला हुआ है। उसके बाद, विन्ध्य से लेकर कृष्णा नदी के उत्तर तक का वह भाग है, जिसे हम दक्खनी प्लेटो कहते हैं। इस प्लेटो के दक्षिण, कृष्णा नदी से लेकर, कुमारी अन्तरीप तक का जो भाग है, यह प्रायद्वीप जैसा है। अचरज की बात है कि प्रकृति ने भारत के जो ये तीन खण्ड किये

हैं, वे ही खंड भारतवर्ष के इतिहास के भी तीन क्रीड़ास्थल रहे हैं। पुराने समय में उत्तर भारत में जो राज्य कायम किये गए, उनमें से अधिकांश विंध्य की उत्तरी सीमा तक ही फैलकर रह गये। विंध्य को लाँघ कर उत्तर भारत को दक्षिण भारत से मिलाने की कोशिशें तो बहुत की गई, मगर इस काम में कामयाबी किसी–किसी को ही मिली। कहते हैं, पहले–पहल अगस्त्य ऋषि ने विन्ध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था। फिर भगवान श्री रामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करने के सिलसिले में विन्ध्याचल को पार किया। महाभारत के जमाने में उत्तरी और दक्षिणी भारत के अंश एक राज्य के अधीन थे या नहीं इसका कोई पक्का सबूत नहीं मिलता।

महाभारत–काल में भी कायम थी और दोनों भागों के लोग आपस में मिलते–जुलते रहते थे। महाराज युधिष्ठिर के राजसूय–यज्ञ में दक्षिण के राजे भी आये थे और कुरूक्षेत्र के मैदान में जो महायुद्ध हुआ था, उसमें भी दक्षिण के वीरों ने हिस्सा लिया था, इसका प्रमाण महाभारत में ही मौजूद है। इसी तरह चन्द्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य और उनके बाद मुगलों ने भी इस बात के लिए बड़ी कोशिश की कि किसी तरह सारा देश एक शासन के अधीन लाया जा सके और उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली, लेकिन भारत के इतिहास की एक शिक्षा यह भी है कि इस देश को एक रखने के काम में यहाँ के राजाओं को जो भी सफलता मिली, वह ज्यादा टिकाऊ नहीं हो सकी। इस देश के प्राकृतिक ढाँचे में ही कोई ऐसी बात थी, जो सारे देश को एक रहने देने के खिलाफ पड़ती थी। यही कारण था कि जब भी कोई बलवान् और दूरदर्शी राजा इस काम में लगा, सफलता थोडी बहुत उसे जरूर मिली, लेकिन स्वार्थी, अदूरदर्शी और कमजोर राजाओ के आते ही देश की एकता टूट गई और जो कठिनाई विन्ध्य के उत्तर को विन्ध्य के दक्षिण से मिलाने में हुई, वही कठिनाई कृष्णा नदी से उत्तर के भाग के उसके दक्षिण के भाग से मिलाकर एक रखने में होती रही।

धरती की रूपरेखा और जलवायु का प्रभाव उस पर बसने वाले लोगों के शरीर और मस्तिष्क दोनों पर पड़ता है। पहाड़ और रेगिस्तान की जिंदगी जरा मुश्किल होती है। यही कारण है कि उनमें बसने वाले लोग आजाद तबियत के होते हैं, क्योंकि प्रकृति की कठिनाइयों को झेलते–झेलते उनका शरीर कड़ा और मन साहसी एवं निर्भीक हो जाता है। भारतीय इतिहास में मराठों और राजपूतों की वीरता जो इतनी प्रसिद्ध हुई, उसका एक कारण यह भी है कि बचपन से ही मराठों को पहाडी तथा राजपूतों को पहाडी और

रेगिस्तानी, दोनों ही प्रकार के जीवन से संघर्ष करने का मौका हासिल था। इसके विपरीत नदियों के पठारों में रहने वाले लोग, किसान–तबियत के हो जाते है, क्योंकि पठार की भूमि उपजाऊ होती है और वहाँ रहने वालों को जीने के लिए ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं होती यही कारण है कि जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही लोगों के पहनावे, ओढ़ावे और खान–पान में भी भेद हो जाता है, जो भेद भारत में बहुत ही प्रत्यक्ष है। असल में इन भेदों को मिटाकर अगर हम कोई एक राष्ट्रीय रूप में चलाना चाहें तो उससे अनेक लोगों को बहुत ज्यादा तकलीफ हो जायेगी। उदाहरण के लिए अगर हम रोटी और उड़द की दाल अथवा रोटी और माँस को देश का राष्ट्रीय भोजन बना दें, तो पंजाबी लोग तो मजे में रहेंगे, लेकिन बिहार और बंगाल के लोगों का हाल बुरा हो जायेगा। इसी तरह, अगर हम यह कानून बना दें कि हिन्दुस्तानी को चप्पल पहनना ही होगा तो काश्मीर के लोग घबरा उठेंगे, क्योंकि पहाड पर चलने वालों के पाँव चप्पलों में ठीक–ठीक नहीं चल सकते। पहनावे–ओढावे में भी जगह–जगह भिन्नता मिलती है और पोशाकें भी जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही यहाँ तरह –तरह की फैली हुई है।

मगर, विविधता का सबसे बडा लक्षण यह है कि हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ फैली हुई हैं और इनके कारण हम आपस में भी अजनबी के समान हो जाते हैं। उत्तर भारत में तो गुजरात से लेकर बंगाल तक की जनता के बीच संपर्क खूब हुआ है, इसलिए वहॉ भाषा–भेद की कठिनाई उतना नहीं अखरती। लेकिन अगर कोई उत्तर–भारतवासी दक्षिण चला जाए अथवा कोई दक्षिण भारतीय उत्तर चला आये और वह अपनी मातृभाषा के सिवा अन्य कोई भाषा नहीं जानता हो तो वह, सचमुच बडी मुश्किल में पड जायेगा। भाषा–भेद की वह समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है। राष्ट्रीय एकता में पहले यह बाधा थी कि पहाडों और नदियों को लाँघना आसान नहीं था। मगर, अब विज्ञान के अनेक सुगम साधनों के उपलब्ध हो जाने से यह संभव है।

इसी प्रकार पहले जब देश के एक कोने में विद्रोह होता था तब दूसरे कोने में पड़ा हुआ राजा जल्दी से फौजें भेजकर उसे दबा नहीं सकता था और विद्रोह की सफलता से देश की एकता टूट जाती थी। लेकिन आज तो देश के चाहे जिस कोने में भी विद्रोह हो हम दिल्ली से फौज भेजकर उसे तुरंत दबा सकते हैं। प्राकृतिक बाधाएँ अब खत्म हो गई हैं। यही कारण है कि आज हमारी एकता इतनी विशाल हो गई है जितनी विशाल वह रामायण, महाभारत, मौर्य और मुगल जमानों में कभी नहीं हुई थी। अब भी जो क्षेत्रीय जोश

या प्रांतीय मोह बाकी है, वह धीरे–धीरे कम हो जायेगा, क्योंकि इस जोश को पालने वाली प्राकृतिक बाधायें अब शेष नहीं है। मगर, भाषा–भेद की समस्या जरा कठिन है और उसका हल तभी निकलेगा जब हिन्दी भाषा क्षेत्र में अहिन्दी भाषाओं तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का अच्छा प्रसार हो जाये। सौभाग्य की बात है कि इस दिशा में काम शुरू हो गए हैं और कुछ समय बीतते–बीतते हम इस बाधा पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

यह तो हुई भारत की विविधता की कहानी। अब जरा यह देखने की कोशिश करनी चाहिये कि इस विविधता के भीतर हमारी एकता कहाँ छिपी हुई है। सबसे विचित्र बात तो यह है कि यद्यपि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं (जिनमें 14 भाषाएँ) अब यह संख्या सत्रह से अधिक है (सिन्धी, राजस्थानी आदि को भी भारत सरकार ने स्वीकृति दे दी है) तो ऐसी है, जिन्हें भारत सरकार ने स्वीकृति दे रखी है। ये भाषाएँ हैं – हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड, उडिया, असमी, पंजाबी, काश्मीरी और संस्कृत)। किन्तु भिन्न–भिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी भावधारा एक है तथा हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथा–वस्तुओं को लेकर अपनी–अपनी बोली में साहित्य रचना करते है। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्रायः सभी भाषाओं के बीच अद्‌भुत एकता मिलेगी, क्योंकि ये दोनों काव्य सबके उपजीव्य रहे हैं। इसके सिवा, संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था, उसका प्रभार भी सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है।

अतएव, भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी, अन्त में, जाकर एक ही साबित होते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि फारसी लिपि को छोड दे तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला एक ही है, यद्यपि वह अलग–अलग लिपियों में लिखी जाती हैं। जैसे हम हिन्दी में क, ख, ग आदि अक्षर पढते हैं वैसे ही ये अक्षर भारत की अन्य लिपियों में भी पढे जाते हैं, यद्यपि उनके लिखने का ढंग और है।

हमारी एकता का दूसरा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण, चाहे जहाँ भी चले जायें, आपको जगह–जगह पर एक ही संस्कृति के मदिंर दिखायी देंगे, एक ही तरह के आदमियों से मुलाकात होगी जो चन्दन लगाते हैं, स्नान–पूजा करते हैं, तीर्थ–व्रत में विश्वास करते हैं अथवा जो नयी रोशनी को अपना लेने के कारण इन बातों को कुछ शंका की दृष्टि से देखते हैं। उत्तर भारत के लोगों को जो स्वभाव है, जीवन को देखने की जो

उनकी दृष्टि है, वही स्वभाव और वही दृष्टि दक्षिण वालों की भी है। भाषा की दीवार के टूटते ही, उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय के बची कोई भी भेद नहीं रह जाता है और वे आपस में एक दूसरे के बहुत करीब आ जाते हैं। असल में भाषा की दीवार के आर–आर बैठे हुए भी वे एक ही हैं। एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आजादी के लिए एक होकर लडाई लडी और आज उनकी पार्लमेंट और शासन–विधान भी एक हैं।

और जो बात हिन्दुओं के बारे में कही जा रही है, वही बहुत दूर तक मुसलमानों के बारे में भी कही जा सकती है। देश के सभी कोनों मे बसने वाले मुसलमानों के भीतर जहॉ एक धर्म को लेकर एक तरह की आपसी एकता है, वहॉ वे संस्कृति की दृष्टि से हिन्दुओं के भी बहुत करीब हैं। इसके सिवा अनेक सदियों तक हिन्दू–मुसलमान साथ रहते आये हैं और इस लम्बे संपर्क के फलस्वरूप उनके बीच संस्कृति और तहजीब की बहुत–सी समान बाते पैदा हो गयी हैं जो उन्हें दिनों दिन आपस में नजदीक लाती जा रही हे।

जो हिन्दू–समाज में मिलेगी, जो मुस्लिम समाज में मिलेगी, जो पारसी या क्रिस्तानी समाज में मिलेगी, लेकिन धर्म के केन्द्र से बाहर जो संस्कृति की विशाल परिधि है, उसके भीतर बसने वाले सभी भारतीयों के बीच एक तरह की सांस्कृतिक एकता भी है जो उन्हें दूसरे देशों के लोगों से अलग करती है। संसार के हर एक देश पर अगर हम अलग–अलग विचार करें तो पता चलेगा कि प्रत्येक देश की एक निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है जो उस देश के प्रत्येक निवासी की चाल–ढाल, बावचीत, रहन–सहन, खान–पान, तौर–तरीके और आदतों से टपकती रहती है। चीन से आने वाला आदमी विलायत से आने वालों के बीच नहीं छिप सकता और यद्यपि अफ्रीका के लोग भी काले ही होते हैं, मगर वे भारतवासियों के बीच नहीं खप सकते। भारतवर्ष में भी यूरोपीय पोशाके, खूब चली हूई हैं, लेकिन, यूरोपीय लिबास में सजे हुए हिन्दुस्तानियों के बीच एक अंग्रेज को खडा कर दिया जाए, तो वह आसानी से अलग पहचान लिया जाएगा। इसी तरह भारत के हिन्दू ही नहीं बल्कि, हिन्दुस्तानी क्रिस्तान, पारसी और मुसलमान भी भारत से बाहर जाने पर आसानी से पहचान लिये जाते हैं कि वे हिन्दुस्तानी हैं और यह बात कुछ आज पैदा नहीं हुई है, बल्कि इतिहास के किसी भी काल में भारतवासी ही थे तथा अन्य देशों के लोगों के बीच वे खप नहीं सकते थे। यही वह सांस्कृतिक एकता या शक्ति है जो भारत को एक रखे हुए है। यही वह विशेषता है जो उन लोगों में पैदा होती है जो एक

देश में रहते हैं, एक तरह की जिन्दगी बसर करते हैं और एक तरह के दर्शन और एक तरह की आदतों का विकास करके एक राष्ट्र के सदस्य हो जाते हैं।

भारत के भीतर, यद्यपि प्रांतीय भेदों को लिये हुए अनेक क्षेत्र मौजूद है, लेकिन इन तमाम भिन्नताओं को समेटकर भारत को एक पूर्ण देश बनाने का काम भी हमारे भूगोल ने ही किया है। भारत में जो एक समान भाव है, वह हमारे भूगोल की देन है। भीतर से कुछ–कुछ बँटा हुआ और बाहर से बिलकुल एक, भारत की यह विशेषता बहुत पुरानी है। यह ठीक है कि प्रांतीयता के जोश में आकर कोई–कोई क्षेत्र राष्ट्र की एकता से अलग होकर अपना स्वंतत्र अस्तित्व कायम करने के लिए जब–जब कोशिश करते रहे हैं, मगर यह भी ठीक है कि सारे देश को एकछत्र–शासन (चक्रवर्ती–राज्य) के अन्दर लाने का सपना भी यहाँ बराबर मौजूद रहा है। देश की इस मौलिक एकता के भाव ने प्रांतीयता के सामने कभी भी हार नहीं मानी। भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी शिक्षा यह है कि इस देश में राष्ट्रीयता और प्रांतीयता के बीच बराबर संघर्ष चलता रहा है। कभी तो ऐसा हुआ कि किसी बलवान राजा के अंदर देश एक हो गया और कभी ऐसा हुआ कि इस एकता में कहीं पर प्रांतीयता ने छेद कर दिया और फिर उस छेद को भरने की कोशिश की जाने लगी।

प्राचीन भारत में चक्रवर्ती सम्राट कहलाने के लिए यहाँ के राजे अक्सर बडी–बडी लडाइयॉ लडा करते थे। मगर, इन लड़ाइयों के भीतर सिर्फ भाव नहीं था कि राजे अपना प्रभुत्व फैलाना चाहते थे। कुछ यह बात भी थी कि इस देश की भौगोलिक परिस्थिति ही सारे देश को एक देखना चाहती थी और भौगोलिक परिस्थिति की इसी प्रेरणा से देश के सभी बड़े राजे इस बात के लिए उद्योग खड़ा कर देते थे कि सारा देश उनके अधीन एक हो जाए।

भूगोल ने भारत को जो चौहद्दी बाँध दी है उसकी साथ दस्तदाजी करने की कोशिश कभी भी कामयाब नहीं हुई। सीमा के बाहर की दुनिया से भारत को अलग रखकर उसे भीतरी एकता के सूत्र में बाँधने की प्रेरणा यहाँ भूगोल की सबसे बड़ी शिक्षा रही है और इसी प्रेरणा के कारण वे लोग बराबर असफल रहे जो देश के भीतर के किसी भाग को, प्रांतीयता के जोश में आकर, स्वंतत्र राज्य का रूप देना चाहते थे। भारत का कोई भी भाग समूचे भारत से अलग जाकर स्वतंत्र होने की चेष्टा करे यह अस्वाभाविक बात है।

जो भारत की चौहद्दी से बाहर पड़ता है और जिसे भारत का भूगोल अपने भीतर पचा नहीं सकता। दुनिया के हिस्से को काटकर उसे भारत के साथ मिलाए रखने का काम उतना ही अप्राकृतिक साबित हुआ है जितना कि हिन्दुस्तान के किसी अंग को काटकर उसे अलग जिंदा रखने की कोशिश। मौर्यों ने एक समय कन्धार (अफगानिस्तान) को भारत में मिला लिया था, मगर उनकी भी कोशिश बेकार हुई और पंजाब भारत में वापस आ गया। महमूद गजनी ने काबुल मे बैंठकर भारत पर राज्य करना चाहा, लेकिन इस अस्वाभाविक कार्य में उसे सफलता नहीं मिली। पठान बादशाहों ने दिल्ली में बैठकर पश्चिमोत्तर सीमा के पार की जमीन पर हुकूमत करनी चाही, मगर वे भी नाकामयाब रहे। सिन्ध पर जब मुसलमानों ने पहले–पहल कब्जा किया, तब वे भी चाहते थे कि सिंध ईरान का अंग रहे और वे ईरान से ही उस पर हुकूमत चलायें, लेकिन यह भारत के भूगोल के खिलाफ बात थी, इसलिए उनकी कोशिश भी बेकार हुई है। असली बात यह है कि जैसे दुनिया के और भी कई देश दुनिया से अलग और अपने–आप में पूर्ण हैं, वैसे ही, प्रकृति ने भारतवर्ष को भी एक स्वंतत्र देश के रूप में सिरजा है, जो दुनिया से अलग और अपने–आप में पूर्ण है तथा जिसके भीतर बसने वाले सब लोग भारतीय हैं।

शब्दार्थ

शब्द	**अर्थ**	**Meaning**
लिपियाँ	लिखने के चिन्ह	Script
वर्णमाला	वर्णों का क्रमबद्ध रूप	Alphabet
अनुयायी	पीछे चलने वाले	Follower
अप्राकृतिक	कृत्रिम	Artificial
प्रांतीयता	क्षेत्रीयता का एक रूप	Regionalism
प्रभुत्व	प्रभाव	Dominance

उद्देश्य :–

1. छात्र प्रस्तुत निबन्ध से लेखक के देश प्रेम को समझ सकेंगे।
2. छात्र भारत की संस्कृति की विविधता में एकता को समझ सकेंगे।

3. छात्र भारत के इतिहास को संक्षिप्त में जान सकेंगे।

4. भारतीय दर्शन साहित्य के विषय का ज्ञान ले सकेंगे।

5. छात्र भारत के भूगोल का भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

केन्द्रीय भाव :–

प्रस्तुत पाठ के द्वारा भारत की सांस्कृतिक एकता, चेतना को समझने में सहयोग मिलता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–

1. निबन्ध के लेखक ..... है

   (अ) हरिवंशराय बच्चन (ब) राहुल सांस्कृतायन (स) विद्रोही (द) रामधारी सिंह 'दिनकर'

2. लेखक को हिन्दी साहित्य का ..... कहा जाता है।

   (अ) चंद्र (ब) दिनकर (स) सूर्य (द) रवि

3. ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया ..... महाकाव्य के लिए

   (अ) रेणुका (ब) उर्वशी (स) मधुशाला (द) वेणुवन

4. प्रस्तुत निबंध लेखक की पुस्तक से लिया गया है .....

   (अ) इतिहास के आंसू (ब) परशुराम की प्रतीक्षा (स) उर्वशी (द) हमारी सांस्कृतिक एकता

5. भारतीयों को एक रखने के मूल में है :–

   (अ) स्वभाव (ब) सांस्कृतिक एकता (स) संविधान (द) भाषा

6. प्रत्येक नागरिक के रहन सहन पर प्रभाव पड़ता है :–

(अ) जलवायु का (ब) विचारो का (स) त्योहारो का (द) कानून का

7. विविधता का सबसे बड़ा लक्षण है :–

(अ) हमारा पहनावा (ब) भाषा (स) साहित्य (द) विचार धारा

8. हमारे संविधान ने आज तक कितनी भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया

(अ) 22 (ब) 19 (स) 14 (द) 17

9. राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा हैं।

(अ) पहनावा (ब) भाषा (स) संविधान (द) साहित्य

10. दिनकर जी का ..... पर समान अधिकार था

(अ) गद्य व पद्य (ब) कहानी व कविता (स) व्याकरण (द) निबन्ध

उत्तर :– 1 द, 2 स, 3 ब, 4 द, 5 ब, 6 अ, 7 ब, 8 अ, 9 ब, 10 अ

रिक्तस्थान भरो :–

अ. भारतवर्ष की एकता उसकी ..... में छिपी हुई है ।

ब. विविधता का बड़ा लक्षण अनेक प्रकार की ..... है।

स. वर्तमान में ..... समाप्त हो गयी है।

उत्तर :– (अ) विविधता (ब) भाषा (स) प्राकृतिक बाधाएँ

लघुउत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र.1 ''भारत एक है'' में लेखक ने क्या कहने का प्रयत्न किया ।

उ0 इसमें लेखक भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता को रेखांकित कर रहा है।

प्र.2 भारतवर्ष के नक्शे में क्या स्पष्ट दिखाई देता है।

उ0 इस नक्शे में तीन भाग स्पष्ट है –

उत्तरी भाग – हिमालय से दक्षिण से विंध्याचल के उत्तर तक

दक्षिणी प्लेटो – विंध्य से कृष्णा नदी के उत्तर तक

प्रायद्वीप – प्लेटो के दक्षिण, कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अन्तरीप तक

प्र.3 पृथ्वी के जलवायु का प्रभाव कहाँ कैसे पड़ता है।

उ0 पृथ्वी के जलवायु का प्रभाव संपूर्ण पृथ्वीवासी के शरीर और मस्तिष्क दोनो पर पड़ता है।

प्र.4 भारत में सबसे अधिक विविधता का क्या लक्षण है।

उ0 विविधता का सबसे बड़ा लक्षण अनेक प्रकार की भाषाओं का फैला होना है।

प्र.5 राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा क्या हैं ?

उ0 भाषा–भेद ही राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है।

प्र.6 विविधता में एकता कहाँ मिलती है।

उ0 विविधता में एकता जहाँ भाषाएँ, संस्कृति, काव्य, साहित्य, विभिन्न दर्शन अनेको है किंतु सभी अन्त में जा कर एक ही हो जाते हैं ।

प्र.7 भारत सरकार ने मूलरूप से कितनी भाषाओं को स्वीकृति दी है।

उ0 मूल रूप से 14 भाषाओं को स्वीकृति दी गई हैं।

प्र.8 भारतीयों को एक रखने के मूल में क्या है।

उ0 भारतीयों को एक रखने के मूल में सांस्कृतिक एकता है।

प्र.9 भारतीय सांस्कृतिक विशेषता क्या हैं ?

उ0 भारतीय सांस्कृतिक विशेषता वह है जिसमें प्रत्येक निवासी की चाल–ढाल, बात–चीत, रहन–सहन, खान–पान, तौर–तरीके और आदतों से प्रकट होती है।

प्र.10 राष्ट्रीय एकता के लिए मुख्य तत्व कौनसे है।

उ0 राष्ट्रीय एकता के लिए विभिन्न धर्म, संप्रदाय, जाति, वेशभूषा, सभ्यता एवं संस्कृति के लोग एक साथ रहते है, यही इसके मुख्य तत्व हैं।

सारांश

'भारत एक है' निबन्ध दिनकर जी की पुस्तक 'हमारी सांस्कृतिक एकता' से लिया गया है जिसमें लेखक ने भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता को रेखांकित किया है।

भारत वर्ष की एकता जितनी प्रकट है, उसकी विविधताएं भी उतनी ही प्रत्यक्ष है। भाषा–भेद की समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है। प्राकृतिक बाधाएं अब खत्म हो चुकी हैं क्योंकि विज्ञान के अनेक सुगम साधन उपलब्ध है। यही कारण है कि आज हमारी एकता इतनी विशाल हो गई है कि वह रामायण, महाभारत, मौर्य एवं मुगल जमाने में भी कभी नही थी। अब जो भी क्षेत्रीय जोश या प्रान्तीय मोह बाकी है, वह भी धीरे–धीरे कम हो जाएगा। क्योंकि इस जोश को पालने वाली प्राकृतिक बाधाएं अब शेष नही है। मगर भाषा भेद की समस्या जरा कठिन है और उसका हल तभी निकलेगा जब हिन्दी भाषा क्षेत्र में अहिन्दी भाषाओं और अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का अच्छा प्रसार हो जाए। सौभाग्य की बात है कि इस दिशा में काम आरंभ हो गया है। भारत में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं परन्तु उनकी भावधारा एक है एवं एक ही तरह की कथा–वस्तुओं को लेकर अपनी–अपनी शैली में/भाषा/बोली में साहित्य रचना की गई है। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्रायः सभी भाषाओ के बीच अद्‌भुत् एकता मिलेगी क्योंकि ये दोनो काव्य उनके स्त्रोत (उपजीव्य) है।

अतएव, भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है, जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अन्त में जाकर एक ही साबित होते है। यह भी ध्यान देने की बात है कि फारसी लिपि को छोड़ दे, तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला एक ही है यद्यपि वह अलग–अलग लिपियों में लिखी जाती है।

प्रत्येक देश की एक निजी सांस्कृतिक पहचान होती है जो उस देश की निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है जो उस देश के प्रत्येक निवासी की चाल–ढाल, बातचीत, रहन–सहन, खान–पान, तौर–तरीकों और आदतों से टपकती रहती है। इतिहास के किसी काल में भारतवासी ही थे एवं अन्य देशों के बीच खप नही सकते थे। यही वह सांस्कृतिक एकता या शक्ति है जो भारत को एक बनाये हुए है। भारत के हिन्दू ही नही बल्कि भारतीय मुसलमान, पारसी एवं क्रिस्तानी भारत से बाहर जाने पर भी आसानी से पहचान लिए जाते है।

भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी शिक्षा यह है कि इस देश में राष्ट्रीयता और प्रान्तीयता के बीच बराबर संघर्ष चलता रहता है। देश की मौलिक एकता के भाव ने प्रान्तीयता के सामने कभी हार नही मानी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :–

1 भारतीयों को एक रखने के मूल में है – सांस्कृतिक एकता

2 प्रत्येक नागरिक के रहन–सहन पर प्रभाव पड़ता है – जलवायु का

3 विविधता का सबसे बड़ा लक्षण है – हमारी भाषा

4 हमारे संविधान ने आज तक 22 भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

Summary -

In this Essay Ramdhari Singh Dinkar has narrated unity in Diversity of Indian Culture. The language difference is the biggest hindrance for National Integration. All kinds of Natural hindrances have vanished because many Conducive facilities of Science are available now .

So the real basis for Indian Citizen's unity is Indian Philosophy and literature which are written in different languages but are proved one and same at the end.

संक्षेपण

संक्षेपण

मूल पाठ

किसी विस्तृत लेख, आख्यान, विवरण, पत्र, सूचना आदि में निहित भाषा तथ्यों को सरल , सुबोध में इस भाँति प्रस्तुत करना कि मूल अवतरण की सभी अपेक्षित महत्पूर्ण बातें उसके तृतीयांश में समाहित हो जाये, संक्षेपण है।

हिन्दी में इसके लिए कई शब्द है , जैसे – सार, सारांश सारार्थ, सार–वृत्त, सार – संग्रह संक्षेपिका, संक्षिप्ति आदि। ये Precis का अनुवाद है। संक्षेपण अपनी तकनीकी विशेषताओं के कारण छात्र, अध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी , व्यापारी , राजनीतिज्ञ सभी के लिए उपयोगी है। **संक्षेपण कम समय और कम श्रम में सम्पूर्ण विवरण का ज्ञान कराने में समक्ष रहता है ।** संक्षेपण एक कला है जो भाषा की अनेक युक्तियें को सीखने से सिद्ध होती है जैसे सूत्रात्मकता एक वाक्य के लिए एक शब्द, समास का यथास्थान प्रयोग तथा वाक्यविन्याय की पटुता आदि।

संक्षेपण 'सार सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय' के सिद्धांत का प्रतिपादक हैं। हमारे यहां प्राचीन काल मे ही मन्त्रों में बात कही जाती रही हैं। 'मन्त्र' अर्थात एक शब्द भी निरर्थक प्रयोग न करना। जैसे वह व्यक्ति कला, विज्ञान, राजनीति, वेद पुराण सब जानता है के स्थान पर वह व्यक्ति बहुज्ञ है ये कहना पर्याप्त होगा।

संक्षेपण की विशेषताएँ

संक्षेपण भाषा कौशल और अर्थ की समक्ष दोनों को एक साथ साधने से आता है उत्कृष्ट संक्षेपण के निम्नलिखित गुण है –

1. **पूर्णता –** संक्षेपण स्वतः पूर्ण होना चाहिए। संक्षेपण करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कोई महत्वपूर्ण बात छूट तो नही गई। संक्षेपण व्याख्या, आशय,भावार्थ, सारांश इत्यादि से बिल्कुल भिन्न है। संक्षेपण संक्षिप्त भी हो, सार्थक भी और अर्थ की निरन्तरता कही न टूटे।
2. **संक्षिप्तता –** संक्षेपण सामान्यतया मूल अवतरण का तृतीय भाग होता है, जिसमें विशेषण, दृष्टान्त, उद्धरण , व्याख्या, वर्णन , अलंकार मुहावरे, कहावतें नही होने चाहिए। लंबे–लंबे शब्दों एवं वाक्यों के स्थान पर सामासिक

पदों का प्रयोग करना चाहिए। सामाजिक पद जैस दशमुख वाले रावण के स्थान पर ' दशानन' या तीन लोकों के नाथ के स्थान पर त्रिलोकीनाथ शब्द का प्रयोग करना है।

3.**स्पष्टता –** संक्षेपण में अर्थ की स्पष्टता अवश्य होनी चाहिए मूल अवतरण का अर्थ व संदर्भ सरलता से स्पष्ट हो जाना ही अच्छे संक्षेपण की विशेषता है। एक तिहाई करने के कारण उद्धरण में से कुछ छूटने से अस्पष्टता आ जाती है।

4.**भाषा की सरलता –** संक्षेपण की भाषा सरल, किन्तु परिष्कृत होनी चाहिए। अलंकृत तथा समास बहुल भाषा नही होनी चाहिए। अतः संक्षेपण की भाषा सुस्पष्ट व आडंबर हीन होनी चाहिए। वाक्य रचना व संयुक्त व संश्लिष्ट होने के कारण कठिन नही होनी चाहिए।

5.**शुद्धता –** भाव और भाषा की शुद्धता से संक्षेपण सफल होता है । भाषा व्याकरणसम्मत तथा औपचारिक शैली में होनी चाहिए।

6.**प्रवाह एंव क्रमबद्धता –** संक्षेपण में भाव एवं भाषा की एकतानता होनी चाहिए। भाव क्रमबद्ध हों और भाषा प्रवाहपूर्ण। क्रमबद्ध हों और प्रवाहपूर्ण। क्रम और प्रवाह के संतुलन से ही संक्षेपण उत्कृष्ट बनता है। वाक्य रचना सुसंबद्ध एवं सुगठित होनी चाहिए।

संक्षेपण के नियम एंव संक्षेपण लेखन की विधि

यद्यपि अच्छा संक्षेपण भाषा पर पूर्ण अधिकारी होने पर ही लिखा जाता है। कोई निश्चित नियम नही होते तथापि अभ्यास के लिए कुछ सामान्य नियमों पर ध्यान देना आवश्यक है। इसी क्रम से संक्षेपण लेखन की विधि भी स्पष्ट हो सकेगी।

1. मूल संदर्भ को ध्यान से पढ़ें, भावार्थ जानें, भावार्थ स्पष्ट होने के लिए मूल अवतरण को तीन बार पढ़ें।
2. मूल अवतरण के भावार्थ को समक्ष लेने के बाद ऐसे महत्वपूर्ण शब्दों वा वाक्यांशों को रेखांकित करें जिनका केन्द्रीय भाव से सीधा संबंध हो। कोई भी तथ्य छूटने न पाये।
3. संक्षेपण में अपनी ओर से कोई स्वतन्त्र टीप, टिप्पणी या आलोचना न जोड़ी जायें। मूल भावों को ध्यान में रखकर ही संक्षेपण लिखना चाहिए।

4. संक्षेपण को अंतिम रूप देने से पहले रेखांकित वाक्यांशों के आधार पर उसकी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। मूल सन्दर्भ के विचारों के क्रम में परिवर्तन किया जा सकता है, लेकिन विचारों का तारतम्य बना रहना चाहिए।

5. उद्धरण में जो विचार सूत्र रूप में दिये गए है उनकी व्याख्या नही करनी चाहिए। इससे संक्षेपण का आकार बड़ा ही रहेगा।

6. संक्षेपण में मूल अवतरण में दिए गए मुहावरों, कहावतों व अलंकारों का प्रयोग नही करना चाहिए, अपितु भाव द्वारा उन्हें प्रकट करना चाहिए।

7. संक्षेपण में एक वाक्य के लिए एक शब्द, सामासिक पद सहायक होते हैं, भाषा की ये युक्तियाँ अभ्यास से सीखी जा सकती है।

8. संक्षेपण एक स्वतंत्र रचना है जिसकी शैली अलग होती है संक्षेपण में अभिधा प्रधान शैली का प्रयोग किया जाता है।

9. संक्षेपण में परोक्ष कथन का ही प्रयोग होना चाहिए। अर्थात् वक्ता की बात को अपने शब्दों में लिखना चाहिए।

प्रत्यक्ष कथन – सरला ने कहा '' आइए –– पधारिए''

प्रत्यक्ष कथन – सरला ने अतिथि से आने को कहा।

10. संक्षेपण सदैव अन्य पुरूष शैली में लिखा जाना चाहिए जैसे – ' ऐसा पाया जाता है', ' ऐसा देखा गया', कहा गया है आदि।

11. संक्षेपण सदैव औपचारिक शैली में लिखा जाना चाहिए। शब्द सामर्थ्य बढ़ानें से ही अच्छा संक्षेपण लिखा जा सकता है।

संक्षेपण के प्रकार

संक्षेपण दो प्रकार के होते है –

1. **स्वतंत्र विषयक संक्षेपण –** जिसमें साहित्य, विज्ञान, आध्यात्म, इतिहास, अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि विषयों का कोई अवतरण , निबंध संस्मरण देते हुए उसे एक तिहाई शब्दों में लिखा जाये।
2. **पत्र – व्यवहार विषयक संक्षेपण –** इसमें बड़े पत्राचारों एंव कार्यवृतों की संक्षिप्ति प्रस्तुत की जायें।

संक्षेपण लेखन की उदाहरण

ईश्वर के विषय में गांधी जी का मत था कि केवल वही सत्य है उनके इस प्रकार के विचार का आधार हम अद्धैत वेदांत के उस तत्वज्ञान को मान सकते हैं, जिसके अनुसार ब्रहा सत्य व जगत् मिथ्या व उसका अंश माना जाता हैं। यंग इंडिया(11,10–28) में उन्होंने लिखा था कि '' वह एक रहस्य एवं वर्णनातीत शक्ति है, जो प्रत्येक वस्तु में व्यापक है, मैं देखता तो नही उसका अनुभव करता हूँ। गांधी जी अनुसार '' यह शक्ति ईश्वरीय है जो प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है, वही सत्य है और उसकी सत्ता को कोई अस्वीकार नही कर सकता। ''गांधी जी कहा करते थें'' परमात्मा सत्य है और सत्य ही परमात्मा है।'' उनका विचार था कि सत्य को परमात्मा कहने से उसकी सत्ता को कोई भी अस्वीकार नंही कर सकता और आजकल के वे लोग भी जो भगवान या परमात्मा की बात तक सुनने के लिए तैयार नहीं हैं सत्य की उपेक्षा नही कर सकतें। गांधीजी का विश्वास था कि सत्यरूपी भगवान की सत्ता सर्वव्याप्त है, अतः प्रकारान्तर से वे परमात्मा को सर्वोच्च व सर्वव्यापक नियम भी कहते थे, जिसके विपरीत जगत में एक पत्ता तक नही हिल सकता। जैसा कि उन्होंने ' हरिजन' में लिखा था कि वे भगवान को व्यक्तिरूप नहीं मानते थे। इस प्रकार सत्यरूपी परमात्मा की प्राप्ति ही गांधी जी के अनुसार मानव जीवन का परम ध्येय है और उनकी प्राप्ति सांसारिक जीवन की महान प्रयोगशाला में निरन्तर प्रयोग करते हुए, उस सत्य का अन्वेषण करने से हो सकती है , स्वयं गांधी जी जीवनपर्यन्त सत्य के प्रयोग करते रहें। उन्होंने अपनी जीवनी का नाम ही ' मेरे सत्य के प्रयोग ' रखा है।

गाँधीवाद में ईश्वर

संक्षेपण – गांधीजी के अनुसार ' सत्य ही ईश्वर है' वह सर्वव्यापी और वर्णनातीत है अतः उसकी अनुभूति ही की जा सकती है। नास्तिक व्यक्ति भी सत्य की उपेक्षा नहीं करता है। इस प्रकार उसकी सत्ता सर्वमान्य है। ' सत्य' ऐसा सर्वोच्च, सर्वव्यापी नियम है जिसके विपरीत कुछ भी नही हो सकता है। गांधी जी सत्य की प्राप्ति मानव जीवन का परम लक्ष्य मानते थें ' सत्य' की प्राप्ति संसार से विरक्त आराधना से नहीं जीवन में सत्य के अन्वेषण से संभव है। उन्होनें आजीवन सत्य का अन्वेषण किया और अपनी जीवनी को ' मेरे सत्य के प्रयोग' नाम दिया है।

मूल अवतरण की शब्द संख्या = 282

संक्षेपण की शब्द संख्या = 94

उदाहरण – 2

संस्कृति तब तक गूँगी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नही होती। राजनीतिक पराधीनता की हमारी हथकड़ी और बेड़ी जरूर कटी है, किन्तु अंग्रेजी और अंग्रजियत के रूप में हमारे मनोजगत में जो दासता के चिन्ह विद्यमान है, जिन्होनें हमें निष्क्रिय बना रखा है। ध्यान देने योग्य है कि भाषा परिधान मात्र नही वरन राष्ट्र का व्यक्तित्व है। हमारे बहुभाषा भाषी देश के ही समान रूप भी बहुंत – सी भाषाओं वाला देश हैं जहाँ 66 भाषाएँ बोली और लिखी जाती है, किन्तु उनकी राष्ट्रभाषा रूसी हैं। हमारी संस्कृति के गोमुख से निकली हुई सब भारतीय भाषायें हमारी अपनी हैं, किन्तु उनमें अपनी व्यापकता आरंभ से ही जनविद्रोह और जनसंघर्ष को वाणी देते रहने के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है, केवल संविधान में लिख देने मात्र से यह बात पूरी नही हो पाती, इसे राष्ट्र के जीवन में प्रतिष्ठित करना होगा, अन्यथा इस स्वतंत्रता का क्या मूल्य है ? विश्व चेतना जगाने से पहले अपने देश में राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएँ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी

संक्षेपण – राष्ट्रभाषा राष्ट्र का व्यक्तित्व है, इसके बिना संस्कृति गूँगी है, स्वंतत्र भारत अंग्रेजी, अंग्रजियत की दासता से निष्क्रिय है। भारत की तरह रूस में 66 भाषाएँ है किन्तु वहां ' रूसी' राष्ट्रभाषा है। सभी भारतीय भाषाएं अपनी हैं। हिन्दी व्यापक और जनआंदोलन का माधयम होने से राष्ट्रभाषा बनी, राष्ट्रीय जीवन में इसकी प्रतिष्ठा आवश्यक है।

मूल अवतरण की शब्द संख्या = 165

संक्षेपण की शब्द संख्या = 55

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	Meaning
संक्षेपण	संक्षिप्त	Summary
सुबोध	जिसमें बोध हो	Well understood
तृतीयांश	तीसरा भाग	One third
श्रम	मेहनत	Labour
पूर्णता	पूर्ण होना	Perfection
स्पष्टता	समझ में आना	Clarity
सरलता	सीधा	Simplicity
शुद्धता	साफ सुधरा होना	Purity
प्रवाह	बहाव	Flow

उद्देश्य :–

1. छात्र संक्षेपण का अर्थ समझ सकेंगे।
2. छात्र स्पष्टता, शुद्धता और समयबद्धता लेखो में किस प्रकार लाई जाती है, को जान सकेंगे।
3. छात्र विस्तृत लेख को उसके तृतीयांश में लिखना सीख सकेंगे।

केन्द्रीय भाव :–

इस संकलित आलेख के द्वारा किसी विस्तृत लेख की भाषा को सरल, सुगम, सुबोध, मूल अवतरण की सभी मुख्य अंशो को सम्मिलित कर उसको तृतीयांश में प्रस्तुत करने का अभ्यास कराया जा रहा है।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संक्षेपण का अंग्रेजी अनुवाद है –

   (अ) समरी (ब) प्रेसी (स) एक्सप्लेन (द) एनालाइज

2. संक्षेपण में मूल अवतरण का ..... भाग लिया जाता है

   (अ) आधा (ब) एक चौथाई (स) एक तिहाई (द) सम्पूर्ण

3. संक्षेपण के ..... विशेषताएँ है।

   (अ) 6 (ब) 8 (स) 2 (द) 4

4. संक्षेपण के प्रकार ..... है

   (अ) 5 (ब) 2 (स) 3 (द) 8

5. संक्षेपण का अर्थ

   (अ) छोटा लिखना (ब) पुनः लिखना (स) भाव लिखना (द) पुनः लिखना

6. संक्षेपण लिखा जाता है

   (अ) अन्य पुरूष (ब) प्रथम एवं अन्य पुरूष (स) मध्यम पुरूष (द) प्रथम पुरूष

7. यदि मूलअवतरण में 282 शब्द है तो संक्षेपण में ..... शब्द होगा।

   (अ) 141 (ब) 94 (स) 100 (द) 250

8. संक्षेपण में ..... कथन का ही प्रयोग होना चाहिए।

   (अ) प्रत्यक्ष (ब) अप्रत्यक्ष (स) परोक्ष (द) क्रमिक

9. संक्षेपण में ..... पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए।

   (अ) व्यंग्यात्मक (ब) पद्यात्मक (स) गद्यात्मक (द) अभिधा

10. संक्षेपण में ..... पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए।

    (अ) भाषा (ब) मुहावरो (स) विचारो (द) भावों

उत्तर :– (1) ब, (2) स, (3) अ, (4) ब, (5) अ, (6) अ, (7) ब, (8) स, (9) द, (10) अ

रिक्त स्थान भरो :–

(अ) संक्षेपण के लिए अन्य शब्द ..... है

(ब) संक्षेपण संक्षिप्त हो किन्तु उसकी ..... न टूटे

(स) संक्षेपण सदा ..... शैली में लिखा जाना चाहिए।

उत्तर :– (अ) संक्षिप्ति (ब) निरन्तरता (स) औपचारिक

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र.1 संक्षेपण का अर्थ क्या है।

उ0 किसी विस्तृत लेख को मूल तथ्यों के साथ संक्षेप में प्रस्तुत करना।

प्र.2 संक्षेपण के लिये कौन से अन्य शब्द प्रयोग किये जाते हैं।

उ0 संक्षेपण को हिन्दी में सार, सरांश, सारार्थ, सार वृत्त, सार–संग्रह, संक्षेपिका, संक्षिप्ति आदि कहते है।

प्र.3 संक्षेपण का अंग्रेजी शब्द क्या है।

उ0 संक्षेपण का अंग्रेजी शब्द Precis है।

प्र.4 क्या संक्षेपण का उपयोग है ?

उ0 हाँ, संक्षेपण का उपयोग छात्र, अध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी, व्यापारी, राजनीतिज्ञ सभी के लिए है।

प्र.5 संक्षेपण का क्या महत्व है।

उ0 संक्षेपण कम समय, कम श्रम में संपूर्ण विवरण का ज्ञान कराने में सक्षम रहता है।

प्र.6 क्या संक्षेपण सीखा जा सकता है।

उ0 हाँ, संक्षेपण सीखने की कला है जो भाषा की अनेक युक्तियों को सीखने से सिद्ध होती है जैसे सूत्रात्मकता – एक वाक्य के लिए उपयुक्त शब्द का यथास्थान प्रयोग करना।

प्र.7 संक्षेपण की विशेषता कौन–सी है।

उ0 संक्षेपण की विशेषताएँ हैं – पूर्णता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, भाषा की सरलता, शुद्धता, प्रवाह एवं क्रमबद्धता।

प्र.8 संक्षेपण के प्रकार कौन से है।

उ0 संक्षेपण के दो प्रकार – 1 स्वतंत्र विषयक संक्षेपण 2. पत्रव्यवहार विषयक संक्षेपण

प्र.9 संक्षेपण में मूलअवतरण का कितना भाग आना चाहिए।

उ0 संक्षेपण में मूलअवतरण का तृतीयांश भाग आना चाहिए ।

प्र.10 संक्षेपण में किस प्रकार के कथन का प्रयोग करना चाहिए।

उ0 संक्षेपण में परोक्ष कथन का प्रयोग करना चाहिए।

सारांश

1. **संक्षेपण (परिभाषा) :** मूल अवतरण के सभी अपेक्षित महत्वपूर्ण तथ्य, उसके तृतीयांश में समाहित करना ही संक्षेपण कहलाता है।
2. संक्षेपण के दो भेद होते है : स्वतन्त्र विषयक संक्षेपण
   पत्र व्यवहार विषयक संक्षेपण

संक्षेपण एवं भावार्थ में अन्तर –

3. भावार्थ में मुख्य भाव की स्पष्टता करनी होती है जबकि संक्षेपण में मूल अवतरण के सभी अपेक्षित महत्वपूर्ण तथ्यों को उसके तृतीयांश में समाहित करना होता है।
4. संक्षेपण अन्य पुरूष शैली एवं औपचारिक शैली में लिखा जाता है।
5. संक्षेपण का अर्थ है : छोटा कर देना
6. संक्षेपण लिखा जाता है : अन्य पुरूष में
7. मूल रचना का संक्षिप्त रूप होता है : एक तिहाई

Summary

Precis writing is very important literary art where one is able to write the main theme in shortest possible words. This itself is an art which should be part and parcel of our everyday life too. In today's world when everywhere there is scarcity of time. We can utilise this form of literary art to not only save our valuable time but energy also which can be utilised at some other important field. Normally precis writing an approximation of one third of the main paragragh. A Precis writing is not just picking the words from the original paragraph. It should be written in a precise manner in your own words. It should be a summary or a miniature version of the original paragraph.

इकाई–5 : हिन्दी भाषा

1. नैतिक मूल्य परिचय एवं वर्गीकरण (आलेख) – डॉ. शशि राय
2. आचरण की सभ्यता (निबंध) – सरदार पूर्णसिंह
3. अंतर्ज्ञान और नैतिक जीवन (लेख) – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
4. अप्प दीपो भव (लेख) – स्वामी श्रद्धानंद

नैतिक मूल्य–परिचय और वर्गीकरण

डॉ. शशि राय

लेखक परिचय :–

म.प्र. की सुप्रसिद्ध शिक्षाविद, प्रशासक एंव अनुसंधान वेत्ता डॉ श्रीमती शाशि राय म. प्र. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त सम्माननीय नाम है। अपनी 41 वर्षों की सुदीर्घ शासकीय सेवा में उन्होंने अध्यापन, प्रशासकीय दायित्व एंव अनुसंधान तीनो क्षेत्रों में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। वे वनस्पति शास्त्र की प्राध्यापक रहीं। हिन्दी और अग्रेंजी दोनों भाषाओं का उन्हें उत्कृष्ट ज्ञान एवं समान अधिकार था। शासकीय स्नातकोन्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) की सम्मानित सदस्य रहीं। वे अन्त तक म.प्र. राज्य उच्च शिक्षा परिषद की सदस्य भी रहीं। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु उन्हें विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

मूल पाठ

प्रस्तावना

सम्पूर्ण जीव जगत में मनुष्य निराला प्राणी है क्योंकि उसने अपने संयमित जीवन के लिए कुछ नियम बनाये है। यही नियम मूल्य कहलाते है। मूल्य मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करते है और अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ सावित करते है। जीवन की जटिलता एवं विषमता के बीच एक बात जो समान रूप से सभी पर लागू होती है वह है जीवन मूल्य। मूल्य तीन तरह के हो सकते हैं।

व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय

इन मूल्यों के लिए समग्र प्रयास करना स्वस्थ समाज की मूलभूत आवश्यकता है। परन्तु जैसे–जैसे विभिन्न स्तरो पर जीवन में परिवर्तन होता है, मूल्य भी संक्रमण काल से गुजरते हुए परिवर्तित होते है। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने परिवेश और अपनी परिस्थितियों के अनुसार मूल्यों को परिभाषित करने लगता है। इसकी वजह से भी विरोधाभाव उत्पन्न हुआ है। जिसके कारण हमारे जीवन मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे है। हमारा समाज भौतिक उन्नति तो कर रहा है परन्तु नैतिक नही। यदि यह सिलसिला समाप्त नहीं हुआ तो मनुष्य का असमाजीकरण हो जाएगा और मनुष्यता के समक्ष एक विकट समस्या उत्पन्न हो जाएगी। अतः मूल्यों को पुनः स्थापित करने की महती आवश्यकता है। उन्नत राष्ट्र के लिए मूल्य युक्त नागरिकों की आवश्यकता होती है। ऐसे नागरिको ंका निर्माण शिक्षा व्यवस्था की पहली चुनौती एवं जिम्मेदारी दोनों है। भौतिकता की वजह से मानवीय संवेदनाओ को संकुचित कर दिया है, स्वहित के आगे राष्ट्रहित पीछे छुट गया है एवं व्यक्तिवाद पीछे हुए गया है। अतः शिक्षा के माध्यम से इसे सुधारा जा सकता है बशर्ते शिक्षा गुणवक्ता पूर्ण हो। शिक्षा यदि सही हो तो वह जीवन के प्रत्येक पहलू तक पहॅूच रखती है। यह व्यक्ति को मुक्त करती है एवं जीवन को परिपूर्णता प्रदान करती है। यह सबके प्रति समान भाव रखते हुए व्यक्ति को उत्कृष्टता प्रदान करती है।

एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वालें लोगों के माध्यम से ही संभव है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रेमा, आपसी सदभाव अनुशासन और स्थापित नियमों के अनुसार अपना आचरण रखना अच्छे नागरिक की पहचान हैं। ऐसे नागरिक ही राष्ट्रवाद के प्रति समर्पित होते है इनका निर्माण मूल्यों के परिपालन से ही संभव है।

सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की चारित्रिक गतिविधियों के रूप में मान्यता प्रदान की गई है शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षा ज्ञान रूपी आलोक और आध्यात्मिक शाक्ति का एक स्त्रोत है, जो हमारी शारीरिक मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास यात्रा के निलए हमारी अंतरनिहित प्रकृति में आवश्यक परिवर्तन लाती है। इसके लिए समाज में शिक्षा का स्तर, उसकी गुणवता और व्यवस्था का उत्तम होना अपरिहार्य है।

सही शिक्षा जीवन के प्रत्येक पहलू तक पहूँच रखती है। अच्छी शिक्षा वह होगी जो हमारे भूतकाल से उत्तम बातों को ग्रहण कर सके, वर्तमान का श्रेष्ठ उपयोग

कर सके, साथ भी भविष्य की दिशा भी निर्धारित कर सके। यदि शिक्षा के उद्देश्यों की व्याख्या की जाए तो वह व्यक्ति को मुक्त करती है, जीवन को परिपूर्णता प्रदान करती है, सबके प्रति समभाव जगाने हुए व्यक्ति को उत्कृष्टता प्रदान करती है साथ ही सामूहिक आत्मनिर्भरता के साथ राष्ट्रीय सुसंगतता स्थापित करती है। अतः गुणवत्ता परक शिक्षा व्यवस्थ की स्थापना ओर संचालन राष्ट्र कर महती आवश्यकता है ।

नैतिक मूल्य – परिभाषा, अवधारणा और महत्व

जब भी मूल्यों की बात होती है, कई शब्द अलग– अलग संदर्भ में उपयोग में लाए जाते हैं, जैसे जीवन मूल्य और मानवीय मूल्य। संभवतः इन सभी शब्दों के अर्थ और अभिप्राय एक ही हैं। मूल्य को किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाए वे उन गुणों की इंगित करते है जिन्हें व्यक्ति महत्वपूर्ण और उपयोगी मानता है तथा जिन मूल्यों के पालन करने से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करता है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते है। जीवन की शुद्ध क्रियाएं धर्म कहलाती हैं, धर्म में शांति, प्रेम और अहिंसा समाहित रहते हैं। ये पाँच तत्व – सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, और अहिंसा – मानव मूल्य माने जाते हैं। यह भी माना जाता है कि इन मूल्यों का निर्धारण धर्म करता है।

मूल्यों की प्रमुख परिभाषाएँ

श्री राधाकमल मुकर्जी के अनुसार – ''मूल्य समाज अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किए जा सकते हैं, जिन्हें अनुबंधन, अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आत्मसात किया जाता है और जो व्यक्तिगत मानकों तथा आकांक्षाओं के रूप में परिवर्तित हो जातें है।''

राधाकमल मुकर्जी ने अपनी इस परिभाषा में मूल्यों को समाज द्वारा अनुमोदित इच्छाओं एंव लक्ष्यों के रूप में विवेचित किया है।

जॉन डीवी के अनुसार – ''मूल्य का संबंध आन्तरिक रूचियों से होता है, जिनका अनुमोदन समाज द्वारा किया जाता है और उनकी वस्तुनिष्ठ रूप में परख की जाती है।''

जॉन डीवी ने मूल्यों मे मनुष्य की रूचियों को महत्व दिया है, परन्तु उनके लिए सामजिक मान्यता तथा अनुमोदन को भी आवश्यक बताया है। वे यह मानते हैं कि सभी रूचियाँ मूल्य नही हो सकती हैं।

उक्त परिभाषाओं ये यह स्पष्ट है कि मूल्य हमारी आस्थाओं और सामाजिक मर्यादाओं पर आधारित आचरण के सिंद्धात हैं। जब हम अपने आचरण और व्यवहार को समाज के नीतिगत दायरे मे लाते हैं तो हमारे मूल्य नैतिक मूल्य बन जाते है। जो जीवन के आधारभूत मूल्यों के समकक्ष होते है और दोनों का आधार समान होता है। समाज के स्थापित नियमों और मानकों के अनुरूप अपने आचरण, व्यवहार और चरित्र का ढालना नैतिक मूल्यों के संदर्भ में एक सर्वमान्य अवधारणा है।

अब प्रश्न उठता है कि ऐसे मूल्यों का स्वरूप क्या हैं? किन गुणों के निर्वहन से हम स्वयं को नैतिक मूल्यों की कसौटी पर परख सकते हैं? इसे जानने के लिए हम अपने प्राचीनतम ग्रंथों का सहारा ले सकते है जों इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

1. भगवद्गीता जिसे हम मानवी संबधों, दृष्टिकोण, दर्शन, ज्ञान और उपदेश का सर्वोत्कृष्ट और सर्वकालिक ग्रंथ मानते हैं उसमें 26 मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई है। इन गुणों मे निर्भीकता, मन की पवित्रता, योग में परिपक्वता, देने की प्रवृत्ति, स्वयं पर नियंत्रण, त्याग, शास्त्रों का अध्ययन, स्पष्टवादिता, सत्य निष्ठा, क्रोध का अभाव, उत्सर्ग की अभिलाषा, शांतिप्रियता, छल कपटरहित व्यवहार, सभी के प्रति क्षमा का भाव, निस्पृहता का भाव, सभ्यता, विनम्रता, ऊर्जावान – क्षमाशील व्यक्तित्व, दृढ़ता, शुद्धता, घृणारहित–गर्वरहित स्वभाव तथा चुनौतियों का सामना करने की शक्ति–उत्तम व्यक्ति के प्रमुख गुण माने गए हैं और इन्हें मूल्य के रूप में निरूपित किया गया है।

2. हमारे दूसरे सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ बाल्मीकि रामायण में मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण सम्पूर्ण व्यक्तित्व निम्नलिखित गुणों से आभूषित होगा – व्यक्ति जिसमें सदगुण हो, सामर्थ्य हो, जो धर्म मे आस्था रखता हो, जिसमें कृतज्ञता का भाव हो, जो सत्यवादी हो, जिसमें सशक्त समर्पण का भाव हो, जिसका व्यवहार उभय हो, जिसमें सभी के प्रति करूणा हो, विद्वान, योग्य और प्रसन्नचित हो, स्वयं को पूर्ण रूप से जानता हो, जिसने क्रोध पर काबू पा लिया हो, जिसका व्यक्तित्व शानदार हो और दूसरों से न जलता हो।

   मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए है जो आज भी भारतीय सदाचार के मूल तत्व हैं। इनमें धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विधा,

सत्य एवं अक्रोध का उल्लेख हैं। यह माना गया है कि इनसे ही व्यक्ति उदात्त बनता है। भारतीय जीवन मूल्यों की एक और विशेषता है – आदर्श और यथार्थ, बाह्या और आंतरिक, धर्म और कर्म, भोग ओर त्याग, समाज और देश, बुद्धि और हृदय, लोक और परलोक, कर्त्तव्य और अधिकार, अर्थ और काम, मानव और प्रकृति में संतुलन और समन्वय का भाव रखना। उचित संतुलन और सही समन्वय जीवन में औचित्य का निर्धारण करता है। प्रकृति में सत्व, रज और तम का उचित अनुपात ही प्रकृति को नियमों से परिचालित करता हैं। इस अनुपात में अनावश्यक परिवर्तन आने पर प्रकृति विनाश की ओर जा सकती है।

भारतीय जीवन मूल्यों में कर्म की प्रधानता रही है। यह माना जाता है कि फल की कामना किए बिना कर्म करते रहना चाहिए। निष्काम कर्मयोग हमारे दर्शन का एक मुख्य वैचारिक क्षेत्र रहा है। माना जाता है कि निष्काम कर्मयोगी सामान्य दुर्गुणों से मुक्त होते हुए पूर्ण संतोष के साथ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है और संभवतः एक अच्छे मनुष्य मे इस प्रकार की उदात्त भावना का जन्म लेना उसके सदाचारी होने का प्रमाण है।

मूल्यों का वर्गीकरण

मुल्यों का वर्गीकरण व्यापक रूप से चार वर्गों में किया जा सकता है –

1. **दार्शनिक मूल्य –** दार्शनिक मूल्यों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है – (1) भारतीय दर्शन (व्यापक क्षेत्र) (2) पाश्चात्य दर्शन (आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद तथा प्रयोजनवाद) पाश्चात्य दर्शन ने अपनी मूल्य मीमांसा में चार प्रकार के मूल्यों को सम्मिलित किया है : –

   (अ) नैतिक मूल्य (ब) सामाजिक मूल्य

   (स) सौन्दर्यानुभौतिक मूल्य (द) धार्मिक मूल्य

2. **सामाजिक मूल्य –** राधाकमल मुकर्जी तथा जॉन डीवी ने सामाजिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया है मूल्यो के आकलन का सन्दर्भ बिन्दु समाज को ही माना जाता है। मुकर्जी ने सामजिक मूल्यों के तीन प्रकार बताये हैं –

   (अ) जैविक मूल्य (ब) सामाजिक मूल्य और (स) आध्यात्मिक मूल्य

मुकर्जी ने इनके अतिरिक्त अन्य दो प्रकार के मूल्यों को बताया है –

(अ) सैद्धान्तिक या अमूर्त मूल्य अथवा आन्तरिक मूल्य तथा

(ब) यान्त्रिक या व्यावहारिक अथवा बाह्य मूल्य

3.**मनोवैज्ञानिक मूल्य** – स्प्रैन्जर के अनुसार मनोवैज्ञानिक मूल्य सामान्यतः छह वर्गों मे विभक्त किए जा सकते हैं –

(अ)सैद्धांतिक या बौद्धिक मूल्य (ब)आर्थिक मूल्य(स)सौन्दर्यानुभौतिक मूल्य

(द) राजनैतिक मूल्य, (य) धार्मिक मूल्य , (र) सामजिक मूल्य।

स्प्रैन्जर के इस वर्गीकरण की पुष्टि आल्पोर्ट व वर्नन ने भी की है इन्होनें मूल्यों को दो वर्गों में विभाजित किया है–

(अ)आन्तरिक मूल्य (ब) बाह्य मूल्य

4.**सार्वभौमिक अथवा मानव मूल्य** – भारतीय दर्शन में पांच सार्वभौमिक मूल्यों का महत्व दिया गया है। इन्हें मानव मूल्य भी कहते हैं, क्योंकि ये शाश्वत मूल्य हैं और इन्हें पंच प्राणों से जोड़ा गया है –

(अ)सत्य (ब) धर्म (स) शांति, (द) प्रेम, (इ) अहिंसा

नैतिक मूल्यों के रोपण स्तर

किसी व्यक्ति के जीवन को संवारने में तीन संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है – परिवार, शिक्षण – संस्थाएँ और समाज । यह त्रिकोण बच्चों के समाजीकरण के साथ उनमें मूल स्थापित करने का कार्य भी करता है।

परिवार

परिवार व्यक्ति के जीवन का प्रथम पड़ाव हैं। परिवार में जन्म लेने है के बाद भावनात्मक संबंधों का प्रारंभ होता है, मानवीय संबंधों का महत्व समझ में आता है , पारस्परिक संबंधों की ऊर्जा प्राप्त होती है और परिवार की जीवन शैली को आत्मसात करते हुए बच्चे का विकास होता है। विकास की यह यात्रा मनुष्य के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी भूमिका निभाती है। अपने परिवार के जीवन मूल्यों को बच्चा आत्मसात करता है। अपनी शैशवावस्था में बच्चा अपने पारिवारिक वातावरण से अपनी प्रांरभिक अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है। इस दौरान कई नैतिक मूल्यों से बच्चे का परिचय होता है, जैसे – सच बोलना, बड़ों का आदर करना , ईश्वर में विश्वास रखना,

देश के प्रति श्रद्धा रखना, पारिवारिक संसाधनों का मिल बाँटकर उपयोग करना, दूसरों की सहायता करना, गलत काम करने से बचना आदि। परिवार द्वारा दिए गए संस्कार पूरी जिंदगी हमारे साथ रहते हैं। परिवार के संस्कारों की छाप हमारे व्यक्तित्व में स्पष्ट दिखाई देती है। कहा गया है कि परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है और बच्चे की माँ ही उसकी प्रथम गुरू होती है। प्रारंभ में मूल्यों की पहचान परिवार और माता – पिता के माध्यम से ही बच्चे तक पहुंचती है।

भारत एक परिवार प्रधान देश है। हमारे यहां सामाजिक व्यवस्था में परिवार को सबसे छोटी लेकिन महत्वपूर्ण इकाई माना गया है। परिवारों से ही समाज बनता है, अतः समाज के निर्माण में परिवार की भूमिका सर्वोपरि है। यदि परिवार अपने सदस्यों के व्यवहार और आचरण की जिम्मेदारी ले और इस राष्ट्रीय दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाए तो स्वस्थ समाज का निर्माण होगा जो स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला होगी।

शैक्षणिक संस्थाएँ

परिवार के बाद मनुष्य के समाजीकरण की दूसरी कड़ी कें रूप में शैक्षणिक संस्थाएँ विशेष महत्व रखती है। यह मनुष्य के जीवन का दूसरा पड़ाव है जहां पारिवारिक अनौपचारिक शिक्षा के बाद व्यक्ति औपचारिक और संस्थागत शिक्षा की ओर कदम रखता है। परिवार के लोगों के अलावा उसका संपर्क अन्य संवर्ग के व्यक्तियों से होता हैं जिनमें शिक्षक और सहपाठी प्रमुख रूप से उसके जीवन को प्रभावित करते हैं। नैतिक मूल्यों को प्रदान करने में इन दोनों की भूमिका परिवार के समान ही बहुत अहम रहती है। विशेष रूप से बच्चों के मन पर शिक्षक का प्रभाव गहरा और लगभग स्थायी रहता है एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थी के लिए एक अनुकरणीय आदर्श व्यक्ति रहता है। शिक्षक की कही हुई हर बात विद्यार्थी के लिए ग्राह्य और अंतिम होती हैं। यही कारण है कि जब भी नैतिक मूल्यों की बात होती है, शैक्षणिक संस्थाओं की उपयोगिता और उपादेयता की चर्चा आवश्यक होती है।

नैतिक मूल्य, कक्षा में पढ़ाई जाने वाली शिक्षा के माध्यम से बच्चों तक नही पहुंचाए जा सकते हैं। इनकी समझ प्रत्यक्ष उदाहरण और आसपास घटने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से आती है। विद्यार्थी के संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार, आचरण और जीवन शैली यदि मूल्यपरक है तो विद्यार्थी भी उन मूल्यों को अपने साथ आत्मसात करता जाता है। प्रधानाध्यापक, शिक्षक और सहपाठी इन सभी

के आचरण व्यवहार का असर विद्यार्थी पर पड़ता है। कहा जाता है एक अच्छा शिक्षक हमारा जीवन बना देता है और खराब सहपाठी जीवन की दिशा बदल देता है।

नैतिक मूल्यों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की शिक्षा देना शिक्षा व्यवस्था का प्रथम एव महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। निर्माण शब्द का शाब्दिक अर्थ है किसी रचना को बनाने के लिये एक खाका तैयार करना, आवश्यक संसाधन जुटाना और कठिन परिश्रम के साथ खाके के अनुसार संरचना तैयार करना। इस प्रक्रिया में समय लगता है, धैर्य प्रतीक्षा और परिश्रम की आवश्यकता होती है। शिक्षा राष्ट्र निर्माण का एक उपक्रम है, जिसके माध्यम से हम अधिकतम सामर्थ्य तक निर्माण कर सकते हैं बशर्ते कि इसके लिए हमारे प्रयास और इच्छा शक्ति मजबूत हों। दूरदृष्टि और नियोजन के बिना रचनात्मक युवा मस्तिष्कों में राष्ट्र निर्माण का बीज नहीं डाला जा सकता। युवा उद्यमी और ऊर्जावान होते हैं, काम करने का जुनून भी रखते हैं, लेकिन सही दिशा – निर्देशों के अभाव में वे कहीं भटक जाते हैं। उनकी ऊर्जा को सही दिशा और गति देने के लिए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता हैं। ''उठो, जागो और तब तक न रूको जब तक अपना ध्येय न पा लों' का सदेंश शिक्षा के माध्यम से उन तक पहुँचाना ही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य हैं।

उच्च शिक्षा के छात्रों को शिक्षा व्यवस्था उसका आकार और संचालन के बारे में जानकारी होना आवश्यक है–

1. वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा के स्वरूप की जानकारी
2. सार्थक और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा में निवेश।
3. उच्च शिक्षा की उपलब्धता और सकल प्रवेश अनुपात।
4. उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम और उनमें नैतिक मूल्यों का समावेश
5. भारतीय संविधान , संविधान के मुख्य प्रावधान और आदर्श धर्म निरपेक्षता की शिक्षा
6. शांति और सहअस्तित्व की शिक्षा।
7. प्रजातांत्रिक मूल्यों की शिक्षा।
8. नागरिकता की शिक्षा ।
9. नेतृत्व और उद्यमिता की शिक्षा।
10. नैतिक शिक्षा ।
11. समग्र शिक्षा।
12. निर्वहन की शिक्षा।

13. सभी के लिये निरंतर शिक्षा।

उक्त वर्णित सभी बिन्दुओं के लिए छात्रों के समक्ष विभिन्न घटनाएं, वास्तविक जीवन से उदाहरण लेते हुए उनके अंदर संवेदनशीलता और समझ लाना आवश्यक होगा। साथ ही प्रत्येक प्रसंग में एक नागरिक के रूप में उनकी अपनी भूमिका पर भी विचार करने हेतु प्रेरित किया जाए।

समाज और सामाजिक परिवेश

नैतिक मूल्यों के रोपण मे समाज की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति अपने समाज और सामाजिक दायरे से बहुत कुछ सीखता है। समाज व्यक्तियों के जीवनयापन के लिए आधार तैयार करता है और व्यक्ति अपने क्रियाकलापों से समाज का निर्माण करते है।

उच्च शिक्षा के छात्र जो देश की युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते है उनमें समाज के प्रति जवाबदेही होना अत्यन्त आवश्यक है। युवा पीढ़ी ने समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण निर्मित होना चाहिए। उनके आसपास का समाज किस प्रकार राष्ट्रहित के लिये कार्य, करे इसकी योजना तैयार की जानी चाहिए। समाज की अपनी मान्यताएँ और नियम हैं, साथ ही कई सामाजिक कुरीतियाँ भी है जो समाज को खोखला करती जा रही हैं। युवा पीढ़ी समाज को एक नया रूप प्रदान कर सकती हैं। समाज की उपयोगिता बढ़ा सकती है और समाज को सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कर सकती हैं। इसके लिए युवाओं को अपना स्वयं का चारित्रिक निर्माण करना होगा, सामान्य नैतिक मूल्यों का पालन करना होगा तथा अपनी आत्मशक्ति द्वारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करना होगा। यह प्रक्रिया बहुत लंबी होगी, इसमे कई कठिनाईयाँ आएगी और अनेक असामाजिक शक्तियाँ युवा पीढ़ी को इस प्रकार का रचनात्मक क्रांतिकारी कार्य करने से रोकेगीं, लेकिन सामाजिक हित में और समाज को राष्ट्रोपयोगी बनाने के प्रयास में इस प्रकार की रूकावटों का धैर्य से सामना करना होगा।

युवा पीढ़ी इस काम को अपने आसपास के परिवेश से प्रारंभ कर सकती है जो एक मोहल्ला या एक बसाहट हो सकती है। सबसे पहले अपने आसपास कितने परिवार रहते है, उनका क्या व्यवसाय है ? किस जाति और धर्म के है और उनके आपसी संबंध कैसे है ? यह भी पता लगाना होगा कि लोगों की मुख्य समस्याएँ क्या हैं, क्या मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध है ? नैतिक मूल्य हमें उन परिवारों की समस्याओं के प्रति

संवेदनशील होना सिखाते है। जिस परिवार को जैसी मदद की आवश्यकता हो उसकी व्यवस्था समाज द्वारा की जानी चाहिए।

समाज के लोग देश के विकास और अर्थव्यवस्था से कहाँ तक जुड़े है, इसकी भी जानकारी लेना आवश्यक है। क्या वे लोग देश के प्रबुद्ध नागरिक है ? क्या उनकी प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था है ? क्या उन्हें अपने चारों ओर के वातावरण में आने वाले बदलावों के प्रति चिंता है ? क्या वे अपना पर्यावरण बचाने के लिए वचनबद्ध हैं ? ये महत्वपूर्ण प्रश्न है।

समाज में सभी धर्मो के लोगों के प्रति समभाव स्थापित हो और लोग एक दूसरें के धर्मो का आदर करें, एक दूसरें के धार्मिक आयोजनों में खुशी से भाग ले और धर्म को लेकर कभी भी विभाजित न हो ऐसी स्थिति का निर्माण केवल युवा पीढ़ी ही कर सकती है। धार्मिक उन्माद और धर्मो की राजनीति से देश का काफी नुकसान हो चुका है । अब पूरा विश्व एक कुटुम्ब के समान माना जाता है, देशों के बीच की भौगोलिक सीमाएँ घटती जा रही है, आवागमन आसान हो गया है और एक देश के लोग दूसरें देश में मुक्त होकर कार्य कर पा रहे है।

ऐसी स्थिति में हमारा समाज जाति और धर्म के नाम पर विभाजित हो जाएगा तो यह हमारी आंतरिक कमजोरी होगी जिसका लाभ कोई भी शक्तिशाली देश ले सकता है। युवा पीढ़ी को इस वैश्विक परिदृश्य से सीख लेते हुए देशवासियों की संकुचित मनोवृत्ति से उन्हें मुक्त करने का बीड़ा उठाना चाहिए। धर्म को कोई नाम न देते हुए इसे जीवन जीने की कला के रूप में आत्मसात किया जाना चाहिए।

भारतीय समाज में अपने पर्यावरण के प्रति संवेदना कम हो गई है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और दुरूपयोग, ऐसी गतिविधियों को संचालित करना जो पर्यावरण को दूषित करें तथा प्रकृति के प्रति अनुदार रवैया अपनाना पर्यावरण को बहुत क्षति पहुँचाता है। पर्यावरण का संरक्षण हमारी व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी हैं। इसे पूरा करना हमारे अपने अस्तित्व के लिए जरूरी है। पर्यावरण के प्रति सकरात्मक जागरूकता उत्पन्न करना और ऐसी सामाजिक गतिविधियों को आयोजित करना जिससे पर्यावरण को समृद्ध किया जा सके हमारा सामाजिक दायित्व है और यह नैतिकता का तकाजा भी है।

आए दिन समाचार–पत्रों के माध्यम से सामाजिक विकृति के कारण होने वाली वीभत्स घटनाओं की जानकारी मिलती रहती है। आँकड़े बताते है कि ऐसी घटनाओं

में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। यह पीढ़ी हताशा के गर्त में विभिन्न प्रकार के असामाजिक कार्य करती है दिशाहीनता और निश्चित लक्ष्य का न होना उनकी इस हताशा को भी बढ़ाते है। युवा पीढ़ी को इस त्रासदी से बाहर निकालना, उनमें समाज के प्रति जवाबदेही का भाव पैदा करना, उनके सामाजिक दायित्वबोध से उन्हें अवगत् कराना और समाज में सकारात्मक भूमिका बनाने के लिए उन्हें तैयार करना – यह शायद समाज की भी उतनी जिम्मेदारी है जितनी की शिक्षण संस्थानो की। पहले परिवार और समाज उन्हे नैतिक मूल्यों की उचित शिक्षा दे तभी शैक्षणिक संस्थाएँ अपनी भूमिका में सफल हो पाएँगी। दूषित समाज और प्रदूषित सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच शिक्षा भी अपनी सार्थकता खोने लगती है। शिक्षा एक स्वस्थ समाज के लिए बहुत अच्छा ढ़ाँचा खड़ा कर सकती है। बशर्ते समाज शिक्षा व्यवस्था के प्रति गंभीर हो और उसकी महत्ता को स्वीकार करें।

उपसंहार –

नैतिक मूल्य मनुष्य के सुखी संयमित समाजोपयोगी जीवन के लिए सशक्त आधार प्रदान करते है। नैतिक मूल्यों में कभी सामाजिक विघटन की और संकेत करती है। पीढ़ी दर पीढ़ी नैतिक मूल्यों की परिभाषाएँ बदलती रहती है। लेकिन कुछ मूल्य ऐसे है जो शाश्वत है, प्रत्येक काल और समय में उनका अस्तित्त्व अनिवार्य है। ऐसे मूल्यों की रक्षा करना उनके संवर्धन के प्रयास करना और उनकी कमी को पूरा करने के लिए उन्हें पुनः प्रतिष्ठापित करना, प्रत्येक परिवार, समाज और राष्ट्र का कर्त्तव्य के निर्वहन में शिक्षण संस्थाओं को अहम् भूमिका निभानी है। देश को संस्कारित, सभ्य, संवेदनशील और सशक्त नागरिक प्रदान करना शिक्षण संस्थाओं को मुख्य कर्त्तव्य है।

आने वाला युग युवा पीढ़ी का होगा। ऐसा अनुमान है कि हमारे देश की आबादी का लगभग 70 प्रतिशत अंश युवा पीढ़ी का है। युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य निर्धारित करेगी। यदि युवा इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए तैयार हैं तभी हम देश के भविष्य को सुरक्षित मान सकते हैं। यदि युवाओं में राष्ट्र के प्रति दायित्वबोध न हो और उनका अपना व्यक्तिगत आचरण व्यवहार संयमित न हो तो वे किस प्रकार अपना और राष्ट्र का हित कर पाएँगे, यह गंभीरता से सोचने की बात है। यदि अब हमने अधिक विलंब किया और युवाओं को कर्त्तव्यबोध कराने में सफल नहीं हुए, तो शायद इतिहास भी हमें क्षमा नहीं कर पाएगा।

उद्देश्य :–

1. छात्र इस पाठ के माध्यम से नैतिकता के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. छात्र :– नैतिक मूल्यों के महत्व को जीवन में आत्मसात कर सकेंगे।
3. छात्र नैतिक मूल्यों का वर्गीकरण कर सकेंगे।
4. छात्र नैतिक मूल्यों के मूल को समझेंगे।
5. छात्र नैतिक मूल्यों को जीवन में संस्कारित करने वाली समाज की संस्थाओं के माध्यम से जान सकेंगे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	Meaning
अवधारणा	संकल्पना	Concept
समग्र	संम्पूर्ण	Entire
उत्कृष्टता	उच्चता	Excellence
अस्तेय	चोरी न करना	Non-stealing
पवित्रता	साफ सुथरा	Purity
इन्द्रिय निग्रह	इंद्रियों पर नियंत्रण	Restraint on Senses

विशेष प्रयोग

लोकव्यापीकरण	लोक सर्वत्र होना
अंर्तनिहित प्रकृति	अंतर में रहने वाली प्रकृति
राष्ट्रीय सुसंगतता	राष्ट्र के अनुसार
सामाजिक मर्यादा	समाज के अनुसार
सर्वकालिक ग्रंथ	सब समय में महत्वपूर्ण ग्रन्थ
सार्वभौमिक	सर्वसमय उपस्थित
अनुकरणीय	पालन करने योग्य
समाजोपयोगी	समाज के लिए उपयोगी

प्रतिष्ठापित स्थापित

केन्द्रीयभाव :– प्रस्तुत पाठ में जीवन के नैतिक मूल्यों का वर्गीकरण सम्बंन्धित अध्ययन किया गया हैं।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नैतिकमूल्य परिचय एंव वर्गीकरण पाठ के लेखक है।
   (अ) डा.शशिराय (ब) मुंशी प्रेमचंद्र (स) माखनलाल चतुर्वेदी (द) सुदर्शन
2. नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाये तो विकास संभव है –
   (अ) समाज का (ब) परिवार (स) राष्ट्र का (द) सभी का
3. नैतिक मूल्यों के अभाव में गिरावट आ जाती है।
   (अ) मूल्यों (ब) चरित्र का (स) स्वर्ण में (द) डॉलर में
4. मनोवैज्ञानिक मूल्यों का वर्गीकरण कितने भागों में किया है।
   (अ) छः (ब) चार (स) दो (द) आठ
5. मानव मूल्य कितने है।
   (अ) पांच (ब)तीन (स)दो (द) छः
6. वसुधैव कुटुम्बकम का भाव किस देश की सांस्कृतिक पहचान है।
   (अ) अरब देश (ब) चीन (स)अमेरिका (द)भारत
7. भारतीय जीवन मूल्यों में किसकी प्रधानता रही है।
   (अ)लाभयुक्त (ब)धार्मिक कर्म (स) निष्काम कर्म (द)व्यावसायिक कर्म
8. मूल्यों का रोपण होता है।
   (अ)किताबे पढकर (ब)गीत गाकर (स)अनुकरण (द) प्रातः भ्रमण द्वारा

9. मूल्यों का अनुमोदन होता है।

(अ) विदेशों द्वारा (ब)समाज द्वारा (स)राजनेताओं द्वारा (द) अभिनेताओं द्वारा

10. भगवद गीता में कितने मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई है :–

(अ) 26 (ब)20 (स)25 (द)22

उत्तर :–(1) अ (2) द (3) ब (4) अ (5) पांच (6) द (7) स (8) स (9) ब (10) अ

प्रश्न :– रिक्त स्थान भरिये।

1. जीवन में मूल्य ही ..... होते हैं
2. जीवन की शुद्ध क्रियाएं .....कहलाती है।
3. मनु ने धर्म के ..... लक्षण बताये है।

उत्तर :– (1) सत्य (2) धर्म (3) दस

लघुउत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्र.1 नैतिक मूल्य क्या है ?

उ0 वे गुण जो महत्वपूर्ण, उपयोगी हों जिसके पालन से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करे।

प्र.2 मूल्यों की व्याख्या किस प्रकार करना चाहिए।

उ0 मूल्यों की व्याख्या त्रिस्तरीय हो : वयक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय ।

प्र.3 भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन के मूल्य और धर्म क्या है ?

उ0 जीवन के मूल्य सत्य तथा शुद्ध क्रियाएँ ही धर्म है।

प्र.4 मानव मूल्य कौन से हैं ?

उ0 मानव मूल्य ये पाँच तत्व हैं: – सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा।

प्र.5 भगवद्गीता के अनुसार कितने मानवीय मूल्य है।

उ0 गीता में 26 मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई है।

प्र.6 मनु के अनुसार धर्म के लक्षण कौन से है।

उ0 धर्म के 10 लक्षण है – धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या सत्य एवं अक्रोध।

प्र.7 भारतीय जीवन के मूल्यों मे किस तत्व की प्रधानता है।

उ0 भारतीय जीवन मूल्यो मे कर्म की प्रधानता हैं।

प्र.8 मूल्यों के वर्गीकरण के भाग लिखें।

उ0 चार भाग है :–

1 दार्शनिक मूल्य

2 सामाजिक मूल्य

3 मनोवैज्ञानिक मूल्य

4 सार्वभौमिक मूल्य

प्र.9 सार्वभौमिक मूल्य कौन से है।

उ0 अ) सत्य (ब) धर्म (स) शांति (द) प्रेम (इ) अहिंसा

प्र.10 नैतिक मूल्यों का रोपण स्तर में मुख्य किन संस्थाओं की भूमिका मुख्य है।

उ0 परिवार, शिक्षण संस्थाए, समाज तथा सामाजिक परिवेश ।

सारांश –: सम्पूर्ण जीवजगत में मनुष्य निराला प्राणी है क्योंकि उसने अपने संयमित जीवन के लिए कुछ नियम बनाये है। यही नियम मूल्य कहलाते है। मूल्य मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं और अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ सावित करते हैं। जीवन की जटिलता एवं विषमता के बीच एक बात जो समान रूप से सभी पर लागू होती है वह है जीवन मूल्य। मूल्य तीन तरह के हो सकते है।

व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय

इन मूल्यों के लिए समग्र प्रयास करना स्वस्थ समाज की मूलभूत आवश्यकता है। परन्तु जैसे–जैसे विभिन्न स्तरो पर जीवन में परिवर्तन होता है, मूल्य भी संक्रमण काल से गुजरते हुए परिवर्तित होते है। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने परिवेश और अपनी परिस्थितियों के अनुसार मूल्यों को परिभाषित करने लगता है। इसकी वजह से भी विरोधाभास उत्पन्न हुआ है। जिसके कारण हमारे जीवन मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे है। हमारा समाज भौतिक उन्नति तो कर रहा है परन्तु नैतिक नही। यदि यह

सिलसिला समाप्त नहीं हुआ तो मनुष्य का असमाजीकरण हो जाएगा और मनुष्यता के समक्ष एक विकट समस्या उत्पन्न हो जाएगी। अतः मूल्यों को पुनः स्थापित करने की महती आवश्यकता है। उन्नत राष्ट्र के लिए मूल्य युक्त नागरिकों की आवश्यकता होती है। ऐसे नागरिको ंका निर्माण शिक्षा व्यवस्था की पहली चुनौती एवं जिम्मेदारी दोनों है। भौतिकता की वजह से मानवीय संवेदनाओ को संकुचित कर दिया है, स्वहित के आगे राष्ट्रहित पीछे छूट गया है एवं व्यक्तिवादिता बढ़ गई हैं। अतः शिक्षा के माध्यम से इसे सुधारा जा सकता है, बशर्ते शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण हो। शिक्षा यदि सही हो तो वह जीवन के प्रत्येक पहलू तक पहुंच रखती है। यह व्यक्ति को मुक्त करती है एवं जीवन को परिपूर्णता प्रदान करती है। यह सबके प्रति समान भाव रखते हुए व्यक्ति को उत्कृष्टता प्रदान करती है।

Summary -

Values are an important source of meaningfulness to human life. It renders the human life a kind of better placed position than other living creatures. To inculcate these values, efforts are directed towards young fellows because this pursuance is the fundamental necessity of a healthy human Society . Human beings are progressing materialistically but are lacking morally. If this continues for a long time , then humans will suffer a lot .To get an informed nation ,its citizens should be thoroughly value based. And here this responsibility lies with education system which is not only a responsibility but a challenge as well. The education system has the task to produce cultured ,civilised and empowered citizens for attaining the goal of a value based society

आचरण की सभ्यता

सरदार पूर्णसिंह

लेखक परिचय –

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मात्र छः निबन्धों के बल पर अमरत्व प्राप्त सरदार पूर्णसिंह का व्यक्तित्व एंव साहित्य दोनों ही अनुकरणीय है। उनके निबध भावात्मकता से परिपूर्ण होते हैं। उन्होने हिन्दी के साथ –2 पंजाबी और अग्रेंजी में महत्वपूर्ण साहित्य सृजित किया। मूलतः वे फार्मेसी के विशेषज्ञ थे।

कृतियां –

कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता , मजदूरी और प्रेम, अमेरिका का मस्त जोगीः वाल्ट व्हिटमैन, सर्वाधिक प्रतिष्ठित निबन्ध : कन्यादान

मूल पाठ –

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। इस भाषा का निघण्टु शुद्ध श्वेत–पत्रों वाला है। इसमें नाममात्र के लिए भी शब्द नहीं। यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है, व्याख्यान देता हुआ भी व्याख्यान के पीछे छिपा है, राग गाता हुआ भी राग के सुर के भीतर पडा है। मृदु वचनों की मिठास के आचरण की सभ्यता मौन रूप से खुली हुई है। नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सब–के–सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान हैं। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है और उसकी आत्मा का एक अंग हो जाता है।

न काला, न नीला, न पीला, न सफेद, न पूर्वी, न पश्चिमी, न उत्तरी, न दक्षिण, बेनाम, बेनिशान, बेमकान, आत्मा के आचरण से मौन रूपिणी सुंगधि सदा प्रसारित हुआ करती है। इसके मौन से प्रसूत प्रेम और पवित्रता धर्म सारे जगत का कल्याण करके विस्तृत होते हैं।

इसकी उपस्थिति से मन और हृदय की ऋतु बदल जाती है। तीक्ष्ण गर्मी से जले–भुने व्यक्ति आचरण के काले बादलों की बूँदाबूंदी से शीतल हो जाते हैं। मानसोत्पन्न शरद् ऋतु क्लेशातुर हुए पुरूष इसकी सुगंधमय अटल बसंत ऋतु के आनंद का पान करते हैं। आचरण के नेत्र के एक अश्रु से जगत भर के नेत्र भीग जाते हैं। आचरण के आनंद नृत्य से उन्मदिष्णु होकर वृक्षों और पर्वतों तक के हृदय नृत्य करने लगते हैं। आचरण के मौन व्याख्यान से मनुष्य को एक नया जीवन प्राप्त होता है। नए–नए विचार प्रकट होने

लगते हैं। सूखे काष्ठ सचमुच ही हरे हो जाते हैं। सूखे कूपों में जल भर आता है। नए नेत्र मिलते है। कुछ पदार्थों के साथ एक नया मैत्री भाव फूट पड़ता है। सूर्य, जल, वायु, पुष्प, पत्थर, घास, पात, नर, नारी और बालक तक में एक अभूतपूर्व सुंदर मूर्ति के दर्शन होने लगते हैं।

मौनरूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बलवती, इतनी अर्थवती और इतनी प्रभावती होती है कि उसके सामने क्या मातृभाषा, क्या साहित्यभाषा और क्या अन्य देश की भाषा सब–की–सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचरण की मौन भाषा की ईश्वरीय है। विचार करके देखो, मौन व्याख्यान किस तरह आपके हृदय की नाड़ी–नाड़ी में सुंदरता को पिरो देता है। वह व्याख्यान ही क्या, जिसने हृदय की धुन को, मन के लक्ष्य को ही न बदल दिया। चन्द्रमा की मंद–मंद हँसी का तारागण से कटाक्षपूर्ण प्राकृतिक मौन व्याख्यान का प्रभाव किसी कवि के दिल में घुसकर देखो। सूर्यास्त होने के पश्चात् श्री केशवचंद्र सेन और महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने सारी रात एक क्षण की तरह गुजार दी, यह तो कल की बात है। कमल और नरगिस में नयन देखने वाले नेत्रों से पूछो कि मौन व्याख्यान की प्रभुता कितनी दिव्य है।

प्रेम की भाषा शब्द रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण प्रभाव, शील, अचलस्थित संयुक्त आचरण– न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गढ़ा जा सकता है, न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से, न इंजील से, न कुरान से, न धर्म चर्चा से, न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में धँसे हुए पुरूष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़ों की मंद–मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

बर्फ का दुपट्टा बाँधं हुए हिमालय इस समय तो अति सुंदर, अति ऊँचा और अति गौरवान्वित मालूम होता है, परन्तु प्रकृति ने अगणित शताब्दियों के परिश्रम से रेत का एक–एक परमाणु समुद्र के जल में डुबो–डुबोकर और उनको अपने क्षितिज हथौड़े से सुडौल करके इस हिमालय के दर्शन कराए हैं। आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊँचे कलशवाला मंदिर है। यह वह आम का पेड़ नहीं, जिसको मदारी एक क्षण में, तुम्हारी आँखों में मिट्टी डालकर अपनी हथेली पर जमा दे। इसके बनने में अनंत काल लगा है। पुथ्वी बन गई, सूर्य बन गया, तारागण आकाश में दौड़ने लगे, परन्तु अभी तक आचरण के

सुदंर रूप के पूर्ण दर्शन नहीं हुए। कहीं–कहीं उसकी अत्यन्त सुंदर छटा अवश्य दिखाई देती है।

पुस्तकों में लिखे हुए नुस्खों से तो और भी अधिक बदहजमी हो जाती है। सारे वेद और शास्त्र भी यदि घोलकर पी लिए जाएँ, तो भी आदर्श आचरण की प्राप्ति नहीं होती। आचरण प्राप्ति की इच्छा रखने वाले को तर्क–वितर्क से कुछ भी सहायता नहीं मिलती। शब्द और वाणी तो साधारण जीवन के चोचले हैं। ये आचरण की गुप्त गुहा में नहीं प्रवेश कर सकते। वहाँ इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वेद इस देश के रहने वालों के विश्वासानुसार ब्रह्मवाणी हैं, परन्तु इतना काल व्यतीत हो जाने पर भी आज तक वे समस्त जगत की भिन्न–भिन्न जातियों को संस्कृत भाषा न बुला सके– न समझा सके – न सिखा सके। यह ज्ञात हो कैसे ? ईश्वर तो सदा मौन है। ईश्वरीय मौन शब्द और भाषा का विषय नहीं। यह केवल आचरण के कान में गुरूमंत्र फूँक सकता है। यह केवल ऋषि के दिल में वेद का ज्ञानोदय कर सकता है।

किसी का आचरण वायु के झोंके से हिल जाए तो हिल जाए, परन्तु साहित्य और शब्द की गोलन्दाजी और आँधी से उसके सिर के एक बाल तक का बाँका न होना एक साधारण बात है। पुष्प की कोमल पंखुड़ी के स्पर्श से किसी को रोमांस हो जाए, जल की शीतलता से क्रोध और विषय–वासना शांत हो जाए, बर्फ के दर्शन से पवित्रता आ जाए, सूर्य की ज्योति से नेत्र शुल जाएँ–परन्तु अंग्रेजी भाषा का व्याख्यान – चाहे वह कारलायल ही का लिखा हुआ क्यों न हो–बनारस में पंडितों के लिए रामरोला ही है। इसी तरह न्याय और व्याकरण की बारीकियों के विषय में पंडितों के द्वारा की गई चर्चाएँ और शास्त्रीय संस्कृत ज्ञान–हीन पुरूषों के लिए स्टीम इंजन के फुस–फुस शब्द से अधिक अर्थ नहीं रखते। यदि आप कहें व्याख्यानों द्वारा, उपदेशों के द्वारा, धर्मचर्चा द्वारा कितने ही पुरूषों और नारियों के हृदय पर जीवन–व्यापी प्रभाव पड़ा है, तो उत्तर यह है कि प्रभाव शब्द का नहीं पड़ता– प्रभाव तो सदा सदाचरण का पड़ता है। साधारण उपदेश तो हर गिरजे, हर मंदिर और हर मस्जिद में होते हैं, परन्तु उनका प्रभाव तभी हम पर पड़ता है जब गिरजे का पादरी स्वयं ईसा होता है, मंदिर का पुजारी स्वयं ब्रह्मर्षि होता है, मस्जिद का मुल्ला स्वयं पैगम्बर और रसूल होता है।

यदि एक ब्राह्मण किसी डूबती कन्या की रक्षा के लिए– चाहे वह कन्या जिस जाति की हो, जिस किसी मनुष्य की हो, जिस किसी देश की हो, अपने आप को गंगा में फेंक दे,

चाहे उसके प्राण यह काम करने में रहे चाहे जाएँ– तो इस कार्य में प्रेरक आचरण की मौनमयी भाषा किस देश में, किसी जाति में और किस काल में, कौन नहीं समझ सकता? प्रेम का आचरण, दया का आचरण, या पशु क्या मनुष्य– जगत के सभी चराचर आप–ही–आप क्या समझ लेते हैं ? जगत भर के बच्चों की भाषा इस भाष्यहीन भाषा चिह्न के इस शुद्ध मौन का नाद और हास्य भी सब देशों में एक ही–सा पाया जाता है।

मनुष्य का जीवन इतना विशाल है कि उसके आचरण को रूप देने के लिए नाना प्रकार के ऊँच–नीच और भले–बुरे विचार, अमीर और गरीबी, उन्नति और अवनति इत्यादि सहायता पहुँचाते हैं। पवित्र–अपवित्र उतनी ही बलवती है, जितनी कि पवित्र पवित्रता। जो कुछ जगत में हो रहा है वह केवल आचरण के विकास के अर्थ में हो रहा है। अन्तरात्मा वही काम करती है जो बाह्य पदार्थों के संयोग का प्रतिबिम्ब होता है। जिनको हम पवित्रात्मा कहते हैं, क्या पता है, किन–किन कूपों से निकलकर वे अब उदय को प्राप्त हुए हैं, जिनको हम धर्मात्मा कहते हैं, जिनको हम सभ्य कहते हैं और जो अपने जीवन में पवित्रता को ही सब कुछ समझते हैं, क्या पता है, वे कुछ काल पूर्व बुरी और अधर्म पवित्रता में लिप्त रहे हों। अपने जन्म–जन्मान्तरों के संस्कारों से भरी हुई अन्धकारमय कोठरी से निकलकर ज्योति और स्वच्छ वायु से परिपूर्ण खुले हुए देश में जब तक अपना आचरण अपने नेत्र न खोल चुका हो, तब तक धर्म के गूढ़ तत्व कैसे समझ में आ सकते हैं। नेत्र–रहित को सूर्य से क्या लाभ? कविता, साहित्य, पीर, पैगम्बर, गुरू, आचार्य, ऋषि आदि के उपदेशों से लाभ उठाने का यदि आत्मा में बल नहीं तो उनसे क्या लाभ? जब तक वह खाद की गर्मी से अंकुरित नहीं हुआ और प्रस्फुटित होकर उससे दो नए पत्ते ऊपर नहीं निकल आए तब तक ज्योति और वायु उसके किस काम के?

वह आचरण को धर्म–सम्प्रदायों के अनुच्चरित शब्दों को सुनाता है, हम में कहाँ जब वही नहीं, तब फिर क्यों न ये सम्प्रदाय हमारे मानसिक महाभारतों के कुरूक्षेत्र बने? क्यों न अप्रेम, अपवित्र, हत्या और अत्याचार इन सम्प्रदायों के नाम से हमारा खून करें। कोई भी सम्प्रदाय आचरण रहित पुरूषों के लिए कल्याणकारक नहीं हो सकता और आचरण वाले पुरूषों के लिए सभी धर्म सम्प्रदाय कल्याणकारक हैं। सच्चा साधु धर्म को गौरव देता है, धर्म किसी को गौरवान्वित नहीं करता। आचरण का विकास जीवन का परमोद्देश्य है। आचरण के विकास के लिए नाना प्रकार की सामग्रियों का, जो संसार–संभूत शारीरिक, प्राकृतिक, मानसिक और आध्यात्मिक जीवन में वर्तमान है, उन सबका (सबकी?) क्या एक

पुरूष और क्या एक जाति के आचरण के विकास के लिए जितने कर्म हैं उन सबको आचरण के संघटनकर्ता धर्म का अंग मानना पड़ेगा। चाहे कोई कितना ही बड़ा महात्मा क्यों न हो, वह निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि यों ही करो और किसी प्रकार नहीं। आचरण की सभ्यता की प्राप्ति के लिए वह सबको एक पथ नहीं बता सकता। आचरणशील महात्मा स्वयं भी किसी अन्य के बनाए हुए रास्ते पर चलकर अपने आचरण को आदर्श के ढाँचे में नहीं ढाल सकते। हमें अपना रास्ता अपने जीवन की कुदाली की एक–एक चोट से रात–दिन बनाना पड़ेगा और उसी पर चलना भी पड़ेगा। हर किसी को अपने देश, कालानुसार यह प्राप्ति के लिए अपनी नैया आप ही बनानी पड़ेगी और आप ही चलानी भी पडेगी।

यदि मुझे ईश्वर का ज्ञान नहीं तो ऐसे ज्ञान से क्या प्रयोजन? जब तक मैं अपना हथौड़ा ठीक–ठीक चलाता हूँ और रूपहीन लोहे को तलवार के रूप में गढ़ देता हूँ तब तक मुझे यदि ईश्वर का ज्ञान नहीं तो नहीं होने दो। उस ज्ञान से मुझे प्रयोजन ही क्या? जब तक मैं अपना उद्धार ठीक और शुद्ध रीति से किए जाता हूँ तब तक यदि मुझे आध्यात्मिक पवित्रता का ज्ञान नहीं होता, न होने दो। उससे सिद्धि ही क्या हो सकती है, जब तक किसी जहाज के कप्तान के हृदय में इतनी वीरता भरी हुई है कि वह महाभयानक समय में अपने जहाज को नहीं छोड़ता तब तक यदि वह मेरी और तेरी दृष्टि में शराबी और स्त्रैण है तो उसे वैसा ही होने दो। उसकी बुरी बातों से हमें प्रयोजन ही क्या? आँधी हो, बर्फ हो, बिजली की कड़क हो, समुद्र का तूफान हो, वह दिन–रात आँख खोले अपने जहाज की रक्षा के लिए जहाज के पॉल पर घूमता हुआ अपने धर्म का पालन करता है। वह अपने जहाज के साथ समुद्र में डूब जाता है, परन्तु अपना जीवन बचाने के लिए कोई उपाय नहीं करता। क्या उसके आचरण का यह अंश मेरे–तेरे बिस्तर और आसान पर बैठे–बिठाए कहे हुए निरर्थक शब्दों के भाव से कम महत्व का है?

न मैं किसी गिरजे में जाता हूँ और न किसी मंदिर में, न मैं नमाज पढ़ता हूँ और न रोजा ही रखता हूँ, न संध्या ही करता हँ और न कोई देव–पूजा ही करता हँ, न किसी आचार्य के नाम का मुझे पता है और न किसी के आगे मैंने सिर ही झुकाया है। तो इससे प्रयोजन ही क्या और इससे हानि भी क्या? मैं तो अपनी खेती करता हूँ, अपने हल और बैलों को प्रातःकाल उठकर प्रणाम करता हूँ मेरा जीवन जंगल के पेड़ो और पत्तियों की संगति से गुजरता है। आकाश के बादलों को देखते मेरा दिन निकल जाता है। मैं किसी

को धोखा नहीं देता, हाँ यदि मुझे कोई धोखा दे तो उससे मेरी कोई हानि नहीं। मेरे खेत में अन्न उग रहा है, मेरा घर अन्न से भरा है, बिस्तर के लिए मुझे एक कमली काफी है, कमर के लिए लँगोटी और सिर के लिए एक टोपी बस है। हाथ–पाँव मेरे बलवान हैं, शरीर मेरा आरोग्य है, भूख खूब लगती है, बाजरा और मकई, छाछ और दही, दूध और मक्खन मुझे और बच्चों को खाने के लिए मिल जाता है। क्या इस किसान की सादगी और सच्चाई में वह मिठास नहीं जिसकी प्राप्ति के लिए भिन्न–भिन्न धर्म, सम्प्रदाय, लंबी–चौड़ी और चिकनी–चुपड़ी बातों द्वारा दीक्षा दिया करते हैं।

जब साहित्य, संगीत और कला की अति ने रोम को घोड़े से उतारकर मखमल के गद्दों पर लिटा दिया, जब आलस्य और विषय विकार की लम्पटता ने जंगल और पहाड़ की साफ हवा के असभ्य और उद्दण्ड जीवन से रोमवालों का मुख मोड़ दिया, तब रोम नरम तकियों और बिस्तरों पर ऐसा सोया कि अब तक न आप जागा और न कोई उसे जगा सका। ऐंग्लो सैक्सन जाति ने जो उच्च पद प्राप्त किया, बस उसने अपने समुद्र, जंगल और पर्वत से संबंध रखने वाले जीवन से प्राप्त किया। जाति की उन्नति लड़ने–भिड़ने, मरने–मारने, लूटने और लूटे जाने, शिकार करने और शिकार होने वाले जीवन का ही परिणाम है। लोग कहते हैं, केवल धर्म ही जाति की उन्नति करता है। यह ठीक है, परन्तु यह धर्मांकुर जो जाति को उन्नत करता है, इस असत्य, कमीने पापमय जीवन की गंदी राख के ढेर के ऊपर नहीं उगता है। मन्दिरों और गिरजों की मन्द–मन्द टिमटिमाती हुई मोमबत्तियों की रोशनी से यूरोप इस उच्चावस्था को नहीं पहुँचा। वह कठोर जीवन, जिसको देश–देशान्तरों में ढूँढते फिरते रहने के बिना शान्ति नहीं मिलती जिसकी अन्तर्ज्वाला दूसरी जातियों को जीतने, लूटने, मारने और उन पर राज करने के बिना मन्द नहीं पड़ती, केवल वही विशाल जीवन समुद्र की छाती पर मूँग दलकर और पहाड़ो को फाँदकर उनकी उस महानता की ओर ले गया और ले जा रहा है। राबिनहुड की प्रशंसा में जो कवि अपनी सारी शक्ति खर्च कर देते हैं उन्हें तत्वदर्शी कहना चाहिए, क्योंकि राबिनहुड जैसे भौतिक पदार्थों से ही नेलसन और वेलिंगटन जैसे अंग्रेज वीरों की हड्डियाँ तैयार हुई थी। लड़ाई के आजकल के सामान गोला, बारूद, जंगी जहाज और तिजारती बेडों आदि को देखकर कहना पड़ता है कि इनसे वर्तमान सभ्यता से भी कहीं अधिक उच्च सभ्यता का जन्म होगा।

धर्म और आध्यात्मिक विद्या के पौधे को ऐसी आरोग्यवर्द्धक भूमि देने के लिए, जिसमें वह प्रकाश और वायु में सदा खिलता रहे, सदा फूलता रहे, सदा फलता रहे, वह आवश्यक है कि बहुत से हाथ एक अनन्त प्रकृति के ढेर को एकत्र करते रहे। धर्म की रक्षा के लिए क्षत्रियों को सदा ही कमर के बाँधे हुए सिपाही बने रहने का भी तो यही अर्थ है। यदि कुल समुद्र का जल उड़ा दो तो रेडियम धातु का एक कण कहीं हाथ लगेगा। आचरण का रेडियम–क्या एकपुरूष का और क्या जाति का और क्या एक जगत का–सारी प्रकृति को खाद बनाए बिना, सारी प्रकृति को हवा में उड़ाए बिना भला कब मिलने का है? प्रकृति को मिथ्या करके नहीं उड़ाना, उसे उड़ाकर मिथ्या करना है? समुद्रों में डोरा डालकर अमृत निकाला है, सो भी कितना? जैसे – सारे संसार की खाक छानकर आचरण का स्वर्ण हाथ आता है। क्या बैठे–बिठाए भी वह मिल सकता है।

हिन्दुओं का संबंध यदि किसी प्राचीन असभ्य जाति के साथ रहा होता तो उनके वर्तमान वंश में अधिक बलवान श्रेणी के मनुष्य होते तो उनमें भी ऋषि, पराक्रमी, जनरल और धीर–वीर पुरूष उत्पन्न होते, आजकल तो वे उपनिषदों के ऋषियों के पवित्रतामय प्रेम के जीवन को देख–देखकर अहंकार में मग्न हो रहे हैं और दिन–पर–दिन अधोगति की ओर जा रहे हैं। यदि वे किसी जंगली जाति की संतान होते तो उनमें भी ऋषि और बलवान योद्धा होते। ऋषियों को पैदा करने के योग्य पृथ्वी का बन जाना तो आसान है, परन्तु ऋषियों को अपनी उन्नति के लिए राख और पृथ्वी बनाना कठिन है, क्योंकि ऋषि तो केवल अंतःप्रकृति पर सजते हैं, हमारी जैसी पुष्प शय्या पर मुरझा जाते हैं। माना कि प्राचीन काल में यूरोप में सभी असभ्य थे, परन्तु आजकल तो हम असभ्य हैं। उनकी असभ्यता के ऊपर ऋषि जीवन की उच्च सभ्यता फूल रही है और हमारे ऋषियों के जीवन के फूल की शैया पर आजकल असभ्यता का रंग चढ़ा हुआ है। सदा ऋषि पैदा करते रहना, अर्थात् अपनी ऊँची चोटी के ऊपर इन फूलों को सदा धारण करते रहना ही जीवन के नियमों का पालन करना है।

धर्म के आचरण की प्राप्ति यदि ऊपरी आडम्बरों से होती तो आजकल भारत के निवासी सूर्य के समान शुद्ध आचरण वाले हो जाते। भाई! माला से तो जप नहीं होता। गंगा नहाने से तो तप नहीं होता। पहाड़ों पर चढ़ने से प्राणायाम हुआ करता है, समुद्र में तैरने से नेती धुलती है। आँधी, पानी और साधारण जीवन के ऊँच–नीच गर्मी, सर्दी, गरीबी–अमीरी को झेलने से तप हुआ करता है। आध्यात्मिक धर्म के स्वप्नों की शोभा तभी

भली लगती है जब आदमी अपने जीवन का धर्म पालन करे। खुले समुद्र में अपने जहाज पर बैठकर ही समुद्र की आध्यात्मिक शोभा का विचार होता है। भूखे को तो चन्द्र और सूर्य भी केवल आटे की बड़ी–बड़ी दो रोटियों से प्रतीत होते हैं। कुटिया में ही बैठकर धूप, आँधी और बर्फ की दिव्य शोभा का आनंद आ सकता है। प्राकृतिक सभ्यता के आने पर ही मानसिक सभ्यता आती है और तभी वह स्थिर रह सकती है। मानसिक सभ्यता के होने पर ही आचरण की सभ्यता की प्राप्ति संभव है और तभी वह स्थिर भी हो सकती है। जब तक निर्धन पुरूष पाप से अपना पेट भरता है तब तक धनवान पुरूष के शुद्धाचरण की पूरी परीक्षा नहीं होती। इसी प्रकार जब तक अज्ञानी का आचरण अशुद्ध है तब तक ज्ञानवान के आचरण को पूरी परीक्षा नहीं, तब तक जगत में आचरण की सभ्यता का राज्य नहीं। आचरण की सभ्यता का देश ही निराला है। उसमें न शारीरिक झगड़े हैं, न मानसिक, न आध्यात्मिक। न उसमें विद्रोह है, न जग ही का नामोनिशान है और वहाँ कोई ऊँचा है, न नीचा। न कोई वहाँ धनवान है और न कोई वहाँ निर्धन। वहाँ प्रकृति का नाम नहीं, वहाँ तो प्रेम और एकता का अखण्ड राज्य रहता है। जिस समय आचरण की सभ्यता संसार में आती है उस समय नीले आकाश से मनुष्य को वेद–ध्वनि सुनाई देती है, नर–नारी पुष्पवत् खिलते जाते है, प्रभात हो जाता है, प्रभात का बजर बज जाता है। नारद की वीणा आलापने लगती है, ध्रुव का शंख गूँज उठता है, प्रहलाद का नृत्य होता है, शिव का डमरू बजता है, कृष्ण की बाँसुरी की धुन प्रारम्भ हो जाती है। जहाँ ऐसे शब्द होते हैं, जहाँ ऐसे पुरूष रहते हैं, वहाँ ऐसी ज्योति होती है, वही आचरण की सभ्यता का सुनहरा देश है। वही देश मनुष्य का स्वदेश है। जब तक घर न पहुँच जाए, सोना अच्छा नहीं, चाहे वेदों में, चाहे इंजील, में चाहे कुरान में, चाहे त्रिपीटक (त्रिपिटक) में, चाहे इस स्थान में, चाहे उस स्थान में, कहीं भी सोना अच्छा नहीं, आलस्य मृत्यु है। लेख तो पेड़ो के चित्र सदृश होते हें, पेड़ तो होते ही नहीं जो फल लदें।

उददेश्य :–

1. छात्र निबन्ध के माध्यम से लेखक सरदार पूर्णसिंह के जीवन व उपलब्धियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2. छात्र निबन्ध के माध्यम से भाषा और भाव की नयी विधा के विषय में जानकारी पायेगे।
3. छात्र इस पाठ के माध्यम से आचरण को किस प्रकार मृदु वचनों के द्वारा प्रकट करना चाहिए; जान सकेगे।

4. छात्र इसके माध्यम से किस प्रकार आचरण के द्वारा व्यक्ति को नवजीवन मिल सकता हैं, के विषय मे जानेगे।
5. छात्र आचरण में प्रेम के महत्व को भी समझ सकेंगे।

शब्दार्थ –

ज्योतिष्मति	–	प्रकाशयुक्त	lighted
काष्ठ	–	लकडी	Wood
अर्थवती	–	सार्थक	Meaningfulness
तुच्छ	–	निम्न	petty
तारागण	–	तारों का समूह	Group of Stars
ब्रहमवाणी	–	ईश्वर की वाचा	Voice of God
पंखुडी	–	पत्ता	Petal
आचरण	–	चरित्र	Conduct
आरोग्य	–	रोगमुक्त	Disease free
त्रिपीटिक	–	पवित्र बौद्ध ग्रंथ	Holi book of Buddha
अरण्य	–	जंगल	forest
रामरोला	–	व्यर्थ शोरगुल	useless noise
सम्भूत	–	उत्पन्न	originate
उन्मदिष्णु	–	उन्माद युक्त	Hysterical
अश्रुतपूर्व	–	जो पहले न सुना गया हो	Unheard of
निघण्टु	–	संस्कृत शब्दकोश	Sanskrit vacabulary
क्लेशातुर	–	दुख से व्याकुल	Full of Sorrow

विशेष प्रयोग

मानसोत्पन्न	–	मन से उत्पन्न
विषय विकार	–	विषय विकृति
आचरण का रेडियम	–	आचरण की चमक
वेदध्वनि	–	वेदो के अनुसार आवाज
प्राणायाम	–	एक प्रकार की योग क्रिया जिसमें श्वास अंदर बाहर की जाती है।

नेती – हठयोग की एक विशेष क्रिया, जिसमें पेट में कपड़े की एक पतली पट्टी डालकर सफाई की जाती है।

बलवान योद्धा – शक्तिशाली युद्धवीर

केन्द्रीयभाव :– पाठ में मनुष्य के आचरण को सर्वोच्च स्थान देकर उसको सभ्य बनाने की कुंजी के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रश्न :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आचरण कहा जाता है।

   (अ)स्वयं के प्रति व्यवहार (ब)दूसरो के प्रति व्यवहार

   (स)किसी एक के प्रति (द)सभी के प्रति

2. आचरण के सभ्यता के लेखक ..... है।

   (अ)प्रेमचंद्र (ब)धर्मपाल (स)सरदार पूर्ण सिंह (द)डॉ. प्रेम भारती

3. आचरण का विकास जीवन में ..... है।

   (अ)संयोजन (ब)प्रयोजन (स)परमोदेश्य (द) धर्म

4. सभ्याचरण की भाषा का मौन व्याख्यान .....है।

   (अ)वचन (ब)नम्रता (स)आत्मा (द) राम

5. प्राकृतिक सभ्यता आने पर ही .....सभ्यता आती है।

   (अ)कायिक (ब)सात्विक (स)मानसिक (द) धार्मिक

6. संसार की खाक छानकर आचरण का .....सभ्यता आती हैं

   (अ)मोती (ब)हीरा (स)रत्न (द)स्वर्ण

7. सच्चा साधु .....को गौरव देता है–

   (अ)कर्म (ब)कार्य (स)धर्म (द)सेवा

8. जीवन का तत्व ..... से परे है।

   (अ)श्वास (ब)वाद (स)शब्द (द)सेवा

9. आचरण की ..... भाषा ही ..... है।

   (अ)मौन ईश्वरीय (ब)मुखर, ईश्वरीय (स)मौन, सार्थक (द)सार्थक, मुखर

10. आचरण की सभ्यता के आगमन पर मनुष्य को सुनाई देती है।

(अ)शंख ध्वनि (ब)वीणा की ध्वनि (स)नाद ध्वनि (द)वेद ध्वनि

उ0 (1)अ (2) स (3) स (4) ब (5) स (6) द (7) स (8) स (9) अ (10) द

रिक्त स्थान भरों :–

- आचरण की सभ्यता जो हम ..... अपनाते हैं, वह व्यवहार हैं।
- आचरण को ..... नहीं जा सकता।
- प्रेम की भाषा .....रहित है।

उ0 (1) दूसरों के प्रति (2) सीखा (3) शब्द

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्र.1 आचरण की सभ्यता को किस भाषा में व्यक्त किया है।

उ0 लेखक ने इसे मौन भाषा मे व्यक्त किया हैं। इसमें कोई शब्द नही है।

प्र.2 मौनरूपी भाषा का क्या महत्व है ?

उ0 इसकी महत्ता इतनी बलवती ,अर्थवती, प्रभावती होती है उसके सामने क्या मातृभाषा क्या साहित्यभाषा और क्या अन्य देश की भाषा ,सब तुच्छ प्रतीत होती है।

प्र.3 प्रेम की भाषा को परिभाषित करें।

उ0 प्रेम की भाषा शब्दरहित है । नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द रहित हैं।

प्र.4 जीवन का तत्व क्या है।

उ0 जीवन का तत्व भाव रहित शब्द से परे है।

प्र.5 आचरण का अर्जन कैसे होता है।

उ0 आचरण को सीखा नही जा सकता । हमे प्रकृति की शरण में जाकर ही श्रेष्ठ आचरण की प्राप्ति हो सकती है।

प्र.6 आचरण की सभ्यता के आगमन पर क्या होता है।

उ0 उस समय नीले आकाश से मनुष्य को वेद–ध्वनि सुनाई देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

प्र.1 ''आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उ0 आचरण की मौन भाषा बहुत ही प्रभावशाली होती है। इसके समक्ष/सामने मातृभाषा,साहित्यिक भाषा तथा अन्य देश की भाषा सभी तुच्छ/हीन/कमतर प्रतीत होती है। इसीलिए कहा जाता है कि अन्य भाषा दिव्य नहीं सिर्फ आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय हैं।

प्र.2 आचरण की सभ्यता का देश निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उ0 आचरण की सभ्यता के देश में न तो किसी प्रकार के झगड़े है, न ही किसी प्रकार का विद्रोह है, वहां कोई छोटा/बड़ा ऊँचा/नीचा भी नही है। न तो कोई धनवान अथवा निर्धन है, मात्र प्रेम एंव एकता का अखण्ड राज्य व्याप्त रहता है। अद्वितीयता कें कारण आचरण की सभ्यता का देश निराला है।

प्र.3 आचरण के नेत्र के एक अश्रु से जगत भर के नेत्र भीग जातें हैं, स्पष्ट कीजिए?

उ0 किसी के आचरण को देखकर हमारी धारणाएं, हमारे विचार बदल जाते हैं, उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति क्रोध में हो एंव उसके साथ अच्छा आचरण किया जाये तो उसके अन्दर की ज्वाला/गर्मी/क्रोध भी शीतलता में बदल सकती है। इसलिए कहा जाता है। कि आचरण के नेत्र के एक अश्रु अथवा आंसू से जगत भर के नेत्र भीग जाते है। कहने का तात्पर्य /आशय है कि अगर अच्छे आचरण वाले व्यक्ति को कोई कष्ट उठाना पड़े तो उसका प्रभाव औरों पर भी प्रकट होता हैं उसके कष्ट/ दुःख से दूसरों की आंखे भी भीग जाती हैं।

सारांश – सरदार पूर्ण सिंह ने मात्र छह निबंधो के बल पर हिन्दी साहित्य में भमरत्व प्राप्त किया। वे भावानात्मक निबंधो के जन्मदाता और लाक्षणिक शैली के प्रवर्तक के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्होने हिन्दी के साथ–साथ पंजावी और अंग्रेजी में भी महत्वपूर्ण साहित्य की रचना की। हिन्दी में उनके सबसे प्रसिद्ध निबंध : कन्यादान एवं आचरण की सभ्यता है। उन्होनों कन्यादान निबंध के माध्यम से हिन्दी गद्य में अपना स्थान बनाया। उन्होनें आचरण की सभ्यता को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया है। इनके अनुसार आचरण की सभ्यता को प्राप्त करके एक कंगाल व्यक्ति भी राजाओं के दिलों पर राज कर सकता है/प्रभाव जमा सकता है।

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। मीठे बोल का प्रभाव जगजाहिर है। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है और उसकी आत्मा का एक अंग हो जाता है।

आचरण की सभ्यता एक साहित्यिक निबंध हैं इस निबंध में शुद्ध, सहज एवं प्राकृतिक आचरण पर जोर दिया गया है। आचरण की सभ्यता को विद्या, कला, साहित्य एवं राजस्व से भी अधिक स्थायी एवं प्रभावशाली बनाया गया है। दरअसल, आचरण को सीखा नहीं जा सकता। धर्मयुक्त आचरण की प्राप्ति ऊपरी आण्डबरों से नहीं होती। प्राकृतिक सभ्यता के आने पर ही मानसिक सभ्यता आती है एवं वह स्थिर भी रहती है। हमें प्रकृति की शरण में जाकर ही श्रेष्ठ आचरण की प्राप्ति हो सकती है। प्रभाव शब्द का नहीं, आचरण का पडता है। आचरण की सभ्यता को विद्या, कला, साहित्य एवं राजस्व से भी अधिक प्रभाव पडता है। इस मौन व्याख्यान द्वारा मनुष्य बहुत अधिक अर्जन कर सकता है। यह भाषा दिव्य एवं ईश्वरीय बताई गई है।

Summary -

According to Sardar Pooran Singh, the conduct is very important.Its language is mute but impact is immense. He has stressed upon pure and natural conduct . In fact Conduct can not be learnt. We can avail good conduct only under the nature 's shelter. Conduct has more impact than anything else. The language of speechlessness/ voicelessness is divine and godly , so we should try to learn it.

अन्तर्ज्ञान और नैतिक जीवन

सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

लेखक परिचय –

सर्वपल्ली राधाकृष्णन् स्वतन्त्र भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति थे। उच्च कोटि के शिक्षाविद् , दार्शनिक एंव विचारक राधाकृष्णन जी का जन्मदिवस शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। शिक्षा और राजनीति दोनों मे उत्कृष्ट योगदान हेतु उन्हें देश के सर्वोच्च अलंकरण ' भारत रत्न' से विभूषित किया गया। बुराइयों को दूर करने व व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास हेतु वे शिक्षा को बहुत उपयोगी मानते थें।

मूल पाठ –

हमारे नैतिक जीवन में भी उच्चतम स्थिति पर पहुँचने के लिए अन्तर्ज्ञानात्मक दृष्टि अनिवार्य है। साहसपूर्ण पथ का अनुसरण करने वाला वीर उस अनुसन्धान करने वाले आविष्कारक के समान है, जो किसी विज्ञान के बिखरे हुए तत्वों को क्रमबद्ध कर संश्लिष्ट करता है या वह उस कलाकर के सदृश है जो एक संगीत की रचना करता है या किसी भवन का डिजाइन तैयार करता है। केवल नियमों के यन्त्रवत् पालन और नमूनों की नकल से हम कहीं नहीं पहुँच सकते। जीवन की कला पुराने बोसीदा अभिनयों का रिहर्सल नहीं है। ब्लेक ने अपनी एक आकर्षक विरोधाभासपूर्ण उक्ति में कहा था, 'जो व्यक्ति कलाकार नहीं है, वह ईसाई भी नहीं है।'' जीवन एक ऐसा खेल है जो तभी समाप्त होता है जब व्यक्ति उससे अवकाश ग्रहण करता है। उसके लिए दक्षता और साहस की आवश्यकता होती है। साहसी खिलाड़ी तकनीक मे ंनिपुण होता है। जब वह स्थिति को समझ लेता है तो वह सुनिश्चित अन्तर्बुद्धि से आगे बढ़ता है। जीवन की शतरंत की फड़ पर अलग–अलग मोहरों की अलग–अलग ताकतें है और उनके जोड़े अनेक तरह से बन सकते हैं और उनका भविष्य कथन पहले से ही किया जा सकता है। अच्छे खिलाड़ी में सही कार्य की भावना होती है और वह यह अनुभव करता है कि यदि वह उस भावना के अनुसार कार्य नहीं करता है तो वह अपने प्रति ही झूठा होगा। किसी भी नाजुक स्थिति में आगे चाल चलना तक सृजनात्मक कार्य है। वह अपनी प्रकृति के अनुसार आत्मा के भीतर उद्भूत होता है। इसमें एक प्रकार की गुप्त और सजीव अनिवार्यता होती है।

नैतिक वीर अपने अन्तर की ताल ओर लय का अनुसरण करता है जो उसे आगे की ओर चलने के लिए अनुप्रेरित करती है और उसमें अपनी नियति के आदेश का

अनुगमन करने और अपनी आत्मा को पूर्णता प्रदान करने का संतोष रहता है। अपनी गहरी आन्तरिक प्रकृति का अनुसरण करने से वह हमें से उन लोगों को, जो परम्परागत पैमानों का इस्तेमाल करते हैं या तो मूर्ख प्रतीत होता है, या अनैतिक किन्तु स्वयं उसके लिए आध्यात्मिक उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य सामाजिक परम्परा के अधिक महत्त्वपूर्ण है। बाहर से थोपे गए नियम की अपेक्षा आन्तरिक संयम अधिक कीमती है। वह परम्परागत रिवाजी औचित्य के बजाय आन्तरिक सत्यता, पूर्ण गम्भीरता और ईमानदारी के लिए लालायित रहता है। वह अपने समाज को अधिक सुदृढ़ बुनियाद पर नये सिरे से ढालने के लिए संघर्ष करता है। यह हो सकता है कि उसका व्यवहार सतर्क परम्परावादियों की शिष्टता की भावना को चोट पहुँचाये और यह देखकर कर दुःख होता है कि गहरी दृष्टि और सृजन–शक्ति वाले लोगों को समाज नेताओं के हाथों से उत्पीड़न सहन करना पड़ा है, हालाँकि यह ठीक हैं कि उत्पीड़न हमेशा अकारण ही नहीं हुआ। ऐसे लोग अपने उदाहरण से इस दुःखद सत्य को सिद्ध करते हैं कि जब कोई व्यक्ति अपने साथियों से अधिक अच्छा हो जाता है तो वह उनकी घृणा का पात्र हो जाता है। हम अपने महान पथ–प्रदर्शकों और उपदेष्टाओं का सम्मान सूली पर लटकाकर करते हैं। सम्भव है कि दुनियादारी का हिसाब–किताब करके चलने वाले लोग, जो बाहरी प्रदर्शन और आडम्बर में विश्वास करते हैं, बहुत नीचे स्तर पर न उतरें, किन्तु वे ऊँचाई पर भी कभी नहीं उठ सकते। केवल अत्यन्त गंभीर व्यक्ति ही अपने–अपको मूर्ख बना सकते हैं ईसा का सन्देश पुराने यहूदी फारसी लोगों की मान्यताओं के मुकाबले रूढ़ि–विरोधी है। 'प्रेम करो और फिर जो चाहे, सो करो।' प्रेम हमें जीवन के अधिक गूढ़ रहस्यों की ओर ले जाता है और सूक्ष्म बौद्धिक ज्ञान तथा थोड़े से स्पष्टवादी नैतिक नियम हमें जीवन की जो अखंड दृष्टि प्रदान कर सकते हैं, उससे अधिक अखण्ड दृष्टि देता है। यद्यपि नैतिकता का तकाजा होता है कि हम उसके नियमों का पालन करें, किन्तु संसार की समस्त नैतिक प्रगति का श्रेय नैतिक रूढ़ियों को तोड़ने वालों को ही है।

समाज सब कार्यो को सुविज्ञात सामान्य पैमानों से नापता है। यह मानकर चलता है कि हर वस्तु पर वैज्ञानिक या अवैयक्तिक दृष्टि से विचार और आचरण किया जा सकता है। वह इन्सानों को मशीनें समझता है, हर व्यक्तिगत समस्या को सामान्य में परिणत कर देता है और प्रत्येक व्यक्तिगत कार्य के नैतिक मूल्य का निर्णय तत्सदृश विशिष्ट परिस्थितियों और नैतिक सूत्रों के अनुसार करता है। हम विचारों की एक यान्त्रिक प्रणाली

के दास हैं। नैतिकता के तर्कवादी बौद्धिक नियम लचीलेपन और उच्चता को शुद्धता और संगतता के आगे बलिदान कर देते हैं। जब हमारे बुद्धिवादी यह दावा करते हैं कि वे सिद्धान्तों पर चलते हैं, तब वे प्राण और ओज के गहरे स्रोतों से अपना सम्बन्ध–विच्छेद कर लेते हैं और उनके अन्तःकरण उनके मन के साथ संघर्ष करने लगते हैं । जीवन–प्रेम और आत्म–बलिदान ऐसी चीजें नहीं हैं कि उनकी इस तरह सहज में उपेक्षा कर दी जाए। संसार में कोई भी दो घटनाएँ या दो घटनाओं का परस्पर सम्मिलन एक–जैसा नहीं होता। हमें हर एक घटना को एक अद्वितीय स्थिति में, रूप में परिस्थितियों के साथ एक सर्वथा स्वतंत्र और समंजन के रूप में देखना चाहिए, न कि एक पूर्व कल्पित उद्देश्य के साथ यांत्रिक समंजन के रूप में। केवल प्रभावग्राही संवेदनशील अन्तःकरण और गहरे प्रेम से युक्त मानव ही, जिन्होंने अपने–आपको एक उच्चतर स्तर पर पाया है, जिनके मन यथार्थताओं की गहरी भावना से निर्देशित हैं और जिन्होंने सत्य और उचित की विवेक–बुद्धि विकसित कर ली हैं, दूसरों की भावनाओं और समस्याओं को समझ और महसूस कर सकते हैं, वहीं ऐसे लोग हैं जिनमें अत्याचार को दूर करने में सफल न होने पर भी उसे सहज करने की क्षमता होती है। उन्हें बुनियादी सत्यों का ज्ञान होता है, उन्होंने काल के बीजो को अपनी रहस्यभेदिनी दृष्टि से देख लिया होता है।

सर्वोच्च मुक्ति और आनन्द के क्षणों में ही हम अपनी आत्मा की अधिकतम गहराई में या उसके निकट होते हैं। दैनिक जीवन में हम उनके उपयोगी परम्पराओं और रिवाजों के अनुसार चलते हैं जिन्हें हमने सामान्य परिस्थितियों के लिए बनाया होता है और महान् संकट के क्षणों में भी हममें से बहुत से लोग अपनी सम्पूर्ण आत्मा के साथ अवसर को पकड़ने में असमर्थ रहते हैं, किन्तु संसार या कोई भी निकृष्टतम कार्य, कोई भी अप्रिय श्रम, कोई भी जघन्यतम आवेश ऐसा नहीं हे जो हमारे अन्तर में विद्यमान आत्मा को आविष्ट करके हममें यह शान्त संतोष पैदा न कर सके, उसके लिए आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि व्यक्ति आध्यात्मिक चेतना से सजीव हो। सुकरात ने कहा था, 'सत्कर्म ही ज्ञान है।' यह ठीक है कि वह बौद्धिक ज्ञान नहीं है जो दूसरों को सिखाया जा सके। यह ऐसा ज्ञान है जिसका निर्झर मनुष्य की सत्ता के अधिक गहरे स्तर से फूटता है। यह मनुष्य के मन को उदात्त बनाकर, उसकी चेतना को प्रबुद्ध कर प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य आत्मा में जितनी गहराई तक जाता है, उतना ही उसका ज्ञान अपरोक्ष होता है। जिस व्यक्ति में नैतिक चेतना है, उसके लिए कर्त्तव्य का पथ उतना ही स्पष्ट है जितना कि कोई भी दूसरा

ज्ञान। उसके सम्बन्ध में हमारा ज्ञान यथासम्भव पूर्ण सुनिश्चित होता है। नैतिक सत्य का ज्ञान भी हमें एक प्रकार से अन्तर्ज्ञान के रूप में प्राप्त होता है। यह ठीक है कि बाद में हम विचार–विमर्श से उस सत्य के लिए कारण और तर्को को खोजते हैं। जिसका जीवन–पथ अन्तर्दृष्टि से निर्देशित होता है वह अपनी गहरी चेतना को कवि या कलाकार की भाँति कविताओं और चित्रों में अभिव्यक्त नही करता, बल्कि एक उच्चतर किस्म के जीवन में अभिव्यक्त करता है। वह दावों ओर जवाबी दावों की दुनिया को पीछे छोड़ जाता है। वह ऐसी नैतिकता के प्रति उदासीन रहता है जो प्रतिबन्धों ओर सन्तुलनों का विषय हैं। कारण, उसकी सत्ता के लिए उच्चतम किस्म की नैतिकता की आवश्यकता होती है, जो नियम या कानून के रूप में नहीं, बल्कि प्रेम–स्वरूप हो। बुद्ध और ईसा जैसे महापुरुषों के जीवन न केवल सत्यमय और संयमी हैं, बल्कि उनमें कल्पनातीत सौंदर्य भी है।

धार्मिक चेतना और अन्य मूल्य

धार्मिक चेतना न तो बौद्धिक क्रिया है, न नैतिक, न सौन्दर्य–बोधात्मक और न इन सब क्रियाओं का योग। यदि यह आध्यात्मिक जीवन का एक ऐसा स्वतंत्र रूप है, जो इन सब तत्त्वों का समावेश करते हुए भी इन सबसे ऊपर है, तो धर्म का उद्देश्य न सिर्फ सत्य है, न अच्छाई न सौन्दर्य और न इन सबका मिश्रण, बल्कि उसका उद्देश्य ईश्वर है जिसमें ये सब मूल्य तो निहित है हीं, साथ ही वह इनसे ऊपर भी है। मानव–मन मूल्यों की खोज करता है। वह ऐक्य और सामंजस्य, सहस्वरता और सौन्दर्य, योग्यता और अच्छाई को पाने के लिए उद्योग करता है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमें वैज्ञानिक प्रतिभा, कवि की अन्तर्दृष्टि, नैतिक अन्तःकरण और धार्मिक विश्वास, इन सभी के लिए अंग्रेजी में एक ही शब्द 'इण्ट्यूशन' (अन्तर्ज्ञान) का प्रयोग करना पड़ता है। यद्यपि ये सभी विभिन्न गतियाँ मन की अखंड क्रियाएँ है तो भी उनमें से कुछ का सम्बन्ध ज्ञान से होता है और कुछ का आनन्दोपयोग या सृजन से। हिन्दू दर्शन में 'प्रतिभा' शब्द सृजनात्मक अन्तर्ज्ञान को और 'आर्षज्ञान' ऋषियों के धार्मिक अन्तर्ज्ञान को प्रकट करने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। संदर्भ – 'इंडियन फिलासफी' भाग–2, द्वितीय संस्करण, 1961, पृष्ठ 68)।

सत्य, अच्छाई और सौन्दर्य इन सभी मूल्यों के अपने विशिष्ट स्वरूप और लक्षण होते है। हम उनमें कोई पूर्वापर या ऊँच–नीच का क्रम नहीं बाँध सकते और न एक को दूसरे की श्रेणी में रख सकते हैं। हमारे पास इस बात के स्पष्ट प्रमाण और साक्ष्य है कि ये मूल्य निरपेक्ष और पूर्ण हैं और इसका अर्थ है ईश्वर में विश्वास। ये ईश्वर के विचार है

और हम उसी के विचार के अनुसार सोचते है। इन मूल्यों को हम इन्द्रियो और तर्क बुद्धि से नहीं जानते, बल्कि धर्म–शास्त्रकारों के शब्दों में हम उन्हें अन्तर्ज्ञान के फलस्वरूप सर्वोच्च यथार्थ सत्ता नहीं रहते, बल्कि ईश्वर के अस्तित्व और तत्व अंग बन जाते है। इस प्रकार वे मूल्य एक ईश्वरीय चेतना में अवस्थित रहने के कारण गतिहीन आदर्श नहीं रहते, बल्कि गतिशील, शक्तियाँ बन जाते हैं।

हमारे जीवन के संज्ञानात्मक, सौन्दर्यबोधात्मक और नैतिक पक्ष चाहे कितने ही सप्राण और महत्वपूर्ण हों, किन्तु है वे अलग–अलग पक्ष। परन्तु धर्म में उन सबका समावेश और अन्तर्भाव हो जाता है। विज्ञान उस नियम के सम्बोध का प्रयत्न करता है जो सारे विश्व को थामे हुए है, कला विश्व की रचना से गुँथे हुए सौन्दर्य को अनावृत्त करने का प्रयत्न करती है और नैतिकता उस अच्छाई (शिव) को साकार करने का प्रयत्न करती है, जिसकी प्राप्ति के लिए यह ब्रह्माण्ड उद्योग कर रहा है। अपनी पूर्ण अवस्था में ये सभी विभिन्न आकांक्षाएँ एक–दूसरे में विलीन हो जाती है, तो भी प्रक्रिया की दशा में इनमें से हरेक अपूर्ण प्रतीत होती है। हालाँकि यह सच है कि सच्ची कला, सच्चा दर्शन और सच्ची नैतिकता को अकेले प्राप्त नहीं किया जा सकता, सभी कुछ–न–कुछ मात्रा में परस्पर मिले रहते है। मनुष्य की प्रकृति अलग–अलग हिस्सों में बनी हुई नहीं है जो एक–दूसरे से बिल्कुल स्वतंत्र हों। सत्य के लिए हमारी सहजात वृत्ति, हमारी नैतिक बुद्धि और कलात्मक स्पृहा, सब परस्पर एक अंगी के रूप में बँधे हुए है, किन्तु जब तक वे अंगी के रूप में आबद्ध नहीं होते, जब तक वे एक पूर्ण अवयवी नहीं होते, तब तक विचार निरर्थक होता है, भावना क्षुद्र रहती है और क्रिया अपरिष्कृत होती है। कला जिस समस्वरता को अभिव्यक्त करती है वह अस्थायी और क्षणिक हो सकती है, एक स्वप्न हो सकती है, सम्भव है, वह आकांक्षा न हो और आत्मार्पण तो हो ही नहीं। हो सकता है कि कलाकार बौद्धिक दृष्टि से दुर्बल और नैतिक दृष्टि से क्षुद्र हो, किन्तु महानतम कलाकार के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। इतिहास के महापुरूष अपने सौन्दर्य–बोध के लिए विख्यात नहीं है और न ही महान् कलाकार नैतिकता के आदर्श नमूने रहे है।

ठीक–ठाक कहा जाए तो हम यह कह सकते है कि जो कला नैतिकता से पूर्णतः रहित है, जिसकी जड़े हमारी गम्भीरतम नैतिक वृत्ति में नहीं हैं, जो संसार में विद्यमान दिव्यता की और प्रवृत्त नहीं होती, वह सच्ची कला नहीं है। यह हो सकता है कि दर्शन की अन्तर्दृष्टि स्थायी और सुनिश्चित न हो, यह भी हो सकता है कि दर्शन के सत्य कला

के विचारों से किसी भी तरह जीवन को अधिक प्रोत्साहन और प्रेरणा न दे सकते हों। इसलिए हमें तीनों की इकट्ठी आवश्यकता है, संज्ञानात्मक प्रकाश, भावनात्मक स्थिरता और क्रियात्मक शक्ति, आन्तरिक ज्योति, अवर्णनीय सौन्दर्य और उत्साह की तीव्र आग, एक ऐसा जीवन हमें चाहिए जिसमें ये तीनों आपस में सम्बद्ध हों, जिसमें जो कुछ हम देखते हैं, जो हमारी श्रद्धा का विषय है और जो जीवन हम व्यतीत करते हैं, वे सब एक हो जाएँ। यही धर्म का सार है, जिसे हम जीवन का संश्लिष्ट रूप कह सकते हैं। धार्मिक मनुष्य को यह ज्ञान होता है कि संसार में सभी कुछ अर्थपूर्ण है, उसमें यह अनुभूति रहती है कि विग्रहों और विरोधों की तह में भी एक समस्वरता और एकता अन्तर्निहित है। साथ ही उसमें उस अर्थवत्ता और समस्वरता को साकार करने की शक्ति भी रहती है। वह सत्य, शिव और सुन्दर तीनों की पृष्ठभूमि में एक ईश्वर को ही, जो अन्दर भी है और बाहर भी देखता है। जिस सत्य को हम जानते हैं, जिस सौन्दर्य को हम अनुभव करते हैं और जिस शिव की हम साधना करते हैं, वह ईश्वर ही है जिसे हम आस्तिक न होकर विश्वासपूर्वक जानते हैं, कला या सौन्दर्य या अच्छाई अकेले हममें धार्मिक अन्तर्दृष्टि पैदा न कर सकें, परन्तु परस्पर संश्लिष्ट होकर वे हमें अपने से एक ऊँची चीज की ओर ले जाते हैं। धार्मिक व्यक्ति एक नयी दुनिया में रहता है जो उसके जीवन को प्रकाश से, उसके हृदय को आनंद से और उसकी आत्मा को प्रेम से भर देती है। ईश्वर को वह प्रकाश, प्रेम और जीवन के रूप में देखता है।

धार्मिक अन्तर्ज्ञान सर्व समावेशी ज्ञान होता है, जो समस्त जीवन को व्याप्त कर लेता है। मनुष्य मे विद्यमान आत्मा अनेक प्रकार से अपने आपको पूर्णत्व की ओर ले जाती है, किन्तु सबसे अधिक पूर्णत्व धार्मिक जीवन के रूप में होता है। इसी में मनुष्य की चेतना पूर्ण रूप में और एक साथ उद्‌बुद्ध होती है। यद्यपि हरेक प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने–अपने ढंग से आत्मा के उत्थान और विकास के क्षेत्र में अग्रणी होता है, तथापि धार्मिक प्रतिभा में हम आंतरिक जीवन की विभिन्न शक्तियों को एक साथ उदात्त और विकसित रूप में पाते हैं। धार्मिक व्यक्ति समस्त या अधिकतर उच्च और गहन शक्तियों, काल्पनिक दृष्टि, बौद्धिक शक्ति, भावनात्मक उत्साह और क्रियात्मक ऊर्जा का परस्पर सम्मिश्रण करता है। एक अखंड पूर्ण जीवन, जो किसी भी प्रकार के भ्रम, भूल या विकृति से मुक्त हो, सर्वथा अनासक्त, निष्काम और अवैयक्तिक जीवन होगा। कुछ लोग अत्यधिक स्पष्ट और जीवन्त

रूप में रचनात्मक होते हैं, जिस समाज में वे रहते हैं, उसे वे अपनी कल्पना और दृष्टि के अनुसार नये सिरे से ढाल सकते हैं।

ये व्यक्ति ऐसी आत्माएँ होती हैं जिनका कायाकल्प हो गया है, नया रूपान्तर हो गया है, जिनकी हरेक शक्ति अपने उच्चतम विकास की दशा में पहुँच गई है। ईश्वर के नशे से मदिर उनकी मुखाकृतियों की रेखाओं में ब्रह्मतेज की दीप्ति होती है। वे बिल्कुल अलग किस्म के ही आदमी होते हैं, इस संसार की माया और मोहिनी से बिल्कुल विमुक्त । जन–साधारण के साथ अनका संबंध नहीं होता है, जो कला के पारखियों और प्रेमियों के भारी समुदाय के साथ महान् सृष्टाओं का होता है। जब कोई प्रतिभाशाली कलाकार किसी सुन्दर कलाकृति की रचना करता है तो वह कोई व्यक्तिगत अंतरंग रहस्य नहीं रहती, बल्कि समस्त मानव–जाति द्वारा समादृत सर्वसामान्य थाती बन जाती है। जब ईश्वर के साथ साक्षात्कार करने वाले धर्मप्रवर्तक प्रतीकों के द्वारा उन सत्यों को उद्घाटित करते हैं जिनको उन्होंने आविष्कृत किया होता है, तो हम स्वयं आहिस्ता–आहिस्ता और धैर्य से उन्हें पुनः अपने लिए आविष्कृत करते हैं। वे धन्य आत्माएँ, जो समस्त मानव–जाति का पथ–निर्देश करने के लिए पहला कदम उठाती हैं या दैनिक जीवन में सौंदर्य लाती हैं, वे अपने ये मूल्य दूसरों को देने का भी प्रयत्न करती हैं और धर्म की भाषा में ईश्वर की महानता और कृपा के अनुरूप जीवन–यापन का प्रयत्न करती हैं।

जिस प्रकार वैज्ञानिक प्रतिभा और लड़खड़ाकर भारी कदमों से चलने वाला बुद्धि में काव्यात्मक ऊर्जा और तुकबंदी की योग्यता में नैतिक साहस और परम्परागत अच्छी प्रथा या रूढ़ि में अंतर होता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक अर्न्तदृष्टि और धार्मिक बुद्धिवादिता की मान्यता यह है कि ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाणों से ही धर्म में दिलचस्पी पैदा होती हैं, जबकि आध्यात्मिक अर्न्तदृष्टि हमें अपनी चेतना को उस स्तर तक ऊँचा उठाने की प्रेरणा देती है जहाँ पहुँचकर वह ईश्वर को देख सकती है। अन्तर्ज्ञानी ऋषी और दृष्टा नपी–तुली निश्चित बातें नहीं कहते और न बिल्कुल स्पष्ट परिभाषाएँ और लक्षण देते हैं। वे प्रतीको और अलंकारों, कथात्मक उपदेशों और चमत्कारों की भाषा में बातें करते हैं। किन्तु यह मानवीय मन का नियम है कि वचनों की भावना खत्म हो जाती है और अर्थ लुप्त हो जाता है। अन्तर्ज्ञान सैद्धांन्तिक मान्यता नहीं है। दोनों में मात्रा का ही नहीं, किस्म का भी अंतर है। यह अंतर ईश्वर को अनुभव करने और उसे जानने का अंतर है।

हमें ईश्वर का अन्तर्ज्ञान (साक्षात्कार) तब तक नहीं हो सकता जब तक कि हम अपनी सम्पूर्ण सत्ता से उसके लिए प्रयत्न न करें। अनुभव को अर्जित करना पड़ता है, प्रयत्न, आकांक्षा और तपस्या, विश्वास और संघर्ष की कीमत चुकाकर। लेकिन बुद्धिजीवी लोग उसे बहुत सस्ते में प्राप्त करना चाहते हैं। हर धर्म में उसके अनुयायियों की बहुसंख्या यह चाहती है कि सच्चे अर्थों में धार्मिक बने बिना धर्म के आश्वासन और फल का उपभोग कर सकें। वे लोग धार्मिक होते हैं, किन्तु अपने सर्वांग से या अपनी आत्मा से नहीं, बल्कि अपने दिमाग से और कभी–कभी केवल अपने मेरूदण्ड से ही। धर्म–प्रचारक और पुजारी लोग मानव–प्रकृति की कमजोरी का लाभ उठाकर हमें यह उपदेश देते हैं कि यदि हम अपनी रक्षा चाहते हैं तो हमें ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखना चाहिए। भावनाहीन यंत्र के समान ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखना चाहिए। भावनाहीन यंत्र के समान ईश्वर को सिद्ध करने वाले धार्मिक दर्शन–शास्त्र और जड़ कर्मकाण्ड में वे बहुत व्युत्पन्न होते हैं और अपने क्षेत्र में उनकी क्षमता काफी होती है, परन्तु नाजुक घड़ी आ जाने पर वे पर्याप्त सक्षम सिद्ध नहीं होते, किन्तु धर्म–प्रवर्तक ब्रह्मज्ञानियों में सृजनात्मक भावना होती है। उनका धर्म–प्रचारकों और पुजारियों के साथ इस बात को लेकर संघर्ष चलता रहता है कि वे पुरानी बातों की अतिरंजनापूर्ण पुनरावृत्ति करते रहते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य की आत्मा और भावना तभी जीवित होकर व्याप्त होती है, जबकि जिस साँचे में वह ढली है, उसे तोड़ दिया जाए। यही कारण है कि वे रूढ़िवादी होने की बजाय रूढ़िभंजक अधिक होते हैं। उन्हें अधार्मिक और समाजद्रोही समझ लिया जाता हैं प्रायः उन्हें बहिष्कार और मृत्यु का शिकार बनना पड़ता है, किन्तु धर्म के क्षेत्र में होने वाली समस्त प्रगति इन उत्पीड़ित आत्माओं के कारण ही होती है। वे संसार में ईश्वर के जीवन को अधिक गहरा और समृद्ध बनाते हैं जहाँ धर्म–प्रचारक और पुजारी ईमानदार और जिज्ञासु मन को संतुष्ट नहीं कर सकते हैं, वहाँ ब्रह्मज्ञानी लोग उसे अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं।

कट्टर सिद्धान्तवाद एक बौद्धिक धर्म का खतरा है जो एक ऐसे संसार के लिए, जिसमें हर वस्तु का एक नियत प्रतिमान निश्चित करने की प्रवृत्ति और मात्रा की अधिकता को वैयक्तिकता और किस्म की श्रेष्ठता से अधिक महत्त्व दिया जाता है, बहुत आकर्षक है। जब कट्टर सिद्धान्तवादिता का ह्रास होने लगता है तो हम घबराने लगते हैं कि कहीं धर्म ही लुप्त न हो जाए। यदि हम धर्म–संबंधी आकारों और औपचारिकताओं को अंतिम और

अपरिवर्तनीय मान लें तो उनकी जड़ें हिलती देखकर हमारा संशयालु और आशंकित होना स्वाभाविक है, किन्तु यह सौभाग्य की बात है कि धर्मों के महान् ऋषि और प्रवर्तक लोग किन्हीं निश्चित और अपरिवर्तनीय सिद्धान्तों या कर्म–काण्डों का विधान नहीं करते। वे आत्मा को अपनी एकाकी तीर्थ–यात्रा के पथ पर आमंत्रित करते हैं और उसे पूर्ण स्वाधीनता प्रदान कर देते हैं, क्योंकि उनका यह विश्वास है कि ईश्वर को अपनी प्रतिभा के अनुसार स्वतंत्र और निर्बाध रूप से अपनी आत्मा में पाना ही आध्यात्मिक जीवन के लिए अनिवार्य शर्त है। मानव–प्रकृति एक जीवन है जो बढ़ना और विकसित होना चाहता है। 'मिट्टी नहीं है जो यह इन्तजार करे कि कोई आकर उसे साँचे में ढाले'।

धार्मिक प्रतिभाशाली महापुरूषों के उदाहरण मोटे तौर पर मनुष्य के पथ–प्रदर्शन के लिए उपस्थित रहते हैं और जब उनका संबंध किन्हीं संगठनों से होता है तो भी वे महान् जीवन को ऐसे कट्टर और अपरिवर्तनीय नियम या सूत्र में परिणित करने की, एक गुढ़ रहस्य को एक ऐसी दार्शनिक प्रणाली में परिवर्तित करने की जल्दी नहीं होती, जिसे हर व्यक्ति रट सके। यदि हमारे मंदिर, मस्जिद ओर गिरजे यह समझें कि उनका मुख्य कार्य हमें पवित्र ज्ञान देने के बजाय हमारी आत्मा को उद्‌बुद्ध और सजग करना है तो वे ईश्वर के ऐसे मंदिर बन जाएँऐ जिनमें व्यापकता और औदार्य का साहस होगा और जो अपने आध्यात्मिक वातावरण में विभिन्न धार्मिक विचारों ओर रूचियों के लोगों का स्वागत कर सकेंगे। वे एक ऐसे अदृश्य धार्मिक सम्प्रदाय की भूमिका तैयार करेंगे जो समस्त सद्‌भावनाशील मानवों का आलिंगन करेगा। जीवन और वातावरण मान्यता और बँधे हुए धार्मिक विधान की विरोधी वस्तुएँ हैं। जीवन या वातावरण की सम्भवानाएँ अगणित और अपरिमेय हैं और उसमे विभिन्न मतो के लोगो के विचार–भेद के लिए पूरी गुंजाइश रहती है। यदि हमारा यह विश्वास हो कि मनुष्य को उसके मन की कोमलता के लिए किसी सहारे की आवश्यकता है तो हम उसे प्रतीक और उदाहरण प्रदान कर सकते हैं, किन्तु उसके बाद शेष सब–कुछ हमें मनुष्य के अंतर में विद्यमान ईश्वर पर ही छोड़ देना चाहिए। सुकरात की भाँति सच्चा उपदेशक केवल दाई का काम करता है। हिन्दु धर्म के समान किसी धर्म में निश्चित आकार का जो अभाव है वह मुझे एक उच्चतर किस्म की निश्चितता का द्योतक प्रतीत होता है। धर्म का अर्थ है– ब्रह्माण्ड में ईश्वर के साथ चेतन ऐक्य और उसका मुख्य साधन है – प्रेम।

उद्‌देश्य –

1. छात्र पाठ के माध्यम से सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. छात्र पाठ के माध्यम से अपनी आत्मा की आवाज को सुनने का प्रयत्न कर सकेंगे।
3. छात्र आत्मा का अपरोक्ष ज्ञान ले सकेंगे।
4. छात्र पाठ के माध्यम से अन्तर्ज्ञान के विषय में जान सकेंगे।
5. छात्र पाठ के माध्यम से अन्तर्ज्ञान का नैतिक मूल्यों के साथ समावेश कर सकेंगे।

शब्दार्थ

शब्द	**अर्थ**	**Meaning**
अनुसंधान	पुन : खोज	Research
आविष्कारक	खोजकर्ता	Inventor
संश्लिष्ट	मिलाजुला	Synthesis
सृजनात्मक	रचनात्मक	Creative
सुदृढ़	मजबूत	Strengthen
बौद्धिक	बुद्धि से सम्बन्धित	Intellectual
अवैयक्तिक	जो व्यक्तिगत न हो	Impersonal
तर्कवादी	तर्क करने वाला	Logical
अन्तर्ज्ञान	ईश्वर से साक्षात्कार	Intution
संज्ञानात्मक	समझ पर आधारित	Cognitive
कायाकल्प	पूर्ण परिवर्तन	Transformation

केन्द्रीय भाव :– पाठ के केन्द्रीय भाव में ज्ञात होता है कि मनुष्य अपनी आत्मा का ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकता है। इसी अन्तर्ज्ञान के द्वारा नैतिक जीवन में उच्च स्थिति तक किस प्रकार पहुँचा जा सकता है।

प्रश्न – वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) लेखक का जन्मदिवस किस रूप में मनाया जाता है।

(अ) शहीद दिवस (ब) शिक्षक दिवस (स) संविधान दिवस (द) वीरता दिवस

(2) लेखक भारत के प्रथम ..... थे।

(अ) प्रधानमंत्री (ब) राष्ट्रपति (स) उपराष्ट्रपति (द) रक्षामंत्री

(3) लेखक को भारत के सर्वोच्च अलंकरण से विभूषित किया गया।

(अ) वीरचक्र (ब) परमवीर चक्र (स) राष्ट्रपति (द) रक्षामंत्री

(4) लेखक का जन्मदिवस ..... को मनाते है।

(अ) 05 सितम्बर (ब) 2 अक्टूबर (स) 15 अक्टूबर (द) 14 नवम्बर

(5) अन्तर्ज्ञान और नैतिक जीवन पाठ के लेखक कौन है।

(अ) शरद जोशी (ब) सर्वपल्ली राधाकृष्णन (स) रामधारी सिंह दिनकर

(द) श्री लालशुक्ल

(6) सुकरात ने कहा था –

(अ) धर्म ही कर्म है। (ब) प्रेम ही कर्म है (स)सत्यकर्म ही ज्ञान है (द)कर्म ही ज्ञान है

(7) नैतिकता ..... को साकार करने का प्रयत्न करती है।

(अ) ब्रहम (ब) शिव (स) विष्णु (द) कर्म

(8) धार्मिक अन्तर्ज्ञान ..... होता है।

(अ) सौन्दर्यमूलक (ब) नैतिक मूलक (स) सर्वसमावेशी (द) आत्मिक

(9) ईश्वर का पूर्ण साक्षात्कार ..... से ही होता है।

(अ) संपूर्ण सत्ता (ब) बौद्धिक सत्ता (स) अनुभाविक सत्ता (द) आध्यात्मिक सत्ता

(10) संसार की समस्त नैतिक प्रगति का श्रेय किसे है –

(अ) नैतिक कड़ियों का प्रचार करने वालो को (ब) तोड़ने वाले को

(स) पालन करने वाले (द) जुड़े रहने वालों को

उत्तर – (1) ब (2) स (3) द (4) अ (5) ब (6) द (7) ब (8) स (9) अ (10) ब

रिक्त स्थान भरों –

(अ) हिन्दू दर्शन में ..... शब्द सृजनात्मक अन्तर्ज्ञान को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

(ब) धार्मिक चेतना बौद्धिक, नैतिक, सौन्दर्यबोधात्मक को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है.....

(स) ..... महान दार्शनिक, भारतीय संस्कृति के संवाहक और आस्थावान तथा विज्ञानी हिन्दू विचारक थे।

उत्तर – (अ) प्रतिभा (ब) योग (स) सर्वपल्ली राधाकृष्णन

लघुउत्तरीय प्रश्न –

प्र.1 नैतिक जीवन की उच्च स्थिति तक पहुचने के लिए क्या करना चाहिए।

उ0 उस उच्चतम स्थिति तक पहुँचने के लिए अर्न्तज्ञानात्मक दृष्टि अनिवार्य है।

प्र.2 कठिन परिस्थिति में आगे बढ़ने के लिए किस कार्य को प्राथमिकता दी गई है।

उ0 नाजुक स्थिति अथवा कठिन परिस्थिति में आगे बढ़ने के लिए सृजनात्मक कार्य करने होंगे।

प्र.3 नैतिक प्रगति का मार्ग कौन सा है ?

उ0 नैतिक प्रगति का मार्ग जो नैतिक रूढ़ियों को तोड़ने वाले हो, वही नैतिक प्रगति का मार्ग है।

प्र.4 धार्मिक चेतना क्या है?

उ0 धार्मिक चेतना न तो बौद्धिक क्रिया है, न नैतिक, न सौंदर्य बोधात्मक न इन सब क्रियाओं का योग हैं।

प्र.5 धार्मिक अन्तर्ज्ञान क्या है ?

उ0 सर्वसमावेशी ज्ञान धार्मिक अन्तर्ज्ञान है।

प्र.6 अन्तर्ज्ञान का क्या अर्थ है ?

उ0 ईश्वर से साक्षात्कार।

प्र.7 यह साक्षात्कार कब होता है ?

उ0 जब हम अपनी संपूर्ण सत्ता से उसके लिए प्रयत्न करें।

सारांश – व्यक्ति को अपनी आत्मा की आवाज के अनुसार ही यथासंभव आचरण करने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य आत्मा में जितनी गहराई तक जाता है, उतना ही उसका ज्ञान अपरोक्ष (Indirect) होता है। नैतिक सत्य का ज्ञान भी हमे एक प्रकार से अन्तर्ज्ञान के रूप में प्राप्त होता है। अन्तर्ज्ञान (Intution) की महता अपरम्पार है। जो कला नैतिकता से पूर्णतः

रहित है, वह वास्तव में सच्ची कला नहीं है। धार्मिक अन्तर्ज्ञान, सर्व समावेशी (Universally Inclusive) होता है।

हमें ईश्वर का अन्तर्ज्ञान (साक्षात्कार), तब तक नहीं हो सकता जब तक कि हम अपनी सम्पूर्ण सत्ता से उसके लिए प्रयत्न न करे। अनुभव को अर्जित करना पड़ता है, प्रयत्न आकांक्षा और तपस्या, विश्वास और संघर्ष की कीमत चुकाकर। परन्तु बुद्धिजीवी लोग उसे बहुत सस्ते में प्राप्त करना चाहते है। हर धर्म के अनुयायी यह चाहते हैं कि सच्चे अर्थो में धार्मिक बने बिना, धर्म के आश्वासन एवं फल का उपयोग कर सकें। धर्म प्रचारक एवं पुजारी लोग मानव–प्रकृति की कमजोरी का लाभ उठाकर हमे यह उपदेश देते हैं कि यदि हम अपनी रक्षा चाहते हैं तो हमे ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखना चाहिए। धर्म का अर्थ है ब्रहमाण्ड में ईश्वर के साथ मिलन और उसका मुख्य साधन है प्रेम।

Summary -

According to Sarvpalli Radhakrishnan, one should try to behave as far as possible according to his soul voice. Importance of intution is very important. Any art which is completely devoid of morality is infact not a real art. Religious intution is universally inclusive. We can not get God's intution without our whole hearted efforts. We have to earn experience at the cost of effort, aspiration, hard work, Faith and struggle. The meaning of Religion: is to meet god in universe and its main medium is love.